मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 63 । अंक : 2 । अगस्त, 2022 । पृष्ठ :52 । ऑनलाइन प्रकाशन

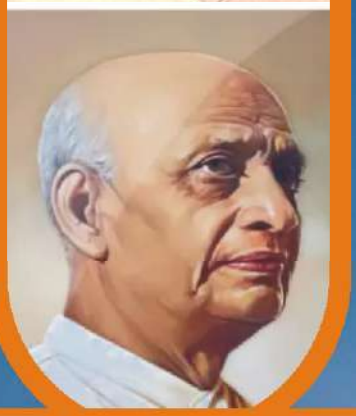

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला

मंत्री

शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा), संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, (पंचायती राज के अधीनस्थ), कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग राजस्थान सरकार

अपनों से अपनी बात

राष्ट्र का भविष्य आगे आने वाली पीढ़ियों पर निर्भर करता है

15 अगस्त को हम सब अखण्ड भारत का 76वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहे हैं। इस अवसर पर आप सभी को बहुत-बहुत मुबारकबाद। किसी भी राष्ट्र का गौरव तभी जागृत रहता है जब उसके स्वाभिमान एवं बलिदान की परम्पराएं अगली पीढ़ी को हस्तांतरित की जाती हैं। राष्ट्र का भविष्य आगे आने वाली पीढ़ियों पर निर्भर करता है। इसलिए आवश्यक है कि बच्चों को आजादी प्राप्त करने के संघर्ष, अनुभवों एवं विरासत की जानकारी दी जाए। यह पर्व हमारे लिए आने वाली पीढ़ियों को इतिहास बताने का अवसर है। यह आजादी की ऊर्जा का, स्वतंत्रता सेनानियों की प्रेरणा का एवं आत्मविश्वास का अमृत है। हमें इसे जोश एवं देश भक्ति के साथ मनाना है। यही स्वंतत्रता सेनानियों के प्रति कृतज्ञ राष्ट्र की सच्ची श्रद्धांजली होगी।

समस्त संस्थाप्रधानों को मेरा स्पष्ट संदेश है की स्वतंत्रता दिवस की तैयारी हर्षोल्लास से करवाई जाए। विद्यालय में राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। इससे विद्यार्थियों में जोश, जुनून एवं राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत होगी और वे स्वंतत्रता सेनानियों द्वारा किए गए बलिदान के महत्त्व को समझ सकेगें।

माननीय मुख्यमंत्री जी ने 11 जुलाई 2022 को कक्षा 1 से 8 के विद्यार्थियों के लिए 'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम' कार्यक्रम का आगाज़ किया है। इसका मुख्य उद्देश्य लर्निंग में आए गैप को दक्षता आधारित शिक्षण से ब्रिज करके विद्यार्थियों को कक्षा स्तर तक लाना है यह कार्यक्रम रेमिडिएशन पर केन्द्रित है। प्रत्येक मण्डल, जिला एवं ब्लॉक स्तरीय शिक्षा कार्यालय, संस्थाप्रधान एवं शिक्षक प्रदत्त निर्देशों के अनुरूप विद्यालय स्तर पर इसके क्रियान्वयन की कार्य योजना तैयार कर शिक्षण कार्य करवाएं।

आज हमारे देश में विज्ञान एवं टेकनोलॉजी की गतिविधियों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। इससे कुछ प्रमुख क्षेत्रों में भारत की वैश्विक रैंकिंग में सुधार हुआ है। इसके साथ-साथ मैंने यह भी महसूस किया है व्यक्तियों में आध्यात्मिकता एवं अंतर्मन का विकास भी आवश्यक है। इसके लिए हमें अपने सोच एवं गतिविधियों की तटस्थ भाव से निगरानी कर जीवन को घड़ी के कांटे की तरह निष्काम भाव से साधना होगा। सफल हो गए तो अंहकार नहीं करें और यदि असफल रहे तो निराश भी नहीं हो। इसी ख्याल से जीवन आनन्दमय होगा।

भारत अभी स्वस्थ देशों की सूची में शुमार नहीं है। इससे प्रतीत होता है कि हमारे देश का आम व्यक्ति स्वास्थ्य के प्रति कम जागरूक है। इसके लिए देश में खेल संस्कृति को बढ़ाना आवश्यक है। खेलकूद मात्र शारीरिक गतिविधि नहीं है बल्कि इससे पारस्परिक संबध मजबूत होते है और व्यक्ति में नेतृत्व के गुणों का विकास होता है। यह वहीं तत्व है जो विद्यार्थियों को बेहतर इंसान बनाते हैं। संस्थाप्रधान विद्यालय में आवश्यकता अनुरूप इनडोर-आउटडोर गेम्स की पर्याप्त सुविधाएं भामाशाहों के सहयोग से उपलब्ध करवाएं तथा प्रत्येक विद्यार्थी की किसी एक खेल मे प्रत्यक्ष भागीदारी सुनिश्चित करें। एक बार पुनः आप सभी को स्वतंत्रता दिवस, रक्षाबंधन एवं जनमाष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं।

।। जय भारत- जय भारती ।।

(बुलाकी दास कल्ला)

"समस्त संस्थाप्रधानों को मेरा स्पष्ट संदेश है की स्वतंत्रता दिवस की तैयारी हर्षोल्लास से करवाई जाए। विद्यालय में राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। इससे विद्यार्थियों में जोश, जुनून एवं राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत होगी और वे स्वंतत्रता सेनानियों द्वारा किए गए बलिदान के महत्त्व को समझ सकेगें।"

मेरा संदेश...

कुछ याद उन्हें भी कर लो जो लौट के फिर न आए...

स्वतंत्र भारत की 75 वीं वर्षगांठ हम 15 अगस्त को मनाने जा रहे हैं। इस दिन 1947 को हमारा भारत देश ब्रिटिश शासन की 200 वर्षो की गुलामी से आजाद हुआ था। महात्मा गाँधी, भगत सिंह, लोकमान्य बाल गगाधर तिलक, चन्द्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस, जवाहरलाल नेहरू जैसे असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना सर्वस्व देश का अर्पित कर दिया था। हमारा भारत हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता में होना चाहिए। आज हम जो भी हैं राष्ट्र द्वारा प्रदत्त सुविधाओं एवं संसाधनों के कारण ही हैं। भारतीय नागरिक होने के नाते अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से निर्वहन करना ही देशभक्ति है। राष्ट्र का मान—सम्मान एवं गौरव हमारी चाहत होनी चाहिए।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा मदरसे में हुई थी। एक समय था जब भारत में हिन्दु 'मौलवी' भी हुआ करते थे। यह भारत ही है जहाँ हजरत मोहम्मद साहब की शान में हिन्दु कव्वाल नात गाया करते थे। 1857 में प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन के नायक मौलवी अजीमुल्ला खान ने 'मादरे वतन भारत की जय' एवं नेताजी सुभाष चंद्र बोस के मुस्लिम साथी ने 'जय हिंद' का नारा दिया था। इस पवित्र राष्ट्रीय पर्व पर हम सभी को यह संकल्प लेना होगा कि हम सब पहले भारतीय हैं। देश की एकता, अखण्डता, सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखना प्रत्येक भारतीय का धर्म है।

संविधान के 42 वें संशोधन के मौलिक कर्त्तव्यों को संविधान में शामिल किया गया है। प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा और उसका संवर्धन करना प्रत्येक नागरिक का मूल कर्त्तव्य है। पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए जरुरी है। 1947 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू, राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और मौलाना अब्दुल कलाम आजाद के प्रयासों से वन महोत्सव की शुरुआत हुई थी। प्रदेश को हरा—भरा बनाने के लिए जन—जन के सहयोग से पौधारोपण का विशेष अभियान प्रत्येक विद्यालय में आरम्भ करना चाहिए। पौधे लगाने एवं फलने—फूलने के लिए यह समय श्रेष्ठ है। हरियाली जितनी अधिक होगी प्रकृति का शृंगार उतना ही खूबसूरत होगा और प्राकृतिक आपदाएं भी कम होगी इसलिए मेरा आग्रह है कि स्थानीय परिस्थितियों से अनुकूलित होते हैं। यह पेड़—पौधे, पशु—पक्षी एवं कीटों का संरक्षण भी करते हैं। अतः पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रत्येक शिक्षक और विद्यार्थी पौधारोपण करे एवं उस पौधे की आजीवन सार संभाल का दायित्व भी लेंवे।

शुभकामनाओं के साथ...

Zahida

(जाहिदा खान)

"हमारा भारत हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता में होना चाहिए। आज हम जो भी हैं राष्ट्र द्वारा प्रदत्त सुविधाओं एवं संसाधनों के कारण ही हैं। भारतीय नागरिक होने के नाते अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से निर्वहन करना ही देशभक्ति है।"

सत्यमेव जयते

गौरव अग्रवाल
आई.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प: मेरा पृष्ठ

समझ कर सीखें

15 अगस्त को भारत की आजादी की 75वीं वर्षगांठ हैं। आजादी दिलाने वाले देश के वीर सपूतों को श्रद्धापूर्वक नमन ! भारत की सीमाओं और आंतरिक सुरक्षा को अक्षुण्ण बनाए रखने वाले सभी सुरक्षा कर्मियों का सादर सम्मान, जिनके कारण हम सभी देशवासी सुरक्षित है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP-2020) भारतीय ज्ञान, परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को बरकरार रखते हुए प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर विशेष महत्व देती है। इस नीति से हमारे शिक्षकगण, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 'बुनियादी शिक्षा' के सिद्धान्त के साथ-साथ 'उच्च स्तर' की तार्किक और समस्या-समाधान संबधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास हमारे विद्यार्थियों में कर सकेंगे।

'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम' (RKSMBK) के यज्ञ में हम अपनी ज्ञान क्षमताओं की आहूति से ज्ञान की ज्योति जलाए रखें। इस योजना का उद्देश्य है कि विद्यार्थी, 'रटना नहीं, समझना सीखें'। प्रत्येक शनिवार को 'NO BAG DAY' की शुरूआत इस नीति को फलीभूत करने में मील का पत्थर साबित होगी।

हम 12 मार्च 2021 से राष्ट्रीय स्तर पर 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रहे हैं। 12 मार्च 1930 को महात्मा गाँधी ने 'दाण्डी यात्रा', प्रारम्भ की थी। अत: 12 मार्च का दिन इस महोत्सव हेतु चुना गया। आजादी के 76 वर्षों में देश की आजादी से अब तक की प्रगति हेतु लिए गए संकल्पों के मंथन से प्राप्त 'आत्मनिर्भरता के अमृत' को आगामी 75 सप्ताह तक विभिन्न शैक्षिक, सांस्कृतिक व देशभक्ति के विषयों को समाहित करते हुए 15 अगस्त 2023 तक आत्मसात् किया जाएगा।

12 अगस्त 2022 को प्रदेश के सभी विद्यालयों में सभी विद्यार्थियों द्वारा निर्देशित समय पर एक साथ निम्नलिखित छह देशभक्ति गीतों का गायन सस्वर करवाया जाए। जिसमें 1. वंदेमातरम्... ,2. सारे जहाँ से अच्छा... ,3. आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ... ,4. झण्डा ऊँचा रहें हमारा... ,5. हम होंगे कामयाब... तथा 6. राष्ट्रगान... शामिल हैं।

13-15 अगस्त 2022 को 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत हम अपनी राष्ट्रीय एकता एवं अखंण्डता को बनाए रखने का संकल्प लेंगे।

अगस्त माह विभिन्न उत्सवों-पर्वों-मेलों का महीना है। कृष्ण -जन्माष्टमी, रक्षाबंधन, कजली तीज हमें सांस्कृतिक रूप से एक सूत्र में पिरोते हैं। इन दिवसों हेतु बधाई ! मोहर्रम का पर्व, संबंधित सांस्कृतिक भावना के अनुरूप मनाया जाए। हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद का जन्म दिवस 29 अगस्त-राष्ट्रीय खेल दिवस, हमें पढ़ने के साथ-साथ खेलों में भी उत्कृष्टता प्रदर्शन करने की प्रेरणा देता है।

समस्त आदरणीय गुरुजनों, प्रिय विद्यार्थियों और शिक्षा विभाग के कार्मिक कर्तव्य के पथ पर अग्रसर रहें....

जय हिन्द !

(गौरव अग्रवाल)

" राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम' (RKSMBK) के यज्ञ में हम अपनी ज्ञान क्षमताओं की आहूति से ज्ञान की ज्योति जलाए रखें। इस योजना का उद्देश्य है कि विद्यार्थी, 'रटना नहीं, समझना सीखें "

मासिक शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते–श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge

वर्ष : 63 । अंक :02 । श्रावण–भाद्रपद २०७९ । अगस्त–2022

प्रधान सम्पादक
गौरव अग्रवाल
*
वरिष्ठ सम्पादक
सुनीता चावला
*
सम्पादक
राकेश व्यास
*
सह सम्पादक
सीताराम गोदारा
*
प्रकाशन सहायक
नारायण दास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ऑनलाईन प्रकाशन

वार्षिक सदस्यता राशि व शर्तें

* शिक्षकों / लिपिकों के लिए रु.100
* राजकीय संस्थाओं / कार्यालयों / विद्यालयों के लिए रु.200
* गैर राजकीय संस्थाओं के लिए रु. 300
* मनीऑर्डर / बैंक ड्रॉफ्ट / पोस्टल ऑर्डर **निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम से देय हो।
* चेक स्वीकार्य नहीं है।
* कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
* नवीनीकरण हेतु राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334011
दूरभाष : 0151–2528875
Email : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

अपनों से अपनी बात
• राष्ट्र का भविष्य आगे आने वाली पीढ़ियों पर निर्भर करता है। 2

मेरा संदेश
• कुछ याद उन्हें भी कर लो जो लौट के फिर न आए... 3

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
• समझ कर सीखें 4

आलेख्य
• राष्ट्र जागरण का बीज मंत्र : वन्देमातरम् 10
–विजय सिंह माली
• विदेशी धरा में बहती देव भाषा संस्कृत की धारा
– सुधारानी तैलंग 12
• शिक्षा प्रणाली के आधुनिकीकरण के जनक–स्व. राजीव गाँधी
– भगवान सहाय मीना 13
• आजादी का अमृत महोत्सव एवं श्री अरविन्द सार्द्धशती
– सूर्य प्रकाश सिंह राजावत 15
बच्चों में मूल्य शिक्षा का बीजारोपण : शिक्षक का दायित्व
– जय सिंह सिकरवार 17
भारत की आजादी की कहानी और नया भारत
– डॉ. जयेश व्यास 19
युवाओं के लिए जरूरी है... स्वस्थ प्रतिस्पर्धा
– राजकुमार बुनकर 30
• Texbook Acticity:Pre reading Expressiosns
- Dr. Ram Gopal Sharma
• नेशनल मीन्स कम मेरिट स्कॉलरशिप स्कीम
– रोहिताश 34
• सफलता के स्वर्णिम सिद्धान्त
– कृष्ण चन्द्र टवाणी 35
• प्रगतिमय भारत का आदिवासी समाज
– नारायण दास जीनगर 38
• शिक्षक से महामहिम तक द्रौपदी मुर्मू
– भीष्म कुमार महर्षि 41

साक्षात्कार
• प्रतिभाएँ जिनकी उपलब्धि पर हमें गर्व है...
– वरिष्ठ सम्पादक 33
• रिपोर्ट : वर्चुअल शुभारम्भ एवं फील्ड ऑरिएंटेशन
–सुनीता चावला 7

मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर ...
इकलौते शिक्षक ने बदल दी विद्यालय की तस्वीर
–राजीव कुमार 42

स्तम्भ-
• पाठकों की बात 6
• आदेश परिपत्र : अगस्त, 2022
• पीएम ई विद्या 31
• बाल शिविरा 46
• शाला प्रांगण से 47
• भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर
–सुलेखा स्वामी 48–50

पुस्तक समीक्षा
• बाळ मन री जिज्ञासावां
लेखक – ओम प्रकाश तंवर
समीक्षक – डॉ. राजकुमार शर्मा
• आदमखोर
लेखक – आशा पाराशर
समीक्षक – सुमन सिंह 44

मुख्य आवरण :
नारायण दास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

पाठकों की बात...

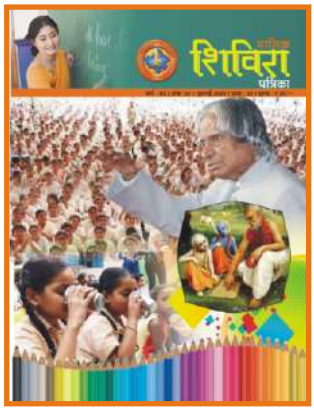

हर बार की भांति जुलाई माह में भी शिविरा के मासिक अंक का इंतजार था। पता चला कि जुलाई 2022 की शिविरा प्रिंटरूप में नहीं हो कर विभागीय वेबसाईट पर डिजिटल प्रारूप में उपलब्ध है। शिविरा के संपादक मंडल का यह प्रयास सराहनीय है।

शिविरा के डिजिटल अंक को प्रासंगिक सुंदर आवरण के साथ पढ़कर देखा। मन में प्रसन्नता हुई। माननीय शिक्षा मंत्री, शिक्षा राज्यमंत्री के संदेश एवं समग्र मूल्यांकन की दिशा में एक अभिनव पहल - प्रियंका जोधावत , कुछ लिख के सो कुछ पढ़कर सो - ओमप्रकाश सारस्वत जी के आलेख समयानुकूल एवं सार्थक लगे। नन्हें कदम पर सधे कदम-डॉ. मूलचंद बोहरा, शिक्षण में कहानी की सार्थकता- डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता के आलेख भी ज्ञानवर्धक थे। मेरी आवाज ही पहचान है- कमल कुमार जांगिड ने रेडियो के इतिहास का बखूबी से परिचय करवाया।

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर-दीपक भारद्वाज के आलेख पढ़ के यह अहसास हुआ कि भामाशाह के सहयोग से हमारे विद्यालय समृद्ध हो रहे है।

संपादक मंडल को शिविरा के डिजिटल एवं सारगर्भित अंक के लिए बधाई। साथ ही यह भी आग्रह है कि शिविरा का प्रिंट रूप भी उपलब्ध करवाएं। प्रिंट रूप में पढ़ने का अलग ही आनंद होता है।

हर्ष सोनी, दिल्ली

मेरे अब तक के शिक्षक जीवन में पहली बार डिजिटल रूप में शिविरा जुलाई-2022 का अंक शिक्षा विभाग की वेबसाईट पर पढ़ने को मिला। इस कार्य के लिए शिविरा प्रकाशन परिवार के कार्मिकों की सराहना जितनी की जाए उतनी कम है। माननीय शिक्षा मंत्री जी डॉ. बी.डी. कल्ला के संदेश से गुरू के प्रति सम्मान रखते हुए जिंदगी में आगे बढ़ने में आने वाले उतार-चढ़ाव से निराश ना होकर मजबूत संकल्प से आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। माननीय शिक्षा राज्य मंत्री महोदया के संदेश से विद्यालय पुस्तकालय को उपयोगी पुस्तकों से समृद्ध करने की प्रेरणा मिलती है। शिक्षा निदेशक महोदय का दिशा कल्प, शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों में कोविड काल में हुए लर्निंग लॉस को पूरा करने हेतु 'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम' कार्यक्रम द्वारा सरल व आनंदपूर्ण शिक्षण विधियों हेतु प्रेरणा मिलती है।

प्रियंका जोधावत जी के आलेख 'असेसमेंट सेल' से विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर के आकलन को बखूबी स्पष्ट किया है। शिक्षाविद् ओमप्रकाश जी सारस्वत के आलेख 'कुछ लिख के सो,कुछ पढ़ के सो' में आलोचक बनिए, आलोचना सहिए से हमें अपने कार्यों की सतत् समीक्षा करते हुए जीवन में विकास के पथ पर बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। देवेन्द्रराज सुथार के आलेख युवाओं के पथ-प्रदर्शक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के द्वारा युवाओं की ऊर्जा के संतुलित उपयोग से भारत के विकास की राह को आसान करने की प्रेरणा मिलती है।

डॉ. गौरीशंकर प्रजापत के आलेख से स्पष्ट होता है कि भारतीय धर्म एवं संस्कृति, पर्यावरण संरक्षण का आधार है।

किरण व्यास, बीकानेर

शिविरा जुलाई 2022 का ऑनलाईन अंक मिला, पढ़ने में मशक्कत करनी पड़ी परन्तु जैसा ऑफलाईन मिलता है वैसा प्राप्त कर आनन्द प्राप्त हुआ। आवरण एवं संदेशों के माध्यम से बेहतरीन मार्गदर्शन के साथ शिक्षा के नवाचारों एवं शैक्षिक चिन्तन के आलेखों के संकलन एवं प्रकाशन ने शिविरा का स्वरूप निरन्तर बेहतर बनाया रखा है। ऑनलाईन के माध्यम से पहली बार अंक की नियमितता को बनाए रखने के लिए किए गए सम्पादक मण्डल के प्रयासों की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम हैं।

शिविरा में आलेखों के साथ-साथ शाला-प्रांगण एवं बाल-शिविरा जैसे उपयोगी स्थाई स्तम्भों को और जगह प्रदान करने की जरूरत हैं ताकि शालाओं में गतिविधियों एवं बालकों की सृजनात्मक क्षमता को पंख लग सके। पुनः सभी का धन्यावाद !

सालगराम पटिहार, बालोतरा

शैक्षिक चिन्तन

उत्साहो बलवानार्य,
नास्त्युत्साहात्परं बलम् ।
सोत्साहस्य च लोकेषु,
न किंचिदपि दुर्लभम् ।।

अर्थात्-उत्साह वाला व्यक्ति शक्तिशाली व्यक्ति होता है। उत्साह जैसा शक्तिशाली संसार में कुछ भी नहीं है। एक उत्साही व्यक्ति के लिए कुछ भी करना और कर दिखाना असंभव नहीं है ('दुर्लभः' का शाब्दिक अर्थ है अप्राप्य को प्राप्त करने का प्रयास करना)। 'इच्छा है तो राह है।' कुछ भी असंभव नहीं है; इसे अंत तक धक्का देना चाहिए। यानी लक्ष्य हेतु हमेशा हमें प्रयासरत रहना चाहिए।

'अज्ञात'

RKSMBK

'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम'

वर्चुअल शुभारम्भ एवं फील्ड ओरिएंटशन

• सुनीता चावला

एक विचार एवं एक प्रकार के ज्ञान से युक्त समान मन वाले हे मित्रजन उठो जागो। होकर अनेक भी संग चलो जीवन रहस्य को पहचानो। ऋग्वेद मण्डल का यह सूत्र हमें सिखाता है अनेकता में एकता का महत्त्व, यही है हमारी विशेषता। इसी तरह के समान विचार, ज्ञान और मन वाले राजस्थान राज्य के संवेदनशील माननीय मुख्यमंत्री श्रीमान अशोक गहलोत जी की मंशानुरूप एवं उनके नेतृत्व में लोक कल्याणकारी सरकार के ध्येय को साकार करने की कड़ी में राजस्थान के शिक्षा जगत को नवाचारों के माध्यम से नई ऊर्जा प्रदान करने के लिए शिक्षा विभाग द्वारा 11 जुलाई, 2022 सोमवार को शैक्षिक उन्नयनकारी कार्यक्रम (RKSMBK) : ' राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम' के ऑनलाइन लॉन्च एवं फील्ड ओरिएंटेशन का शुभारंभ राजस्थान के यशस्वी एवं संवेदनशील माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी के कर कमलों से हुआ। इस शुभावसर पर माननीय शिक्षा मंत्री डॉ बी. डी. कल्ला, माननीय शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती जाहिदा खान, माननीय मुख्य सचिव श्रीमती उषा शर्मा, अतिरिक्त मुख्य सचिव (स्कूल शिक्षा एवं भाषा विभाग) श्री पी. के. गोयल, प्रमुख शासन सचिव (वित्त) श्री अखिल अरोड़ा, प्रमुख शासन सचिव (मुख्यमंत्री) श्री कुलदीप रांका, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान एवं इस कार्यक्रम के नोडल अधिकारी श्री गौरव अग्रवाल तथा सम्मानीय अधिकारीगण की गरिमामयी उपस्थिति रही साथ ही इस कार्यक्रम में ऑनलाइन, यू-ट्यूब, फेसबुक लाइव आदि माध्यमों से NEP के जिला नोडल अधिकारी, जिला कलक्टर्स, शिक्षा विभाग के समस्त अधिकारीगण, समस्त पीईईओ, शिक्षकगण, अभिभावकगण, जन प्रतिनिधिगण व विद्यार्थियों की शिक्षाविभाग के गौरवमयी कार्यक्रम में उपस्थिति रही।

स्वागत उद्बोधन एवं कार्यक्रम का परिचय देते हुए श्रीमान पी. के. गोयल अतिरिक्त मुख्य सचिव (स्कूल शिक्षा एवं भाषा विभाग) ने बताया कि माननीय मुख्यमंत्री महोदय बजट

घोषणा के रूप में एक बड़ी पहल करते हुए बच्चों की शिक्षा में कोविड काल में हुई क्षति की भरपाई हेतु बजटीय प्रावधान के साथ तीन महीने के ब्रिज कोर्स की घोषणा की थी। इस बजट घोषणा की क्रियान्विति के रूप में ही आज 'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम' कार्यक्रम की लॉन्चिंग की जा रही है। इस कार्यक्रम के तहत लर्निंग लॉस की क्षतिपूर्ति, विद्यार्थियों के हॉलिस्टिक डवलपमेंट, अध्ययन की निरन्तरता और शैक्षिणिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के साथ-साथ रेमेडिएशन कार्यक्रम के माध्यम से की जाएगी। इसके लिए सर्वप्रथम शिक्षा विभाग ने कक्षा 1 से 8 तक बच्चों के लिए वर्कबुक्स तैयार की है। ये वर्कबुक्स हिन्दी, अंग्रेजी व गणित तीन विषयों में है।

विद्यार्थियों का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाएगा जिसमें तीन तरह से मूल्यांकन होगा- बेसलाइन, रचनात्मक एवं योगात्मक मूल्यांकन। यह कार्यक्रम दो चरणों में चलाया जाएगा- प्रथम चरण : जुलाई से सितम्बर तक (जिसमें बच्चों का चार कालांशों में रेमेडिएशन किया जाएगा) द्वितीय चरण : 22 अक्टूबर से 22 अप्रेल तक जिसमें दो अतिरिक्त कक्षाओं के माध्यम से रेमेडिएशन कार्यक्रम चलाया जाएगा।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षा अधिकारियों, शिक्षकों व विद्यार्थियों को दक्षता आधारित शिक्षण से संबंधित ब्रिज कोर्स को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करना है। विद्यार्थियों के लर्निंग में आए गैप की पूर्ति कर, दक्षता आधारित शिक्षण से क्षतिपूर्ति करके उनको उनके एट-ग्रेड लेवल तक लाना है। **श्रीमती उषा शर्मा** मुख्य सचिव महोदया ने 'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम' कार्यक्रम के शुभारम्भ को महत्वपूर्ण कदम बताते हुए कहा कि शायद देश में राजस्थान पहला राज्य है जहाँ शिक्षा विभाग के शैक्षिक उन्नयनकारी कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री महोदय स्वयं उपस्थित है, इससे हम सभी अंदाजा लगा सकते हैं कि माननीय मुख्यमंत्री महादेय की सर्वोच्च प्राथमिकता है बच्चों की शिक्षा।

मुख्य सचिव महोदया ने कहा कि हमें यह समझना चाहिए कि अगर राज्य की प्रगति पर ध्यान देना है तो हमें शिक्षा के तमाम पहलुओं पर भी ध्यान देना होगा। आज का कार्यक्रम मुख्य रूप से कोविड काल में विद्यार्थियों को हुए लर्निंग लॉस की क्षतिपूर्ति कैसे करनी है तथा इस हेतु हमें कौनसी प्रणाली को काम में लेना है, इस पर केन्द्रित है। शिक्षकों को यह समझना होगा कि उन्हें किस प्रकार से अपने कक्षा-शिक्षण से बच्चों को जोड़ना है, सहभागी बनाना है। इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक ही चेंजमेकर की भूमिका में हैं।

राजस्थान ने इस ओर बहुत महत्वपूर्ण कदम उठाएं है जैसे कि पहले से ही जो आंगनबाड़ी है, उन्हें स्कूल शिक्षा से संबद्ध किया है। साथ ही प्री- प्राईमरी एवं बाल वाटिकाओं की स्थापना की है।

हम कोविड काल में जान चुके हैं कि वर्चुअल प्लेटफॉर्म या तकनीक का किस तरह से बेहतर उपयोग किया जाए जिससे कि हम अच्छी शिक्षा प्राप्त कर पाएं। राजस्थान में इस ओर भी बहुत अच्छा काम हुआ है जैसा कि शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से जितने भी बच्चे व शिक्षक है, उन सभी की डिटेल पोर्टल पर मौजूद है और उनकी उपस्थिति, परीक्षा परिणाम, एपीआर, एसीपी आदि महत्वपूर्ण व उपयोगी कार्यशाला दर्पण पोर्टल पर संपादित किए जा रहे हैं।

मुख्य सचिव महोदया इस कार्यक्रम से विभिन्न ऑनलाईन प्लेटफॉर्म से जुड़े लाखों शिक्षकों से आह्वान किया कि बदलते शैक्षिक परिदृश्य में तकनीकी आधारित शिक्षण प्रशिक्षण को गंभीरता से लें।

श्रीमती जाहिदा खान, माननीय शिक्षा राज्य मंत्री महोदया ने - 'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम ' कार्यक्रम का आज ऑनलाइन लॉन्च आदरणीय अशोक गहलोत साहब के नेतृत्व में हो रहा है, यह हमारे लिए बहुत खुशनसीबी की बात है। यहाँ हम कोविड का जिक्र ना करें तो हमारी यह बात अधूरी रहेगी क्योंकि कोविड काल में राजस्थान का शानदार मैनेजमेंट हुआ था। माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने यह सुनिश्चित किया कि विधायक निधि से दो करोड़ रुपये स्वास्थ्य के क्षेत्र में देने का आह्वान किया जिससे हेल्थ सेक्टर का सिस्टम अच्छा हुआ । उसी तरीके से शिक्षा पर फोकस है हम उसके लिए बहुत शुक्रिया अदा करते हैं।

उन्होंने कहा कि यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पूरी पीढ़ी को शिक्षित करते हैं। किसी भी देश के उज्ज्वल भविष्य एवं विकास के लिए नारी का शिक्षित होना आवश्यक है। प्रवेशोत्सव अभियान में अनामांकित एवं ड्रॉपआउट बालिकाओं को विद्यालय से जोड़ने के लिए विशेष रूप से अभियान चलाए जा रहे हैं। विगत वर्षों में बालिका शिक्षा के क्षेत्र में राज्य में उल्लेखनीय कार्य हुआ है। बालिका शिक्षा की पहुँच गाँव-ढाणी तक सुनिश्चित किए जाने के लिए राज्य में सभी 115 बालिका प्राथमिक विद्यालयों को बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों में एवं 400 से अधिक बालिका माध्यमिक विद्यालयों को बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर तक अपग्रेड किया गया है। राज्य में संचालित 1846 बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों को चरणबद्ध रूप से सीधे ही बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में क्रमोन्नत किया गया। बालिकाओं को सकारात्मक एवं उच्च शिक्षा हेतु मोटिवेट करने के लिए बालिकाओं के लिए विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं भी संचालित की जा रही है। इंदिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार योजना, नि:शुल्क साइकिल वितरण योजना, रानी लक्ष्मीबाई आत्मरक्षा प्रशिक्षण योजना, मुख्यमंत्री हमारी बेटियां योजना, विदेश में स्नातक स्तर तक शिक्षा सुविधा योजना, गार्गी पुरस्कार योजना, कस्तूरबा गांधी राजकीय आवासीय विद्यालय योजना, ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना, बालिका प्रोत्साहन पुरस्कार योजना, आपकी बेटी योजना, शारीरिक अक्षमता युक्त बालिकाओं हेतु आर्थिक संबलता पुरस्कार, मूक- बधिर एवं नेत्रहीन बालिकाओं हेतु आर्थिक संबलता पुरस्कार दिए जा रहे हैं।

बेटियों की विशिष्ट आवश्कताओं के लिए स्वास्थ्य विभाग के साथ मिलकर 'उड़ान' योजना के तहत नि:शुल्क सेनेटरी नेपकिन वितरण किए जा रहे हैं । बेटियों की मानसिक संवेदनाओं को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक विद्यालय में 'चुप्पी छोड़ो-हमसे कहो' अभियान के तहत गरिमा पेटी की व्यवस्था करवाई गई है ।

माननीय शिक्षा राज्य मंत्री महोदया ने मंच के माध्यम से उपस्थित प्रबुद्धजनों से आग्रह किया कि हमारी बेटियों में भी बेटों के समान क्षमताएं हैं, जरूरत है तो सिर्फ उन्हें मोटिवेट करने की एवं समान अवसर देने की । मैं इस कार्यक्रम की सफलता की कामना करती हूँ।

माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बुलाकी दास कल्ला ने कार्यक्रम शुभारम्भ के सुअवसर पर कहा कि राजस्थान में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं शिक्षा के क्षेत्र में ढांचागत विकास के लिए माननीय मुख्यमंत्री महोदय के नेतृत्व में टीम एजुकेशन राजस्थान ने पिछले साढ़े तीन वर्ष में बेहतरीन कार्य किए हैं।

इस अवसर पर खेल एवं बाल वैज्ञानिकों के नवाचारों का जिक्र करते हुए कहा कि इन क्षेत्रों में राजस्थान की पूरे देश में तारीफ हुई है। नेशनल अचीवमेंट सर्वे (नवम्बर 2021) में NCERT द्वारा शैक्षिक व गुणवत्ता आकलन किया गया था, उसमें सम्पूर्ण देश के औसत स्कोर से राजस्थान का औसत स्कोर काफी ऊपर था। इसी प्रकार राजकीय विद्यालयों के नामांकन में भी उत्साहजनक वृद्धि हुई है। गत वर्ष लगभग 98 लाख 50 हजार विद्यार्थियों का नामांकन हुआ। अभी वर्तमान सत्र का प्रवेशोत्सव हम मना रहे हैं । हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि कोई भी विद्यार्थी ड्रॉप आउट नहीं हो, अगर ड्रॉप आउट हो गया है तो उसे पुन: विद्यालय से जोड़ा जाए । उन्होंनें कहा कि माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने सीधी भर्ती से अब तक 77239 शिक्षकों की नियुक्तियां की है। शिक्षा विभाग में विभिन्न संवर्गों की 94845 पदों पर सीधी भर्ती तथा अंग्रेजी माध्यम के शिक्षकों के 10,000 पदों पर सीधी भर्ती प्रक्रियाधीन है। कम्प्यूटर संवर्ग में 10,000 कम्प्यूटर शिक्षकों की भर्ती का निर्णय भी स्वागत योग्य है। इससे राजस्थान में बेरोजगारी समाप्त करने के लिए महत्त्वपूर्ण प्रयास हुए हैं।

कोविड के दौरान आप सबने देखा होगा कि विद्यार्थी सबसे अधिक प्रभावित हुए लेकिन ऑनलाइन कोर्सेज, हवामहल, रेडियो, टीवी इन सब माध्यमों से जो पढ़ाई की उससे अन्य राज्यों की तुलना में राजस्थान के विद्यार्थियों की अच्छी परफॉर्मेन्स रही। यदि कोई कमी रह गई है तो 'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम' कार्यक्रम के अन्तर्गत ब्रिज कोर्स हेतु बजट घोषणा बिन्दु - 6 व 3 में 25 करोड़ रुपये का प्रावधान किया था ताकि कक्षा-1 से 8 तक के विद्यार्थी ब्रिज कोर्स के माध्यम से पढ़ सके तथा कक्षा-3 से 8 तक के विद्यार्थियों को मूल्यांकन के आधार पर अधिगम स्तर में सुधार देख सकें।

शिक्षा मंत्री महोदय ने बताया कि राजस्थान इंस्पायर अवार्ड में सत्र 2020-21 एवं 2021-22 में राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोच्च स्थान पर रहा है। फिट इंडिया मूवमेन्ट में राजस्थान देश में सर्वोच्च स्थान पर है।

शिक्षामंत्री महोदय ने अपने उद्बोधन में 'नो-बैग डे' का उल्लेख करते हुए बताया कि शनिवार के दिन पाठ्येत्तर एवं पाठ्य सहगामी क्रिया कलापों को प्रोत्साहन देने का प्रदेश का यह अभिनव नवाचार है।

आजादी का अमृत महोत्सव चल रहा है। तो नियत दिन (12 अगस्त, 2022) को एक साथ पूरे प्रदेश में चार देशभक्ति गीतों 'वंदेमातरम्', 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा', 'आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं झांकी हिन्दुस्तान की' और 'जन गण मन' को सब एक साथ लगभग एक करोड़ लोग गाएंगे जो कि अपने आप में एक वर्ल्ड रिकॉर्ड होगा।

सम्बोधन के अन्त में शिक्षा मंत्री महोदय ने माननीय मुख्यमंत्री महोदय का आभार करते तमाम शिक्षकों से आह्वान किया कि - 'उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक हमारा लक्ष्य प्राप्त ना हो जाय।'

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम' को अद्भुत प्रोग्राम बताते हुए शिक्षा विभाग को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह अद्भुत इसलिए है कि एक तो इसमें राजस्थान का शिक्षा परिवार जुड़ा है और दूसरा इस कार्यक्रम का उद्देश्य हैं वो भी बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। जिस प्रकार से कोरोना ने देश-दुनिया में हाहाकार मचाया था, उसकी कभी किसी ने कल्पना नहीं की थी। लॉक डाउन के समय देश में जो हालात हुए , उसकी भी किसी ने कल्पना नहीं की थी। वैसे तो कोरोना से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाले छोटे बच्चे थे क्योंकि उनका पूरा भविष्य, जिन्दगी सामने पड़ी हैं । हम कितनी ही कोशिश कर लें ऑनलाइन शिक्षण की परन्तु वो माहौल नहीं बनता है, जो ऑफलाइन पढ़ाई से हो सकता है। शिक्षा विभाग ने ऑनलाइन शिक्षण की अच्छी पहल की । शिक्षकों ने भी कोर्सेज की रिकॉर्डिंग की, शिक्षा विभाग द्वारा पूरे प्रयास किए गए कि ऐसी स्थिति में बच्चों को पढ़ाई का नुकसान नहीं हो । पर उस वक्त का अनुभव बता रहा था कि सब बच्चे ऑनलाइन शिक्षा से जुड़ नहीं पा रहे थे, जिसका कारण था कि कई गाँवों में इन्टरनेट नहीं था। अनेक बच्चों के पास संसाधन भी नहीं थे।

माननीय मुख्यमंत्री ने शिक्षा विभाग को बधाई देते हुए कहा कि आपने 'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम' कार्यक्रम के रूप में अभिनव प्रयोग किया और इसके माध्यम से ब्रिज कोर्स की हमने बजट घोषणा की थी, आप इस काम को आगे बढ़ाइए । शिक्षा विभाग ने बजट घोषणा को ही पूरा करने, क्रियान्वित करने के लिए बहुत मेहनत करके जो ब्रिज कोर्स बनाए हैं, के माध्यम से शिक्षा विभाग अपने उद्देश्य में पूरी तरह कामयाब होगा और दूसरी तरफ शिक्षकों को अच्छी ट्रेनिंग देकर गैप को कम करने का प्रयास करेगा। हम बच्चों का लर्निंग गैप कितना कम कर पाएंगे वो मुख्य रूप से टीचर्स पर निर्भर करता है । बेसिक ज्ञान जो उससे छूट गया है उसे वो ब्रिज कोर्स के माध्यम से पूरा कर लेते हैं तो काफी हद तक वो लर्निंग लॉस की क्षतिपूर्ति कर सकते हैं ।

माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने ब्रिज कोर्स में समूह आधारित शिक्षण पर कहा कि बच्चों को टेलेन्ट के आधार पर अलग-अलग समूहों में बांटते समय इस बात का विशेष ध्यान रहे कि कहीं बच्चों में हीन भावना पैदा नहीं हो जाए। आगे उन्होंने कहा कि कोरोना काल में टीचर्स ने जो काम किया वो अद्भुत था, शिक्षा विभाग के अपने दायित्व के अलावा भी शिक्षकों को जो जिम्मेदारी सौंपी गई, उसे भी उन्होंने पूर्ण ईमानदारी से निभाया। गुड गवर्नेंस सरकार की प्राथमिकता हैं। सरकार ने सभी वर्गों का समुचित ध्यान रखा है इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है कि राजस्थान सरकार ने पुरानी पेंशन लागू की है । हमारे लाखों कर्मचारियों का भविष्य जो शेयर मार्केट आधारित अनिश्चितताओं से भरा हुआ था, उस चिंता को देखते हुए राजस्थान सरकार ने एक मानवीय पहल की है।

माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने शिक्षक समुदाय सहित सभी से मार्मिक अपील करते हुए कहा कि हमारी नैतिक जिम्मेदारी व दायित्व बनता है कि कैसे हम सरकार की नवाचारी पहल का लाभ जिन्हें मिलना चाहिए उन तक यह बात पहुँचाएं क्योंकि कई बार शिक्षा व जानकारी के अभाव में यह लाभ उस परिवार तक मिलता नहीं जिसे यह मिलना चाहिए । शिक्षक समुदाय, शिक्षा विभाग के कर्मचारी-अधिकारी व विद्यार्थी मिलकर बहुत बड़ी भूमिका अदा कर सकते हैं जो सरकार के फ्लेगशिप प्रोग्राम है, जो सीधा हिट करते हैं परिवार को उसके लाभ के लिए वहाँ तक हमारी स्कीम्स पहुँचे। खाली विज्ञापन व प्रचार से काम नहीं चलता है, फिजीकली हम लोगों को सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के बारे में कैसे बता सकते हैं, इस दिशा में भी आप सब आगे बढ़ेंगे ऐसा विश्वास है ।

हमने पहले भी शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रयोग किया था जिसका उद्देश्य था कि गाँव - ढ़ाणी में जहाँ भी पढ़ा लिखा मिल जाए उसे वहीं पर टीचर बना दें और उस समय राजस्थान का स्वर्ण जयन्ती वर्ष था और हमने इस योजना का नाम रखा था, राजीव गाँधी स्वर्ण जयन्ती पाठशाला। उस समय गाँव-ढाणियों में 23000 राजीव गाँधी स्वर्ण-जयन्ती पाठशालाएं खोली थी। इसका फायदा यह हुआ कि प्रदेश में शिक्षा का प्रतिशत तेजी से बढ़ा ।

माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने उम्मीद व्यक्त करते हुए कहा कि 'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम' कार्यक्रम अपने उद्देश्य में कामयाब होगा। बच्चों को अच्छे संस्कारों से युक्त गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने की अपील करते हुए अपनी बात को विराम दिया।

निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान एवं इस कार्यक्रम के नोडल अधिकारी **श्री गौरव अग्रवाल** ने माननीय मुख्यमंत्री महोदय को उनके आशीर्वचनों के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि 'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम' माननीय मुख्यमंत्री महोदय की कल्पना एवं विज़न का प्रतिफल है, जिसके लिए बजट घोषणा में वितीय प्रावधान कर राजस्थान सरकार की प्राथमिकता एवं प्रतिबद्धता प्रदर्शित की तथा बच्चों के लर्निंग गैप को चिह्नित कर ब्रिज कोर्स के माध्यम से बच्चों का शैक्षिक स्तर एट ग्रेड लेवल तक लाने हेतु पहल की।

निदेशक महोदय ने माननीय शिक्षा मंत्री महोदय एवं माननीय शिक्षा राज्यमंत्री महोदय को माननीय मुख्यमंत्री महोदय के विज़न को साकार करने के लिए अपना अमूल्य समर्थन एवं मार्गदर्शन देने के लिए आभार व्यक्त किया । साथ ही मुख्य सचिव महोदया एवं अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय को अपने व्यस्ततम समय में से इस कार्यक्रम हेतु समय निकालकर मार्गदर्शन देने एवं अनुभव साझा करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

वरिष्ठ सम्पादक (शिविरा)
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर ।
मो.-9414426063

राष्ट्र जागरण का बीज मंत्र - वन्देमातरम्

-विजयसिंह माली

राष्ट्र की जय चेतना का गान वन्देमातरम
राष्ट्र भक्ति प्रेरणा का गान वन्देमातरम्
वन्देमातरम् वन्देमातरम् वन्देमातरम्
वन्देमातरम।

वन्देमातरम् भारतीय स्वातंत्र्य युद्ध का बीज मंत्र हैं। इसका उद्घोष करते हुए असंख्य देशभक्त क्रांतिवीर स्वातंत्र्य सैनिक फांसी के तख्त पर हँसते - हँसते चढ़ गए थे। एक दृष्टि से देखा जाए तो वन्देमातरम् का इतिहास परकीय ब्रिटिश अत्याचारी शासन के विरोध में चलाए गए स्वातंत्रता संग्राम की ही कहानी हैं। इस देश में वन्देमातरम् का उद्घोष देशभक्ति की गर्जना समझी जाती रही है और रहेगी। भारत के राष्ट्रजीवन में श्रीमद्भागवत् गीता जैसा स्थान व महत्त्व वन्देमातरम् को प्राप्त हुआ हैं। वन्देमातरम् ने भारत के इतिहास को नया मोड़ दिया।

वन्देमातरम् बंकिम चंद्र चटर्जी की साहित्य लता पर खिला हुआ सर्वश्रेष्ठ पुष्प हैं। बंकिम चंद्र की प्रतिभा का सम्पूर्ण सौन्दर्य ,सौरभ और सुधा की माधुरी इस काव्य में एकत्र हुई। कहा जाता हैं कि सन् 1875 की दुर्गापूजा की छुटिट्यों में बंकिम चंद्र अपने गाँव कांठलपाडा जा रहे थे। बंकिम गाड़ी की खिड़की से सृष्टि का सौन्दर्य निहार रहे थे। चारों ओर हरियाली ही हरियाली दृष्टि गोचर हो रही थी। सोनार बांग्ला के इस रमणीय दृश्य को देखकर कवि हृदय भारत माँ के दर्शन से अभिभूत हो उठा। भौतिक विश्व का विस्मरण हुआ और उनका व्यक्तित्व भारत माँ के इस अद्भुत रूप से एकाकार हो गया। इस भावविभोर अवस्था में सिंह वाहिनी, त्रिशूलधारिणी, सुवर्ण किरीटिनी मां का रुप दृष्टिगोचर हुआ, उसका चेहरा सजीली मुस्कान से आपूरित था। इस दर्शन से उनका रोम -रोम पुलकित हो उठा और भावनाओं ने शब्द रूप लिया -

'वन्देमातरम् ,
सुजलां सुफलां मलयशीतलाम्
शुभ्र ज्योत्सनापुलकित यामिनीम्।'

आनंद मठ उपन्यास के अभिन्न अंग के रूप में यह गीत संसार के सामने आया। आनंद मठ में वन्देमातरम् 'संतान सम्प्रदाय' का गीत हैं। मातृभू की संतान कटिबद्ध है माँ के लिए.... ।वंदेमातरम्

गीत में मातृभूमि को माँ के रूप में प्रस्तुत किया हैं। 'जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयसी' की भावना को नया परिवेश देते हुए भूमि को अपनी श्रद्धाभक्ति का प्रतीक माता के रूप में देखने का भाव जगा और विजिग्रीषु वृत्ति जगाते हुए उसे शक्तिशाली अर्थात् अजेय शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। 1896 ई. में कांग्रेस का 12 वां अधिवेशन मोहम्मद रहीमतुल्ला सयानी की अध्यक्षता में हुआ। रविन्द्र नाथ ठाकुर ने वन्देमातरम् गाया। इसके पश्चात् लगातार कांग्रेस के मंच पर मंगलाचरण के रूप में इसका गायन होता रहा।

वर्ष 1905 में जब बंग भंग के विरोध में बंगाल की राजनीतिक आत्मा जाग उठी तो राष्ट्र अपनी अभिव्यक्ति के लिए किसी माध्यम की खोज करने लगा और यह जीवंत नारा बन गया। क्रांतिकारी गीत के रूप में वन्देमातरम् का सृजन युवा बंगाल ने किया। समूचा बंगाल 'वन्देमातरम् की क्रियात्मक अभिव्यक्ति बन गया। वन्देमातरम् स्वदेशी आंदोलन का प्राण बन गया। सतीश चंद्र के शब्दों में -

'' स्वदेशी संग्राम जाई आत्मदान।
वन्देमातरम् गाओ रे भाई ।

वन्देमातरम् की ताकत देखकर ब्रिटिश सरकार की स्थिति खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे वाली हो गई। वन्देमातरम् के उद्घोष पर ही रोक लगा दी लेकिन इसकी जनता में तीखी प्रतिक्रिया हुई। वन्देमातरम बीसवीं सदी में भारत की राष्ट्रीय अभीप्सा का यथार्थ उद्घोष बन गया। वन्देमातरम् ने मन से अचेतन भारतीय जनता की चिति जागृत कर स्वाधीनता का शंखनाद प्रारंभ किया। भगिनि निवेदिता ने वन्देमातरम् को ध्वज में स्थान दिया। भीकाजी कामा ने 22 अगस्त 1907 में जर्मनी के स्टुमार्ट शहर में वन्देमातरम् अंकित ध्वज फहराया। वन्देमातरम् अंग्रेजी साम्राज्य की शक्ति को चुनौती देने वाला, नि:शस्त्र जनता की आवाज को प्रकट करने वाला सामर्थ्यशाली शब्द बन गया। वन्देमातरम् नाम से 6 अप्रैल 1906 को समाचारपत्र का प्रकाशन शुरु हुआ। इस समाचार पत्र ने लोगों के मनों को क्रांति के लिए तैयार किया। अरविंद घोष ने 'वन्देमातरम्' का अंग्रेजी अनुवाद किया। उन्होंने 'इंदुप्रकाश ' में वंदेमातरम् विषयक लेख लिखकर उसकी दार्शनिक व्याख्या की। अरविंद घोष के लेखों ने सिद्ध कर दिया कि लेखनी तलवार से भी तीखी होती हैं। 'वन्देमातरम्' समाचार पत्र के लेखों को लेकर अंग्रेज सरकार ने मुकदमा चलाया। जिसने अरविंद को राष्ट्रीय मंच पर अग्रिम पंक्ति में ला खड़ा किया। इसी प्रकार का एक मुकदमा सावरकर व उनके सहयोगियों के खिलाफ चलाया गया।

वन्देमातरम् एक ऐसा गीत और उद्घोष था जिसने परवर्ती भारतीय युवा पीढ़ी को स्वातंत्र्य चेतना से अनुप्राणित किया था। इस मंत्र का उच्चारण करके असंख्य लोग फांसी के फंदे को चूम लिया। वंदेमातरम् के आगे सत्तामद को हारना पड़ा, बंगाल विभाजन का प्रस्ताव वापस लेना पड़ा पंचनद जाग उठा, दक्षिण भारत भी वन्देमातरम् के नारों से गूंज उठा। घर-घर की दीवारें भी वन्देमातरम् से सुशोभित होने लगी। समुद्रपार भी वन्देमातरम् ध्वनित - प्रतिध्वनित होने लगा।

भारतीय स्वाधीनता 15 अगस्त 1947 के सुप्रभात पर श्रीमती सुचेता कृपलानी ने वन्देमातरम् गाया। स्वातंत्र्य संग्राम में वन्देमातरम् घर -घर का गीत था। राष्ट्रगीत था। गाँधीजी भी इस गीत के प्रशंसक थे। उन्होंने वर्ष

1905 में लिखा - 'इस गीत को हमारा राष्ट्रगीत बनना चाहिए। ' फिर वर्ष 1936 में लिखा - '' कवि भारत माता को सुहासिनी, सुमधुर भाषिणी, बहुबलधारिणी, सुफला कहते हैं। मेरी राय में वह समस्त मानव जाति को अपने में समा लेती हैं। ''संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 24 जनवरी 1950 के दिन वक्तव्य दिया - जन-गण-मन शब्द संगीत वाली रचना भारत का राष्ट्रगान हैं। वन्देमातरम् गीत जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभायी हैं, उसे भी जन-गण-मन के ही समान सम्मान दिया जाएगा। राष्ट्र ने संविधान सभा का निर्देश शिरोधार्य किया।

बी .बी. सी. ने अपनी 70 वीं वर्षगांठ पर 2002 में विश्व के दस शीर्ष लोकप्रिय गीतों के बारे में 155 देशों में इंटरनेट पर एक सर्वे कराया। जिसके नतीजों के अनुसार वन्देमातरम् को दुनिया का दूसरा सबसे लोकप्रिय गीत घोषित किया गया। सचमुच वन्देमातरम् गीत में भारत माँ का सुन्दर वर्णन किया गया हैं। सुन्दर जल से सिंचित धरती सुफलां भी हैं। मलयपर्वत की शीतल वायु वाली भारत माता शस्य श्यामला हैं। इस शुभ्र ज्योत्सना में यामिनी पुलक से भर जाती हैं। फूलों से लदे सुगंध से भरे सुन्दर लगने वाले और सदैव सुख देने वाले वृक्षों से यह धरा सजी पड़ी हैं। यह सुहासिनी सुमधुर भाषिणी हैं। सुखदायक वरदान देने वाली हैं। यह विराट स्वरूपा भारत माँ बोलती है तो करोड़ों कंठ मुखरित होते हैं। करोड़ों - करोड़ों भुजाओं वाली ऐसी माँ को कौन अबला कह सकता है। बहुत बलों को धारण करने वाली इस माँ को हम नमन करते हैं। यह शत्रुदलों का संहार करने वाली है। यही विद्या है, यही धर्म है, यही हमारा हृदय और मर्म हैं। इस राष्ट्र का प्राण ही हमारे शरीर में दौड़ रहा है, हमारी भुजाओं में इस माँ की ही शक्ति हैं। हृदय में भारत माँ की ही भक्ति हैं। प्रत्येक मंदिर में तुम्हारी ही प्रतिमा है। तुम ही दुर्गा हो, तुम ही दशप्रहर धारिणी हो , तुम ही लक्ष्मी का स्वरूप हो, तुम ही वाणी और विद्या दायिनी हो। तुम ही कमला, अमला, अतुला , सजला, सुफल देने वाली माता के रूप में नमन योग्य हो। तुम ही श्यामला, सरल, सुस्मित, भूषित, धरणी, भरणी हो। ऐसी माँ को नमन है, शत-शत नमन हैं।

वन्देमातरम् गीत को समग्र रूप से पढ़ने पर साफ समझ में आ जाता हैं कि देशधर्म की श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए ही उसकी रचना हुई थी। इसका मुख्य उद्देश्य था आम लोगों में देशप्रेम जागृत करना। वन्देमातरम् का यह उद्देश्य काफी हद तक सफल हुआ हैं। आइए हम भी गुनगुनाएं -

जन जन के प्रिय कंठ का हो
गान वन्देमातरम्
अरिदल थर थर कांपे सुनकर
नाद वन्देमातरम्
वीर पुत्रों की अमर ललकार
गान वंदे मातरम्।
राष्ट्र भक्ति प्रेरणा का
गान वन्देमातरम्।

प्रधानाचार्य
श्री धनराज बदामिया राजकीय बालिका
उच्च माध्यमिक विद्यालय सादड़ी,
पाली (राज.)
मों -9829285914

देश भक्ति गीत...

विदेशी धरा में बहती देवभाषा संस्कृत की धारा

● सुधा रानी तैलंग

देवभाषा संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में एक है। संस्कृत से विश्व की अनेक भाषाएं उत्पन्न हुई है, समृद्ध हुई हैं। संस्कृत ही मात्र एक ऐसी भाषा है जिसके शब्द जर्मनी, ग्रीक, लेटिन आदि भाषाओं में मिलते हैं। संस्कृत का महत्त्व विदेशों में भी यूरोपीय और दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के विद्वानों ने भी पहचाना है।

सर विलियम जोन्स, गेटे, मैक्डॉनल, मैक्समूलर व चार्ल्स विल्किंस आदि विद्वानों ने वेदों का अध्ययन, मनन व शोध किया है । वेद, पुराण, उपनिषद, महाभारत, रामायण जैसे ग्रंथ संस्कृत भाषा में रचित है। ऋग्वेद विश्व के प्राचीनतम साहित्य है। ऋग्वेद की पाण्डुलिपियों को विश्व की सांस्कृतिक धरोहर का दर्जा मिलना हमारे लिए बेहद गौरव की बात है। ऋग्वेद की तीस पाण्डुलिपियों को विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया जाना भारतीय ज्ञान परम्परा के वैश्विक संरक्षण देने की दिशा में सचमुच एक सराहनीय और प्रशंसनीय पहल कही जा सकती है। संस्कृत ग्रंथों में खगोलीय, ज्योतिष, दर्शन, धर्म, आयुर्वेद, गणित, चिकित्सा आदि विषयों के ज्ञान के अपार भण्डार को देखते हुए विदेशी संस्कृत प्रेमी विद्वानों की रुचि प्रारंभ से ही संस्कृत भाषा में रही है।

हमारे देश में भले ही संस्कृत की लोकप्रियता घट रही हो किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृत का सम्मान दिनों दिन बढ़ रहा है। प्राचीन काल से भारत विश्व गुरु रहा है। विदेशों में संस्कृत भाषा के प्रति जिज्ञासा, लगाव सदियों से रहा है। पोलेण्ड के ऐतिहासिक शहर क्राकाओ में 14 वीं सदी के पैगलोनियन विश्वविद्यालय में पोलिश छात्र आज भी हिन्दी संस्कृत सीख रहे हैं। लगभग छह सौ वर्ष पुराने विश्वविद्यालय में विगत सौ वर्षों में इंडोलोजी विभाग में संस्कृत पढ़ाई जा रही है। लगभग दो सौ वर्षों से ऑक्सफोर्ड व केम्ब्रिज जैसे विश्व विद्यालयों में भी संस्कृत पढ़ाई जा रही है ।

आज भी ब्रिटेन, जर्मनी, रूस, आस्ट्रेलिया, फ्रांस एवं अमेरिका आदि देशों के पाठ्यक्रम में संस्कृत का शामिल किया जाना इस भाषा की प्रासंगिकता और महत्ता को साबित करता है। हमारे देश के युवाओं में जहाँ एक ओर विदेशी भाषाओं के प्रति क्रेज बढ़ा हैं वहीं अमेरिका में कुछ युवाओं ने एक वेब पोर्टल शुरू किया है, जिसमें फिल्मी गीतों व संवादों को बेहद सरल रोचक संस्कृत के वाक्यों में तैयार किया गया है। यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलेण्ड के DESI नामक छात्र समूह व संस्कृत भारती की वेबसाईट द्वारा भी संस्कृत को साधारण बोल चाल की भाषा बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

Speak.Sanskrit.org. का मानना है कि संस्कृत एक महत्त्वपूर्व व रोचक भाषा है। इसे खेल-खेल में रोचक तरीके से सीखा जा सकता है ।इसके लिए उन्होने ब्लॉग्स भी तैयार किए हैं। संस्कृत को पुनर्जीवित करने लिए ये सभी प्रयास अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। हार्वर्ड विश्व विद्यालय में भी मैनेजमेन्ट पाठयक्रम में भगवदगीता जैसे ग्रंथ को शामिल किया जाना, इसके दर्शन और ज्ञान के भंडार का महत्त्व को प्रतिपादित करता है। ब्रिटेन के सेन्ट जेम्स स्कूल में पाँच वर्ष की उम्र से ही संस्कृत वर्णमाला व राम: -रामौ-रामा: के शब्द रूप की लयात्मक मधुर ध्वनि को शिक्षकों के साथ दोहराते बच्चों को देखकर विदेशों में संस्कृत की बढ़ती अनिवार्यता व लोकप्रियता का पता चलता है।

मेरठ में नैक्टालैण्ड की संस्था के पाँच सदस्यीय समूह ने संस्कृत ग्रंथों को प्रिन्टिंग व डिजिटल कॉमिक्स के रूप में प्रकाशित किया है। प्रोफेसर पालॉक शैल्डन ने 1989 से 2005 तक संस्कृत शिक्षण करने के साथ रस मंजरी व रस तरंगिणी जैसे ग्रंथों को अंग्रेजी में अनुवाद किया है। उनकी 'गीर्वाण भारती' की अनवरत सेवा साधना को देखते हुए उन्हें 2009 में 'राष्ट्रपति पुरस्कार' व 2010 में भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री पुरस्कार' का दिया जाना देवभाषा के लिए सम्मान की बात है। विदेशों में संस्कृत के प्रति बढ़ती रुचि के चलते भारत के कई विद्वानों ने इन्टरनेट के माध्यम से संस्कृत सिखाने की सराहनीय पहल की है। संस्कृत को केवल पण्डितों की क्लिष्ट भाषा ही समझा जाता है। जबकि देखा जाए तो संस्कृत सरल, रोचक व पूर्णतया वैज्ञानिक भाषा है, जो कम्प्यूटर के लिए भी उपयुक्त है। संस्कृत सूचना तकनीकी में प्रयुक्त होने वाली यूनीकोड के बेहद समीप है।

संस्कृत को देश विदेश में बोलचाल की भाषा बनाने के प्रयत्न में देश की संस्कृत भारती संस्था भी लगातार प्रयासरत हैं। अमेरिकी युवाओं में संस्कृत के प्रति बढ़ती रुचि को देखते हुए संस्कृत भारती द्वारा अमेरिका के न्यूयॉर्क, बोस्टन, शिकागो ऑस्कन आदि शहरों में संस्कृत संभाषण शिविरों को आयोजित किया गया है।

'स्वर्णाजंलि' नामक ग्रंथ की रचना करने वाले बलदेव आनंद-सागर इन्टरनेट द्वारा संस्कृत समाचारों को ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, फ्रांस व अमेरिका आदि देशों तक पहुँचाना निश्चित ही एक सराहनीय पहल है।

वसुधैव कुटुम्बकम्... का सन्देश देते हुए हजारों मीलों की दूरियों को मिटाते हुए संस्कृत भाषा द्वारा जातिगत, धर्मगत, भाषागत, भेदभाव को दूर किया हैं। हमारे देश के भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम का ग्रीक के राष्ट्रपति श्री कोरोलस द्वारा संस्कृत के शब्दों में सम्मान किया जाना एवं अमेरिका की सीनेट में संस्कृत श्लोकों से शुभारंभ किया जाना हमारे देश के लिए बेहद गौरव व सम्मान की बात है। संस्कृत के महत्त्व को देखते हुए नासा के वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स ने भारत से संस्कृत के एक हजार विद्वानों को नासा में नौकरी देने का प्रस्ताव दिया था क्योंकि वैज्ञानिकों का मानना है कि संस्कृत पढ़ने से गणित व विज्ञान सीखने में आसानी होती है। अभी हाल ही में जारी एक रिपोर्ट के अनुसार चीन के युवाओं में भी संस्कृत के प्रति रूचि जागी है । वे संस्कृत सीखकर भारत के धार्मिक ग्रन्थ एवं योग की पुस्तकें पढ़ना चाहते हैं।

संस्कृत के महत्ता के बारे में चाणक्य ने कहा था -

''गीर्वाणवाणीषु विशिष्ट बुद्धिस्तथापि
भाषान्तार लोलुपो अहम्। ''

जैसे-अमृत पीने के बाद देवगण को ओर अधिक रसपान की इच्छा होती है वैसे ही संस्कृत भाषा को जानने के बाद मेरे मन में विश्व की अन्य श्रेष्ठ भाषाओं को जानने की ललक है।

वैश्वीकरण के इस युग में वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए आज की युवा पीढ़ी को संस्कृत के साथ अंग्रेजी व अन्य दूसरी भाषाओं का भी ज्ञान होना बेहद जरूरी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मूल आधार शिक्षा को संकुचित दायरे से निकाल कर आधुनिक विचारों से जोड़ना है। हमें अपने ज्ञान की वृद्धि के लिए नई-नई भाषाएँ सीखनी चाहिए ताकि दूसरों की

बात हम अच्छी तरह व आसानी से समझ सकें।

देवभाषा संस्कृत केवल एक भाषा नहीं है हमारी संस्कृति इतिहास धर्म और परम्परा की प्रतीक भी है। संस्कृत की गरिमा गौरव को आज समूचे विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिल रही है। अभी हाल ही में जारी एक रिपोर्ट के अनुसार बच्चों के व्यक्तित्त्व के विकास के लिए जहाँ एक ओर मातृ भाषा जरूरी हैं वहीं देवभाषा संस्कृत भी जरूरी है। आज भी जन्म से लेकर मृत्यु तक के सोलह संस्कार संस्कृत में ही सम्पन्न कराए जाते हैं। संस्कृत सूक्तियां, श्लोक बच्चों को संस्कारवान बनाते हैं । पंचतंत्र, हितोपदेश की कथाएं बच्चों को आज भी प्रेरित करती है। संस्कृत भाषा जन-जन तक पहुँचे, इसी को मद्देनजर रखते हुए मध्य प्रदेश शासन द्वारा भोपाल में संस्कृत बालिका आवासीय विद्यालय की शुरूआत की गई है।

एक सुखद प्रयास संस्कृत भाषा को जन-जन तक पहुँचाने का इन दिनों देखने में आ रहा है। धर्म व संस्कृति के प्राचीन केन्द्र वाराणसी के लाल बहादुर शास्त्री एयरपोर्ट पर हिन्दी व अंग्रेजी के साथ संस्कृत भाषा में भी अनाउंसमेन्ट लोगों को आकर्षित कर रहा है। ये विश्व का पहला एयरपोर्ट है जो यात्रियों को संस्कृत भाषा में भी जानकारी देता है। इस सराहनीय पहल से निश्चित ही देव भाषा संस्कृत की पूरी दुनिया में नई पहचान बनेगी ।

हमारे पूर्वज ऋषि मुनियों ने अपने तप, मनन व अध्ययन से जिन वैदिक ऋचाओं के दर्शन किए थे वो संस्कृत भाषा में ही थीं । इसीलिए श्रावण पूर्णिमा को ही देश में संस्कृत दिवस मनाया जाता है। हमें प्रयास करना होगा कि संस्कृत भाषा हमारे देश में भी संस्कृत श्लोकों के बन्धन से मुक्त होते हुए, पण्डितों की भाषा कहलाने की परिधि से मुक्त होकर एक बार पुनः जन-जन की भाषा बन सके । इस दिशा में सभी को संस्कृत के प्रति सम्मान व रुचि जागृत करनी होगी ताकि युवा पीढ़ी इसमें अपना भविष्य भी देख सके। आवश्यकता है कि हम अपने पूर्वजों की भाषा संस्कृत के प्रति सजग बने क्योंकि संस्कृत एक भाषा से अधिक हमारी संस्कृति की संवाहक व प्रतीक है।

टी -2 सिमरन अपार्टमेंट -2
त्रिलंगा, भोपाल (मध्य प्रदेश)
पिन -462039
मोबाइल -9407124018

शिक्षा प्रणाली के आधुनिकीकरण के जनक : स्व.राजीव गाँधी

भगवान सिंह मीना

सद्भावना का अर्थ-किसी के हित, मंगल या सद्भाव की भावना या उसे प्रकट करने की स्थिति, हित की भावना या छल-कपट आदि से रहित विचारों से है। इस साल 20 अगस्त 2022 को हम भूतपूर्व प्रधानमंत्री राजीव गाँधी की 78वीं जयंती मनाने जा रहे हैं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने उनकी मृत्यु के एक साल बाद 1992 में राजीव गाँधी सद्भावना पुरस्कार की स्थापना की। प्रतिवर्ष यह दिन स्वर्गीय राजीव गाँधी की याद में मनाया जाता है जो 40 साल की उम्र में देश के प्रधानमंत्री बने 1984-89 तक सेवा की। भारत के लिए उनके विजन को श्रद्धांजलि देने के बदले इस अवसर पर समाज की बेहतरी के लिए योगदान दिया जाता है। राजीव गाँधी शिक्षा प्रणाली के आधुनिकीकरण के लिए वह 1986 में एक राष्ट्रीय शिक्षा नीति लेकर आए और उन्होंने जवाहर नवोदय विद्यालय प्रणाली की स्थापना की, जहाँ उन्होंने कक्षा 6 से 12 तक के ग्रामीण वर्गों में मुफ्त आवासीय शिक्षा प्रदान की। वर्तमान समय देश में 661 नवोदय विद्यालयों में 1.80 लाख से अधिक छात्र पढ़ाई कर रहे हैं। जवाहर नवोदय विद्यालय 27 राज्यों व 8 केंद्र शासित प्रदेशों में चल रहे हैं। गांवों के बच्चों को भी उत्कृष्ट शिक्षा मिले, इस सोच के साथ राजीव गाँधी ने जवाहर नवोदय विद्यालयों की नींव रखी थी। प्रवेश परीक्षा में सफल मेधावी बच्चों को इन विद्यालयों में प्रवेश मिलता है। बच्चों को कक्षा 6 से 12 तक की मुफ्त शिक्षा और हॉस्टल में रहने की सुविधा दी जाती है। राजीव गाँधी ने शिक्षा क्षेत्र में भी क्रांतिकारी उपाय किए। उनकी सरकार ने 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE) की घोषणा की। इसके तहत पूरे देश में उच्च शिक्षा व्यवस्था का आधुनिकीकरण और विस्तार हुआ। उनका हमेशा एक विकसित राष्ट्र का सपना था जिसके लिए उन्होंने 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, लाइसेंस राज को कम करने और पंचायती राज को

शामिल करने सहित कई कार्य किए। वही थे जिनका देश के विकास में योगदान वर्तमान में हमें लाभान्वित कर रहा है। उनके सपनों को याद करने के लिए, देश को विकास की ओर ले जाने के उनके सामाजिक और आर्थिक कार्यों के लिए सद्भावना दिवस अस्तित्व में आया। राजीव गाँधी आधुनिक भारत के वास्तुकार थे, जिन्होंने भारत को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में काम किया। उनकी दूरदर्शिता का लाभ देश आज भी उठा रहा है। उन की ही दूरदर्शिता ने भारत को मजबूत, आधुनिक राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा किया है। राजीव गाँधी के नेतृत्व में भारत ने विकास के आयाम को छुआ था। उन्होंने देश के हर वर्ग के उत्थान की तरफ ध्यान देकर उन्हें मजबूत करने का काम किया। राजीव गाँधी ने शांति स्थापना के जरिए देश में विकास का मार्ग प्रशस्त किया। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी देश में डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के साथ-साथ तकनीकी शिक्षा को मज़बूती प्रदान करने के लिए महत्त्वपूर्ण योजनाओं का सृजन किया। स्किल डेवलपमेंट पर आधारित शिक्षा को कंप्यूटरीकृत होने से बल मिला । आज शहरों के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों के लोग भी कौशल विकास पर आधारित शिक्षा व्यवस्था में अग्रणीय होकर भाग लेने में सक्षम हुए हैं। शिक्षा में सर्वांगीणता लाने के लिए उनका योगदान अविश्वसनीय व अविस्मरणीय है।

श्रीनिवास ने कहा कि ''हम में है राजीव'' अर्थात भारत रत्न राजीव गांधी आज भी हम सब के साथ हैं। उन्हें डिजिटल इंडिया का आर्किटेक्ट और सूचना तकनीक व दूरसंचार क्रांति का जनक कहा जाता है। उनकी पहल पर भारतीय दूरसंचार नेटवर्क की स्थापना हुई। शहरों से लेकर गाँवों तक दूरसंचार का जाल बिछना शुरू हुआ, जिससे गाँव की जनता भी संचार के मामले में देश-दुनिया से जुड़ सकी। युवा प्रधानमंत्री राजीव गाँधी का मानना था कि विज्ञान और तकनीक की मदद के बिना उद्योगों का विकास नहीं हो सकता। इस क्रम में उन्होंने देश में कंप्यूटर क्रांति लाने की दिशा में काम किया।

'दूररसंचार क्रांति- 'राजीव गाँधी की पहल पर अगस्त 1984 में भारतीय दूरसंचार नेटवर्क की स्थापना के लिए सेंटर फॉर डिवेलपमेंट ऑफ टेलीमैटिक्स (C&DOT) की स्थापना हुई। इस पहल से शहरों से लेकर गाँवों तक दूरसंचार का जाल बिछना शुरू हुआ। जगह-जगह पीसीओ खुलने लगे। जिससे गाँव की जनता भी संचार के मामले में देश-दुनिया से जुड़ सकी। शिक्षा का विस्तार हुआ जिससे गांव के युवा भी विश्व से आसानी से जुड़ सके। फिर 1986 में राजीव गाँधी की पहल से ही एमटीएनएल की स्थापना हुई, जिससे दूरसंचार क्षेत्र में और प्रगति हुई।

'कंप्यूटर क्रांति- 'देश में पहले कंप्यूटर आम जन की पहुँच से दूर थे। मगर राजीव गाँधी ने अपने वैज्ञानिक सलाहकार सैम पित्रोदा के साथ मिलकर देश में कंप्यूटर क्रांति लाने की दिशा में काम किया। राजीव गाँधी का मानना था कि विज्ञान और तकनीक की मदद के बिना उद्योगों का विकास नहीं हो सकता। उन्होंने कंप्यूटर को आम जन की पहुँच तक आसान बनाने के लिए कंप्यूटर उपकरणों पर आयात शुल्क घटने की पहल की। भारतीय रेलवे में टिकट जारी होने की कंप्यूटरीकृत व्यवस्था भी इन्हीं पहलों की देन रही।

पंचायतों को किया सशक्त - पंचायतीराज से जुड़ी संस्थाएं मजबूती से विकास कार्य कर सकें, इस सोच के साथ राजीव गाँधी ने देश में पंचायतीराज व्यवस्था को सशक्त किया। राजीव गाँधी का मानना था कि जब तक पंचायती राज व्यवस्था सबल नहीं होगी, तब तक निचले स्तर तक लोकतंत्र नहीं पहुँच सकता। उन्होंने अपने कार्यकाल में पंचायतीराज व्यवस्था का पूरा प्रस्ताव तैयार कराया। राजीव गाँधी ने पंचायती राज को तब साकार किया गया, जब 1992 में 73 वें और 74 वें संविधान संशोधन के जरिए पंचायतीराज व्यवस्था का उदय हुआ। सरकार की ओर से तैयार 64 वें संविधान संशोधन विधेयक के आधार पर नरसिम्हा राव सरकार ने 73 वां संविधान संशोधन विधेयक पारित कराया। 24 अप्रैल 1993 से पूरे देश में पंचायती राज व्यवस्था लागू हुई। जिससे सभी राज्यों में पंचायतीराज व्यवस्था का मकसद सत्ता का विकेंद्रीकरण सफल रहा। आज भारत में प्रारम्भिक शिक्षा को पंचायती राज विभाग से भी जोड़ा जा चुका है। शिक्षा में बेहतरी और नवाचारों पर आधारित बुनियादी दक्षताओं के द्वारा सीखने को आसान बनाने में दूरसंचार क्रांति लाकर शिक्षा में अलख जगाने का कार्य किया। आज शिक्षा में जिस डिजिटल शिक्षा की चर्चा है,वह वाकई उन्हीं की वजह से संभव हुई है।

व्याख्याता
रा.बा.उ.मा.वि. धौलपुर (राज.)
मो.- 7891800123

आजादी का अमृत महोत्सव एवं श्रीअरविन्द सार्धशती (1872-2022)

• सूर्य प्रताप सिंह राजावत,

15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। 15 अगस्त 2022 को 75 वर्ष पूरे होने पर भारत सरकार द्वारा इस पर्व को उत्सव के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है और इस उत्सव का नाम रखा है 'आजादी का अमृत महोत्सव'। इस विशेष अवसर पर कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। यह अवसर भारत के सभी नागरिकों के लिये विशेष महत्ता रखता है। इस अवसर पर हर भारतीय को यह विचार करना चाहिए कि भारत को आजाद कराने के लिये लाखों-हजारों ने संघर्ष कर भारत को विदेशी हुकुमत से आजाद कराया। जिसको कि हम राजनैतिक स्वतंत्रता के नाम से जानते है। परन्तु राजनैतिक स्वतंत्रता का अर्थ तब सार्थक होता है जब भारत में सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक-एक भारतीय स्वयं को सशक्त समझे साथ ही राष्ट्र निर्माण में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक भेदभाव किसी भी प्रकार से रूकावट एवं बाधा नहीं डाले।

इस अवसर पर एक क्रांतिकारी विशेष रूप से याद आते हैं। क्योंकि जिस व्यक्ति को ब्रिटिश सरकार सबसे खतरनाक व्यक्ति समझती थी उनका नाम अरविन्द घोष था और उनका जन्म दिवस 15 अगस्त 1872 को था। श्रीअरविन्द की 150वीं जयंती का स्मरणोत्सव यथोचित रूप से मनाने के लिये माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय समिति का गठन किया गया है।

श्रीअरविन्द बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न, न केवल वे एक महान योगी, मन्त्रद्रष्टा, ऋषि, दार्शनिक, कवि, लेखक थे बल्कि एक महान देशभक्त, स्वतन्त्रता सेनानी और क्रान्तिकारी भी थे :-

1.उत्तरयोगी श्रीअरविन्द (Sri Aurobindo also known as Uttaryogi) यह नाम श्रीअरविन्द को तमिल के प्रसिद्ध योगी की भविष्यवाणी के आधार पर दिया गया है। दक्षिण के प्रसिद्ध योगी नगाईजप्ता ने यह भविष्यवाणी की थी कि तीस वर्ष बाद उत्तर से एक योगी दक्षिण में आयेगा और यहां दक्षिण में पूर्ण योग का अभ्यास करेगा। उन्होंने उस योगी की पहचान कर सकने के लिये लक्षण के रूप में तीन वचन

(पागलपन) कहे। वे तीनों श्रीअरविन्द के उनकी पत्नि के नाम पत्रों में पाये जाते हैं। वे तीन पागलपन थे 1. उनकी समस्त योग्यता ईश्वर की देन है और यह योग्यता केवल राष्ट्र के लिये है। 2. ईश्वर की खोज 3. भारत को स्वतंत्र कराने का लक्ष्य।

2.क्रांतिकारी श्रीअरविन्द (Revolutionary Ideas) श्रीअरविन्द मानते थे कि भारत के पुर्ननिर्माण यानि मुख्यतः आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक या जो कुछ और विकास की दिशाएं हो सकती हैं; बिना पूर्ण स्वराज्य के सम्भव नहीं है। श्रीअरविन्द के अनुसार उस समय भारत को न तो धनी और औद्योगिक राष्ट्र बनने की समस्या थी और न ही बौद्धिक या पूर्णतय सब प्रकार से सभी चीजों को जानने वाला राष्ट्र बनने की। बल्कि भारत को राष्ट्र के रूप में मौत के मुंह में जाने से बचाने की थी। चुनाव राष्ट्र के लिये जीवन और मृत्यु के बीच का था। इसलिए पूर्ण स्वतंत्रता की मांग श्रीअरविन्द ने रखी थी। श्रीअरविन्द भारत देश को जड़ पदार्थ-मात्र खेत, मैदान, जंगल, पर्वत, नदियां नहीं समझते थे। देश को भारत माता के रूप में देखते थे। श्रीअरविन्द को अंग्रेजी हुकुमत भारत का सबसे खतरनाक व्यक्ति मानती थी। श्रीअरविन्द की भारत का सबसे खतरनाक व्यक्ति मानती थी। श्रीअरविन्द की 'डॉक्ट्रीन आफ पेसिव रसिस्टेन्स' पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये एक महत्वपूर्ण नीति को प्रतिपादित करती है। जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी थी। श्रीअरविन्द की सशस्त्र क्रांतिकारी की योजना 'भवानी मंदिर' में मिलती है। श्रीअरविन्द को वंदेमातरम् केस में गिरफ्तारी के अवसर पर रविन्द्रनाथ टैगोर ने एक कविता लिखी थी और अलीपुर बम काण्ड मुकदमे की पैरवी करते हुए सी.आर. दास ने कहा ''इस विवाद के शान्त हो जाने के बाद, इस संसार से इनके चले जाने के बहुत बाद, उन्हें देश भक्ति के कवि, राष्ट्रवाद के पैगम्बर तथा मानवता के प्रेमी के रूप में आदर किया जायेगा और उनकी वाणी न केवल भारत में बल्कि सुदूर सागरों तथा देशों के पार भी ध्वनित और प्रतिध्वनित होती रहेगी। इसलिए मैं कहता हूँ कि यह व्यक्ति न केवल इस न्यायालय के कानून के सामने बल्कि इतिहास के उच्च न्यायालय के सामने खड़ा है।''

3.श्रीअरविन्द का आध्यात्मिक राष्ट्रवाद (Spiritual Nationalism)

श्रीअरविन्द देश को सामूहिक आत्मा के को भावनात्मक प्रचण्डता आदि को मानव जाति को कल्याण, समृद्धि और प्रगति के लिए विकसित करने की आवश्यकता है। सार यह है कि धरती माता विभिन्न राष्ट्रों के रूप में स्वयं को उत्तरोत्तर अभिव्यक्त कर रही है। संयुक्त राष्ट्र के गठन को विश्व सरकार के रूप में उसी दिशा में बढ़ता कदम देखा जाना चाहिए।

4.श्रीअरविन्द की शिक्षानीति (Nation Education Policy) श्रीअरविन्द की राष्ट्रीय शिक्षण नीति समग्र व्यक्तित्व विकास, राष्ट्रीय चिंतन एवं वैश्विक विचार पर आधारित हैं। श्रीअरविन्द शिक्षानीति के सम्बन्ध में लिखते है कि राष्ट्रीय शिक्षा की मांग का जीता-जागता भाव यह नहीं चाहता कि हम भास्कराचार्य के गणित और ज्योतिष की ओर वापिस जाएं या नालंदा की शिक्षा पद्धति अपनाएं।यह उसी तरह है जैसे स्वदेशी की भावना रेल या मोटर परिवहन की जगह रथ या बैलगाड़ी की ओर वापिस नही ले जाती।यह चुनाव है बाहर से लायी गयी सभ्यता और भारतीय मन और स्वभाव की अधिक महान संभावनाओं के बीच वर्तमान और अतीत के बीच नहीं, वर्तमान और भविष्य के बीच पांचवी शताब्दी की ओर वापिस जाने की नहीं, आने वाली शताब्दियों के उपक्रम की मांग है।

5.श्रीअरविन्द, स्वामी विवेकानन्द और मानव से महामानव की यात्रा (Evolutionary Philosophy of Sri Aurobindo from Man to superman, mind to supermind) उत्तरपाड़ा जेल में आध्यात्मिकता अनुभूतियां और स्वामी विवेकानन्द के साथ संवाद के बाद श्रीअरविन्द पाण्डिचेरी चले गये। जहां रूपांतरण के लिये पूर्ण योग का मार्ग संसार को दिखाया। पूर्ण योग का उद्देश्य हैं दिव्यजीवन, दिव्यशरीर और दिव्यसंसार। विकास क्रम में श्रीअरविन्द मनुष्य को अंतिम कृति नहीं मानते। श्रीअरविन्द लिखते हैं कि विकासक्रम समाप्त नहीं हुआ है, तर्क अंतिम शब्द नहीं हैं और तर्क करने वाला पशु ईश्वर की सर्वोच्च कृति है। पशु से मानव प्रकट हुआ है। उसी प्रकार मानव से महामानव का आविर्भाव होगा। यह दृष्टि श्रीअरविन्द को समझने के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। चूंकि श्रीअरविन्द मनुष्य को एक मध्यवर्ती प्राणी समझते है। जबकि पश्चिम के विचारक मनुष्य को एक विवेकशील प्राणी अथवा संतोषी प्राणी समझते हैं।

6.मानव एकता श्रीअरविन्द की दृष्टि में (Human Unity)- मानव एकता मनुष्य जाति की आदिकाल से अभिप्सा रही हैं। आधुनिक काल में फ्रांसिसी क्रांति के नीति शब्दों-लिबर्टी, इक्वालिटी और फ्रेटरनिटी में मानव एकता की अभिव्यक्ति प्रकट होती हैं। श्रीअरविन्द कहते है कि संसार में लिबर्टी, इक्वालिटी और फ्रेटरनिटी स्थापित नहीं हो पाई। लिबर्टी के नाम पर केपीटलिज्म, इक्वालिटी के नाम पर सोशलिज्म और कम्यूनिज्म का प्रयोग मानव जाति में देखा है। श्रीअरविन्द कहते है कि फ्रेटरनिटी अर्थात् बन्धुत्व विश्व में कहीं भी अभी तक स्थापित नहीं हो पाया है। उसका कारण है कि फ्रेटरनिटी के लिये आवश्यकता है अध्यात्मिक क्रांति। अध्यात्मिक क्रांति के लिये आवश्यक है चेतना का रूपांतरण। अध्यात्मिक रूपांतरण को मूर्त रूप देने के लिये एक प्रयोग है ओरोविल। ओरोविल के विचार को संयुक्त राष्ट्र के सभा में चार बार अनुमोदन किया है।

7.श्रीअरविन्द का 15 अगस्त 1947 का महत्वपूर्ण संदेश (Five dreams of Sri Aurobindo in the message to All India Radio on 15-08-1947) -श्रीअरविन्द का 15 अगस्त का भाषण आज भी प्रासंगिक है जिसमें श्रीअरविन्द पांच संकल्पों के बारे में बताते है 1. भारत विभाजन का विरोध 2. एशिया का उत्थान 3. संयुक्त राष्ट्र की भूमिका 4. भारत का विश्व को अध्यात्मिक देन 5. विकास क्रम की प्रक्रिया में योग की महत्वपूर्ण भूमिका जिसमें भारत की अग्रणीय भूमिका अपेक्षित होगी।

8.श्रीअरविन्द और संविधान सभा (Constituent Assembly remembering Sri Aurobindo)- श्रीअरविन्द के दर्शन, चिंतन एवं साहित्य से प्रेरणा लेकर संविधान सभा में विश्व में भारत की भूमिका पर चर्चा की गई थी। संविधान सभा की कार्यवाही बैठक 12 खण्डों में उपलब्ध है। जिनका अध्ययन करने पर खण्ड 7, 8, 9 और 11 में श्रीअरविन्द का उल्लेख बार-बार मिलता है। 5 नवम्बर 1948 को भारत की राजनीति विषय पर श्रीअरविन्द को याद किया जाता है। इसी प्रकार विश्वयुद्ध प्रथम एवं द्वितीय के साक्षी रहे संविधान सभा के सदस्यों ने 6 दिसम्बर 1948 को भारत की भूमिका तय करने के लिये श्रीअरविन्द को स्मरण किया एवं श्रीअरविन्द द्वारा वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिये चेतना के रूपांतरण को ही एक मात्र उपाय एवं समाधान पर विचार किया। इसी प्रकार 16 मई 1949 को श्रीअरविन्द को स्मरण किया जाता है।31 अगस्त 1949 को श्रीअरविन्द का स्मरण किया जाता है कि पश्चिम भारत की ओर वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिये देख रहा है और हमें भारत को जिसके पास आध्यात्मिक ज्ञान है, उस ज्ञान को पूरे संसार में हमें मार्गदर्शन देना चाहिए। 25 नवम्बर 1949 को श्रीअरविन्द के क्रांतिकारी पक्ष को संविधान सभा द्वारा याद किया जाता है।

9.श्रीअरविन्द की भारत के युवा को संदेश (Expectation from Youth)- श्रीअरविन्द की स्वतंत्र भारत से अपेक्षा है कि भारत आध्यात्मिक ज्ञान को पूर्ण प्राप्त करे, वैश्विक समस्याओं को चिनिहत करे और उसके बाद आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर समस्याओं का समाधान विश्व के सामने प्रस्तुत करे। श्रीअरविन्द भारत को विश्व का चिकित्सक मानते हैं। श्रीअरविन्द भारत को विश्वगुरू के रूप में स्वीकार करते है। श्रीअरविन्द भारत की सृजनात्मकता और बौद्धिकता का आधार आध्यात्मिकता को बताते हैं। परन्तु साथ ही गरीबी को आध्यात्मिकता की शर्त या आवश्यकता मानने वाले सन्यासी नहीं थे। वे गरीबी को आध्यात्मिकता का विरोधी तत्व समझते थे। वे मानते थे कि गरीबी का होना अन्यायपूर्ण समाज गलत ढंग से संगठित है।

10.श्रीअरविन्द का साहित्य (Writings of Sri Aurobindo)-दिव्य जीवन, सावित्री, भारतीय संस्कृति के आधार, गीता प्रबंध, योग समन्वय, श्रीअरविन्द के पत्र, मानव चक्र, वेद रहस्य, कर्मयोगी, वंदेमातरम्, आर्य, हमारा योग और उसके उद्देश्य आदि।

सचिव,
श्रीअरविन्द सोसायटी,
राजस्थान
मो. 9462294899

पर्यावरण शिक्षा

बच्चों में मूल्य शिक्षा का बीजारोपण : शिक्षक का दायित्त्व

● जय सिंह सिकरवार

वर्तमान समय में टीवी, अखबार आदि में दिन-प्रतिदिन यह सुनने को मिलता रहता है कि वातावरण में गर्मी बढ़ रही है, धुल-धुएं के कारण सांस लेने में दिक्कत आ रही है, कहीं सार्वजनिक सम्पत्ति को जला दिया गया है। ऐसी अनेक घटनाएँ सुनने को मिलती रहती है, जो कि हमें दुखी कर यह सोचने को मजबूर कर देती हैं कि समाज के मूल्यों का स्तर कहाँ पहुँच गया है? सवाल यह उठता है कि मूल्य क्या है ? किन मूल्यों को सर्व समाज द्वारा स्वीकृत किया जाता है या फिर किया जाएगा। इसका जबाव यह हो सकता है कि ऐसे मूल्य जिनसे व्यक्ति स्वस्थ रहकर, सदैव ऊर्जावान रहते हुए सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हमारे समाज के मानवीय मूल्यों एवं प्रकृति की रक्षा कर सके और हमारे देश के संवैधानिक मूल्यों को समाहित करते हुए वह स्वयं का और अपने परिवार को कल्याण के साथ-साथ अपने समाज, देश और विश्व के लिए उपयोगी नागरिक बन सके। ऐसे मूल्य सर्वमान्य ही होंगे। मूल्यों को कुछ शब्दों तक सीमित नहीं किया जा सकता है। मूल्य केवल मानव और प्राणी जगत की रक्षा के लिए नहीं होते । वे तो संसार में मौजूद समस्त जड़-चेतन वस्तुओं के लिए हैं, जो कि पृथ्वी पर मौजूद समस्त प्राणी जगत के वर्तमान और भविष्य को प्रभावित करती है । अर्थात हम कह सकते हैं कि मूल्यों में वे समस्त मानवीय-गतिविधियाँ शामिल होती हैं, जो कि इस चराचर जगत के वर्तमान और भावी अस्तित्त्व को प्रभावित करती है।

वर्तमान परिवेश में जब व्यक्ति अपने फायदे (लाभ) में 'कायदा (कर्त्तव्य)' भूल चुका है ऐसे में पर्यावरण के अति-दोहन के परिणामस्वरूप जलवायु-संकट आदि अनेक तरह के संकट संसार में उभर रहे हैं जो कि मानव के साथ-साथ समस्त प्राणी जगत के लिए खतरा बनते जा रहे हैं ।

ऐसे समय में समाज के साथ हम शिक्षकों का विशेष दायित्त्व बन जाता है कि

हम किस प्रकार से अपने बच्चों को उन मूल्यों की शिक्षा दे सकें कि जिससे वे अपने व्यवहार को अपनी आदत के रूप में विकसित कर जीवन को बेहतर बना सके। कहा जाता है कि बचपन से ही बच्चों में जिस तरह के संस्कार का बीजारोपण घर और विद्यालय द्वारा कर दिया जाता है वे जीवन भर उसके लिए आदत के रूप में उसका व्यवहार बन जाते हैं । बस हम शिक्षकों को यही करना है कि हमें बच्चों में उन आदतों/मूल्यों को बचपन से ही विकसित करना है ।

दरअसल बच्चों को पर्यावरण से विशेष प्रेम होता है वे पर्यावरण की गोद में जाकर आनंदित हो उठते हैं । बच्चों का पार्क में जाना, चिड़ियाघर में जाना, खुले मैदान में खेलना, बारिश की बूंदों में भीगना आदि प्रकृति के बीच की गतिविधियाँ उसके लिए बहुत आनंददायक और उत्साहवर्द्धक होती हैं।

इसके बाद प्रश्न यह उठता है कि वे आदतें/मूल्य क्या-क्या हो सकते हैं ? इसके लिए मैंने कुछ गतिविधियों, मूल्यों को श्रेणीबद्ध कर सूची बनाने की कोशिश की है ये इस प्रकार हैं-

<u>व्यक्तिगत जागरूकता -</u>

1. व्यक्तिगत स्वच्छता - सबसे पहले हम बच्चों में बचपन से ही स्वच्छता की आदतें विकसित करें ।

2. सामाजिक नैतिकता- महर्षि पतंजलि के योगदर्शन में वर्णित यम- के पाँच नियम (सत्य, अहिंसा, असत्य, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य) व्यक्ति के स्वयं के कल्याण के साथ-साथ सामाजिक कल्याण के लिए भी हैं हम बच्चों को यथासंभव इनको सीखने की आदत डालें । उदाहरण के तौर इनमें से जैसे अपरिग्रह का सिद्धांत यह सिखाता है कि व्यक्ति अपनी आवश्यकता के हिसाब से वस्तुओं का उपयोग, चयन और संग्रह करे इससे व्यक्ति प्राकृतिक संसाधनों को भावी पीढ़ी के लिए और वस्तुओं की बाजार में पूर्ति बढ़ने के कारण गरीब व्यक्तियों को सुलभता से उपलब्ध हो सकेगी साथ ही व्यक्ति की स्वयं की बचत भी होगी ।

कारण गरीब व्यक्तियों को सुलभता से उपलब्ध हो सकेगी साथ ही व्यक्ति की स्वयं की बचत भी होगी ।

<u>पर्यावरणीय जागरूकता -</u>

1. जल सरंक्षण- हम बच्चों को किसी न किसी माध्यम और उदाहरण से जल के महत्त्व को बताएं, जल की बचत कैसे की जा सकती है उन सभी तरीकों को बताएं । जल संरक्ष्ण की कुछ महत्त्वपूर्ण बातें - नहाते समय और ब्रश करते समय पानी को बंद कर दें, यदि आप सबमर्सिबल पम्प से स्नान कर रहे हैं तब बाल्टी में पानी भरकर स्नान करें।

2. सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा- हम बच्चों में सार्वजनिक संपत्ति का अर्थ, महत्त्व और उसकी उपयोगिता बताते हुए उसकी सुरक्षा हमें कैसे करनी है, कैसे उसे आदत के रूप में विकसित करना है यह सिखाना है । इसे हम बच्चों में

विद्यालय की संपत्ति के संरक्षण माध्यम से ही आदत के रूप में विकसित कर सकते हैं ।

3. कागज की बर्बादी न करें - कागज का उत्पादन कैसे होता है ? इसके उत्पादन में वृक्ष और जल के उपयोग बताते हुए उसके सदुपयोग और इसके रिसाइकिल के बारे में बता सकते हैं ।

4. बिजली का सदुपयोग- ऊर्जा बचत का कार्य हमारे राष्ट्रीय उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होता है अतः हम बच्चों को घर में पंखा, टीवी आदि लाइट के उपकरणों को इस्तेमाल के बाद बंद करने की आदत विकसित करें और उनके घरवालों को वे समझा सकें, इसके लिए भी प्रेरित करें ।

5. वायु प्रदूषण - चूँकि हमारा देश विशाल जनसंख्या वाला देश है इसलिए विभिन्न कारणों से वायु प्रदूषण होता ही रहता है, वायु प्रदूषण से बचने के लिए कुछ आदतें हैं जिनको हम बच्चों को बता सकते हैं -

1. अनावश्यक पदार्थों में आग लगाना- कुछ लोग अनावश्यक रूप से जरा-सी ठण्ड से बचने के लिए टायर आदि में आग लगा देते हैं जो कि भयानक विषैली गैस फैलाते हैं अतः बच्चों में हम ऐसी जारूकता पैदा करें ताकि वे खुद तो ऐसा न करें साथ ही अन्य लोगों को ऐसा करने से रोकने के लिए प्रेरित कर सकें/ समझा सकें।

2. किसी पर्व, उत्सव त्योहार आदि के अवसर पर पटाखे आदि को नहीं जलाने की आदतों का बीजारोपण कर सकें ।

3. पैदल चलें , साइकिल के उपयोग की आदत डालें, निजी वाहन की बजाय सार्वजनिक वाहन में जाने की आदत बच्चों में विकसित करें ।

4. किचन गार्डन -सरकार द्वारा चलाये जा रहे 'किचन-गार्डन' के अभिनव प्रयोग को हमें समझना होगा । बच्चों के लिए बीज बोना और उसे विकसित होते देखने की प्रक्रिया बहुत जादुई होती है उनको पौधों की देखभाल करना अदि से उनमें प्रकृति-प्रेम एवं 'जिम्मेदारी की भावना' जैसे मूल्यों का विकास होता है ।

5.मौसमी फलों का उपयोग - बाजार में चल रहे जंक फूड की बजाय बजाय बच्चों को मौसमी फलों के लाभ बताएं ।

6. डिब्बा बंद पदार्थ और डिस्पोजल पदार्थों का न्यूनतम प्रयोग करें ।

7. सामुदायिक स्वच्छता से संबंधित- समाज में सार्वजनिक स्थानों पर, पिकनिक स्थलों पर आदि जहाँ तहाँ नहीं बिखेरे ।

8. विद्यालय परिसर में होने वाली बैठकों में बच्चों के सम्मुख धूम्रपान ना करें ।

9. रद्दी कागज, पोलीथिन, घर के प्लास्टिक, लोहे,कांच आदि के कबाड़ को कचरे में फेंकने के बजाय उसको इकट्ठा कर बेचने की आदत डालें। जिससे बच्चों को इनके रिसाइकिल की प्रक्रिया से पर्यावरण-संरक्षण के साथ-साथ उनको होने वाले आर्थिक लाभ को समझाएं ।

12. बाजार से किराना का सामान, कपड़ा बाजार और विशेषकर सब्जी-बाजार में जाते समय घर से बैग (थैला) लेकर जाने की आदत डालें। स्थानीयता का उदाहरण दें- कि कैसे बुजुर्ग थैला लेकर बाजार जाते थे और थैला न होने पर अपनी साफी (गमछा) में सामान रखकर लाते थे ।

<u>सामाजिक जागरूकता -</u>

1.वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार बच्चों की समझ को विकसित करने के लिए हमें उनको किसी 'विषयवस्तु को समझाने' की बजाय उसकी 'समझ विकसित' करना है इसके लिए हमें अपने शिक्षण में बच्चों में क्या, क्यों और कैसे के प्रश्नों को शामिल करना होगा 'इसे कहानी शिक्षक के साथ-साथ विज्ञान, भाषा, गणित-शिक्षण सभी में शामिल करना होगा।

लाभ- इसका लाभ यह होगा कि बच्चों की प्रत्येक विषय पर समझ विकसित होगी और उनमें तार्किक क्षमता का विकास होगा इससे बच्चे आजकल समाज में चमत्कार के नाम पर हो रही ठगी से दूर होंगें क्योंकि वे उन सभी चमत्कारों में वैज्ञानिक कारण ढूंढ़ेंगे। धर्म से व्यक्ति में नैतिक मूल्यों का विकास होता है। अगर उस व्यक्ति में खुद की तार्किक समझ न हो तो उसे चमत्कार के नाम पर अनैतिक मूल्य भी धर्म के नाम पर ही आ जाते हैं ।अतः हम बच्चों में तार्किक सोच एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करें ।

2. सामाजिक कुरीतियों के संबंध में- जैसे मृत्युभोज में भोजन नहीं करना,सामूहिक भोज में खाना उतना ही लेना जितना खा सकें आदि ।

अध्यापक
राउमावि-दयेरी, धौलपुर (राज.)
मो.-9414712742

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां
मलयजशीतलाम्
शस्यशामलां मातरम् ।
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीं
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीं
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीं
सुखदां वरदां मातरम् ।। १ ।।

वन्दे मातरम् ।
कोटि-कोटि-कण्ठ-कल-
कल-निनाद-कराले
कोटि-कोटि-भुजैर्धृत-
खरकरवाले,
अबला केन मा एत बले ।
बहुबलधारिणीं
नमामि तारिणीं
रिपुदलवारिणीं
मातरम् ।। २ ।।
वन्दे मातरम् ।

भारत की आजादी की कहानी और नया भारत

डॉ. जयेश व्यास

18 सितंबर 1615 का दिन जब ब्रिटेन के किंग जेम्स का राजदूत थॉमस रो आगरा में जहांगीर के दरबार में याचक की तरह सूरत में फैक्ट्री लगाने की इजाजत की गुहार लगाई। जहांगीर ने इजाजत दे दी। यहीं से भारत की आजादी पर ग्रहण लगना शुरू हुआ। प्लासी के युद्ध के बाद सन् 23 जून 1757 में भारत में औपचारिक रूप से ब्रिटेन का राज स्थापित हो गया।

29 मार्च 1857 में मंगल पांडे द्वारा दिए गए नारे 'मारों फिरंगी' से स्वतंत्रता की लड़ाई शुरू हुई। 1770 के दशक में संन्यासियों का अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह शुरू किया। इसके 100 वर्ष बाद 1870 में बंकिम चंद्र चटोपाध्याय ने अपने उपन्यास 'आनंद मठ' में 'वंदे मातरम्' गीत लिखा जो 1882 में प्रकाशन के साथ देशभक्ति का जज्बा देशवासियों में हिलोरें खाने लगा।

'केसरी' नामक अखबार निकालने वाले कलम के धनी भारत के सपूत बाल गंगाधर तिलक के नारे 'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।' ने भारत के प्रत्येक व्यक्ति में अंग्रेजों के राज से मुक्ति की ज्वाला को और भड़का दिया। पं. मदन मोहन मालवीय ने 1918 में मुण्डकोपनिषद का वाक्य के दो शब्द ''सत्यमेव जयते'' को भारतीय जनमानस में प्रचारित किया जो आज राष्ट्र का ध्येय वाक्य है।

13 अप्रैल 1919 का जलियांवाला बाग कांड भुलाया नहीं जा सकता। संघर्ष त्याग और बलिदान की इस कहानी के अगले क्रान्तिकारी नायक लाला लाजपतराय ने 1928 में साइमन गो बैक के नारे के साथ साइमन कमीशन का जबरदस्त विरोध किया। जिससे क्षुब्ध अंग्रेजी शासकों ने उनके अनुनायियों पर लाठी चार्ज करवा दिया। यह लाठी चार्ज अंग्रेजी शासन के ताबूत में सबसे बड़ी कील साबित हुई।

इसी के विरोध में भगतसिंह राजगुरु और सुखदेव की त्रयी ने अंग्रेजी शासक जॉन स्कॉट पर हमला किया और सैन्य अफसर सांडर्स की हत्या कर दी। यहीं से ये तीनों देशभक्त पूरे राष्ट्र में अंग्रेजी हुक्मरानों पर त्रिशूल की भाँति वार करते हुए नौजवानों में स्वराज्य की अलख जगाने लगे।

1928 में गुजरात में बारदोली सत्याग्रह के द्वारा वल्लभ भाई पटेल ने 'ना-कर' के नारे से लगान को 30 प्रतिशत से 6 प्रतिशत करवाने में सफलता प्राप्त की। इसी सफलता के आधार पर महिलाओं ने इन्हें 'सरदार' की उपाधि प्रदान की।

1929 में भगतसिंह और बटुकेश्वरदत्त ने 'इंकलाब जिन्दाबाद' का नारा बुलंद किया। जिसका अर्थ है - क्रांति अमर रहे।

इस नारे को क्रांतिकारी शायर हसरत मोहानी ने अपनी लेखनी से प्रस्तुत किया था।12मार्च,1930 महात्मा गाँधी के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह की' दांडी यात्रा' ने अंग्रेजी शासन की नींद उड़ा दी। सुदूर दक्षिण भारत में देशभक्ति की मशाल को जलाए रखने में तिरूवनंतपुरम् के क्रांतिकारी रमन पिल्लई को भुलाया नहीं जा सकता।

आजाद हिन्द फौज की स्थापना के समय जर्मनी में रामन पिल्लई ने सुभाष चंद्र बोस का अभिवादन 'जय हिन्द' से किया। क्रान्तिकारी आबिद हसन सफरानी ने 'जय हिन्द ' का नारा दिया, जो आजादी का 'जय घोष' बना। गाँधी जी के नेतृत्व में 1942 में कांग्रेस के बॉम्बे अधिवेशन में 'करो या मरो' तथा 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' के नारों से अंग्रेजी शासन की नींव खोखली हो गई।

1944 में भारत के सुदूर पूर्व में बर्मा में नेताजी सुभाषचंद्र बोस के नारे ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा'' ने चन्द्रशेखर आजाद और रामप्रसाद बिस्मिल के क्रांतिकारी विचारों और कृत्यों के पंखों ने भारत की आजादी की उड़ान को नयी ताकत दी। सभी देशवासी अब आजादी के लिए कमर कस चुके थे।

शायर बिस्मिल अजीमाबादी के लिखे शेर को रामप्रसाद बिस्मिल ने हर भारतीय में आजादी की अलख़ जगा दी-

''खून से खेलेंगे होली,
गर वतन मुश्किल में है।

सरफरोशी की तमन्ना
अब हमारे दिल में हैं,
देखना है जोर कितना
बाजू-ए-कातिल में है।

आखिरकार 15 अगस्त 1947 को हमारे देश भारत को अंतिम वायसराय लार्ड माउंटबेटन ने पं. जवाहरलाल नेहरू के सुरक्षित हाथों में सौंप दिया। भारत विभिन्न गुलामियों से आजाद हुआ।

1947 से 2022 तक के 75 वर्षों में भारत प्रत्येक क्षेत्र में लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहा है। जो हमारी आजादी के मायने को सच साबित करता है।

इन कुछ विशेष वर्षो का विवरण निम्न प्रकार से संजोया जा सकता है-

1. 1966- हरित क्रांति

2.13.01.1970 - श्वेत क्रांति

3.18.05.1974 - विज्ञान क्षेत्र- पोकरण में पहला परमाणु बम परीक्षण

4.19.04.1975 - अंतरिक्ष विज्ञान क्षेत्र - पहला भारतीय उपग्रह आर्यभट्ट सफलतापूर्वक प्रक्षेपित

5.28.03.1989 - युवाओं का भारतीय राजनीति क्षेत्र से जुड़ाव - 18 वर्ष आयु में वोट अधिकार

6.1991 - आर्थिक क्षेत्र - वैश्विक अर्थव्यवस्था में देश की भागीदारी (आर्थिक उदारीकरण)

7.01.07.2017 - आर्थिक क्षेत्र - जीएसटी लागू

8.15.06.2005 - सूचना क्षेत्र - सूचना के अधिकार से व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रव्यापी सूचनाओं से देशवासी अवगत हो सकते हैं।

9. 23.08.2005 - गरीबी उन्मूलन क्षेत्र - मनरेगा अभियान की शुरूआत ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ीकरण

10.28.01.2009 - भारतीय नागरिक पहचान क्षेत्र - यूएआईडीआई द्वारा आधार कार्ड योजना का शुभारंभ

1104.08.2009 -.RTE -शिक्षा क्षेत्र - 6-14 वर्ष के सभी बच्चों को शिक्षा का अधिकार

12.24.09.2014- भारत का 'मंगलयान'

05.11.2013 को भारतीय रॉकेट पीएसलवी सी- 25 के द्वारा प्रक्षेपित किया गया जो 24. 09.2014 को सफलतापूर्वक मंगल ग्रह की कक्षा में भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा स्थापित किया गया।

13. 22.07.2019-चन्द्रयान - 2 मिशन भारत के अंतरिक्ष संस्था इसरो द्वारा काफी हद तक सफलता पूर्वक पूर्ण किया गया।

14. 16.01.2021 - चिकित्सा क्षेत्र - कोरोना महामारी पर नियंत्रण हेतु टीकाकरण अभियान प्रारंभ

भारत की आजादी की कहानी के बाद देशवासियों ने धर्मनिरपेक्षता को कायम रखते हुए जिस प्रकार से प्रत्येक क्षेत्र में तेजी से प्रगति की है, उससे स्पष्ट है कि भारत पुनः 'विश्व गुरु' के मार्ग पर अग्रसर हो रहा है।

मौलिक रूप से स्वतंत्रता का अर्थ स्वयं अपने नियंत्रण में रहते हुए आत्मानुशासन में रहना है। जिससे की व्यक्ति अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग रहे।

महान भौतिकी वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्सटीन के शब्दों में,' श्रेष्ठ एवं प्रेरणास्पद सकारात्मक कार्य उन्हीं व्यक्तियों द्वारा किए जा सके हैं, जो स्वतंत्रता के वातावरण में रह सके हैं। स्वतंत्रता का अर्थ यह कदापि नहीं हो सकता कि व्यक्ति जो चाहे सो करें।'

आज वैश्विक स्तर पर किसी भी क्षेत्र में अन्तिम निर्णय लेने से पहले भारत के पक्ष पर विचार किया जाता है। जिसका ताजा उदाहरण रूस-यूक्रेन युद्ध में विभिन्न देशों के नागरिकों को यूक्रेन से बाहर ले जाने वाले 'ऑपरेशन गंगा' के तहत भारतीय वाहनों एवं वायुयानों को पूर्ण सुरक्षा दी गई। बहुत लम्बे अंतराल के बाद संयुक्त राष्ट्रसभा की सुरक्षा परिषद में 10 सदस्यों की अस्थाई समिति में भारत को भारी बहुमत से एक सदस्य चुना गया।

भारत के डॉ. हर्षवर्द्धन को विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) के कार्यकारी बोर्ड के उप महानिदेशक पद पर आसीन होने का गौरव प्राप्त हुआ है।

'यह है - नया भारत'

डी- 471, मुरलीधर व्यास कॉलोनी
बीकानेर।
मो. 8890346096

आदेश परिपत्र-अगस्त,2022

1. माननीय मुख्यमंत्री की वर्ष 2021-22 की बजट घोषणा संख्या 44 की अनुपालना में राजकीय विशेष योग्यजन आवासीय विद्यालयों को आफिस आई डी जारी करते हुए वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु पदों का आवंटन
2. 'स्वाधीनता दिवस समारोह-2022' के अवसर पर योग्यता प्रमाण-पत्र प्रदान किए जाने बाबत।
3. हितकारी निधि योजनान्तर्गत एक मुश्त छात्रवृति प्राप्त करने हेतु आवेदन आमंत्रण की अन्तिम तिथि - 12.08.2022 ।
4. माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 की बजट घोषणा 55 के अनुसरण में आर्थिक कमजोर वर्ग ( ) के राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10 व 12 के विद्यार्थियों हेतु मुख्यमंत्री शिक्षा अलंकार पुरस्कार योजना की क्रियान्विति एवं प्रचार-प्रसार बाबत् ।
5. विमुक्त, घुमन्तू तथा अर्द्धघुमन्तू समुदाय के कक्षा 6 से 11 तक अध्ययनरत राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को नि:शुल्क साईकिल वितरण ।
6. माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 की बजट घोषणा संख्या 55 के अनुसरण में आर्थिक कमजोर वर्ग (EWS) की राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 6 से 8 तक की छात्राओं को नि:शुल्क साइकिल वितरण योजना की क्रियान्वत एवं प्रचार-प्रसार बाबत्
7. राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, डॉ0 राधाकृष्णन् शिक्षा संकुल, पंचम ब्लॉक, प्रथम पंचम, कमरा नं. 601,जवाहर लाल नेहरू मार्ग, ओ.टी.एस. के पास, जयपुर-302017 क्रमांक : रास्कूलशिप/ जय/ आदर्श-उत्कृष्ट विद्यालय/वार्षिकोत्सव/ 2022-23/ दिनांक : 8.7.22
8. आहरण वितरण अधिकार (03 च्वूमत) हेतु प्रस्ताव शाला दर्पण के माध्यम से ऑन लाईन प्रेषण करने बाबत ।

1. माननीय मुख्यमंत्री की वर्ष 2021-22 की बजट घोषणा संख्या 44 की अनुपालना में राजकीय विशेष योग्यजन आवासीय विद्यालयों को आफिस आई डी जारी करते हुए वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु पदों का आवंटन

• कार्यालय : निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक:शिविरा-माध्य/बजट/बी-4/25605/वो-1/22-23/108 दिनांक-16.06.2022 • प्रधानाध्यापक, राजकीय विशेष योग्यजन आवासीय विद्यालय • विषय- माननीय मुख्यमंत्री की वर्ष 2021-22 की बजट घोषणा संख्या 44 की अनुपालना में राजकीय विशेष योग्यजन आवासीय विद्यालयों को आफिस आई डी जारी करते हुए वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु पदों का आवंटन। • प्रसंग- राज्य सरकार की स्वीकृति क्रमांक प.11 (1) शिक्षा -1/अंध विद्यालय/2021 जयपुर दिनांक-07.03.2022

उपर्युक्त विषयान्तर्गत राज्य सरकार ने अपनी प्रासंगिक स्वीकृति द्वारा बजट घोषणा वर्ष 2021-22 के बिन्दु संख्या 44 की अनुपालना में 06 राजकीय विशेष योग्यजन आवासीय विद्यालयों के लिए पदों के सृजन की स्वीकृति वित्त विभाग की आईडी संख्या 102201099 दिनांक-03.03.2022 द्वारा जारी की गई है। अत: संलग्न सूची के अनुसार IFMS पर ऑफिस आईडी जारी करते हुए पदों का आवंटन वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु जारी किया जाता है। वित्त विभाग, राजस्थान, जयपुर के आदेश दिनांक 29.03.2022 के अनुसार वेतन चुकारे हेतु संवेतन मद की राशि पूल बजट में उपलब्ध है।

संलग्न- उपरोक्तानुसार ।

(गौरव अग्रवाल) आइएएस निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

2. 'स्वाधीनता दिवस समारोह-2022' के अवसर पर योग्यता प्रमाण-पत्र प्रदान किए जाने बाबत।

• कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा / माध्य/मा-ब/22838/2022-23/05 दिनांक-24.06.2022 • सम्भागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, समस्त..।

• विषय- 'स्वाधीनता दिवस समारोह-2022' के अवसर पर योग्यता प्रमाण-पत्र प्रदान किए जाने बाबत। • प्रसंग- शासन की अशा.टीप. क्रमांक:प.25(03)मं.मं./2022 जयपुर, दिनांक : 14.06.2022 ।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि विगत वर्षों की भांति स्वाधीनता दिवस समारोह-2022 (15 अगस्त,2022 को आयोज्य) के अवसर पर 'राजस्थान सिविल सेवा(ईनाम, योग्यता पुरस्कार एवं योग्यता प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाना) नियम-1973 के नियम -7 के अन्तर्गत जिला कलक्टरों, राज्य सरकार तथा सहकारी संस्थाओं/नगर पालिकाओं/परिषदों/ निगमों/मण्डलों/ बोर्ड/जिला परिषदों आदि के अधिकारियों/ कर्मचारियों को उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए योग्यता प्रमाण-पत्र प्रदान किए जाने हेतु प्रस्ताव आमंत्रित किए गए हैं।

उक्त क्रम में मंत्रिमण्डल सचिवालय द्वारा निर्धारित 12 बिन्दुओं के आधार पर निर्धारित प्रारूप पत्र के संलग्न प्रेषित किया जा रहा है। आपके क्षेत्राधिकार में पात्र अधिकारियों/कार्मिकों के समेकित प्रस्ताव अधीनस्थ मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों के माध्यम से दिनांक: 15.07.2022 तक इस कार्यालय को भिजवाएं।

दिनांक - 15.07.2022 के पश्चात प्राप्त होने वाले प्रस्तावों पर विचार किया जाना संभव नहीं होगा।

नोट-संलग्न को उपर्युक्तानुसार विभागीय वेबसाईट देखें।

(गौरव अग्रवाल) आइएएस निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

3. हितकारी निधि योजनान्तर्गत एक मुश्त छात्रवृति प्राप्त करने हेतु आवेदन आमंत्रण की अन्तिम तिथि - 12.08.2022

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर । • क्रमांक : शिविरा/मा/हिनि/28129 (छात्रवृति)/ 2022-23 दिनांक : 07.07.2022 • समस्त संयुक्त निदेशक, समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय (माध्यमिक/प्रारम्भिक शिक्षा), समस्त प्राचार्य डाइट, समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ।

• विषय- हितकारी निधि योजनान्तर्गत एक मुश्त छात्रवृति प्राप्त करने हेतु आवेदन आमंत्रण की अन्तिम तिथि - 12.08.2022 ।

हितकारी निधि माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर के विभागीय कार्मिक जो सेवा में कार्यरत हैं (संस्कृत शिक्षा विभाग में कार्यरत कार्मिकों को छोड़कर) समस्त वर्ग के अधिकारियों /कर्मचारियों के पुत्र/पुत्री के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोजित कक्षा 10 की परीक्षा में 70 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त किए हैं, प्रति छात्र/छात्रा को 11,000/-रुपए एक मुश्त छात्रवृति प्रदान करने हेतु आवेदन-पत्र आमंत्रित किए जाते हैं, यह सहायता राशि हितकारी निधि के 2018-19 से नियमित अंशदाता को देय होगी।

योजना का लाभ उन आवेदकों को प्रदान किया जावेगा। जिन्होंने सत्र 2022 में परीक्षा उत्तीर्ण (परीक्षा परिणाम जून 2022) की हो। प्रार्थना-पत्र भरते समय एवं संबंधित अधिकारी द्वारा अग्रेषित करवाते समय निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखकर कर अग्रेषित किया जाए-

01 योजनान्तर्गत शिक्षा विभागीय कार्मिक के पुत्र/पुत्री द्वारा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोजित कक्षा-10 की परीक्षा राजकीय विद्यालय में अध्ययन करते हुए उत्तीर्ण की हो।

2. विभागीय कार्मिक के पुत्र/पुत्री द्वारा 70 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त किए हो, पात्र होंगे।

3. योजनान्तर्गत 950 छात्र/छात्रा कक्षा -10 (secondary) के एवं 50 छात्र/छात्राएं वरिष्ठ उपाध्याय, संस्कृत के उत्तीर्ण हो, को देय है।

4. प्राप्तांक का आधार, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड कक्षा- 10 (secondary) के प्राप्तांक है तथा टॉप 1000 छात्र/छात्राओं को यह राशि प्रदान की जावेगी।

5. सहायता राशि हेतु एक निर्धारित प्रपत्र जारी किया जा रहा है तथा प्रार्थना-पत्र प्राप्त होने पर मैरिट के आधार पर सूची तैयार कर राशि प्रदान की जाएगी।

6. आवेदन पत्र निर्धारित प्रारूप में संबंधित अधिकारी से अग्रेषित करवाकर भेजना होगा।

7. वित्तीय वर्ष 2018-19 से 2021-22 में अंशदान कटौती के कटौती शिड्यूल एवं ई.सी.एस. की प्रति आवश्यक रूप से संलग्न की जावें। पी. डी. मद के मामले में जहाँ से वेतन आहरित हुआ हो वहाँ से ई.सी.एस. /शिड्यूल की प्रति प्राप्त कर संलग्न करे।

8. यह सहायता राशि वर्ष जून 2022 में आए परीक्षा परिणाम में उत्तीर्ण हुए हैं पर लागू होगी।

9. अपूर्ण प्रार्थना-पत्र एवं देरी से प्राप्त प्रार्थना-पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। अत: ऐसी स्थिति में एवं निरस्त प्रार्थना पत्र के बारे में कोई अलग से सूचना नहीं दी जावेगी ।

10. कार्मिक के पुत्र/पुत्री को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर या अन्य राजकीय स्रोतों से इस प्रकार की कोई छात्रवृति प्राप्त की हो, वे पात्र नहीं होंगे।

11. योजनान्तर्गत स्वीकृत राशि कार्मिक के खातों में ई.सी.एस. के जरिए जमा की जावेगी, इस बाबत अनावश्यक पत्र व्यवहार नहीं किया जावें।

12 संस्थाप्रधान एवं अग्रेषण करने वाले अधिकारी गण उक्त बिन्दुओं के बारे में आश्वस्त होने के उपरान्त प्रार्थना-पत्र अनुशंषा सहित निम्न हस्ताक्षर कर्त्ता सचिव, हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर के नाम से प्रेषित किया जावे।

• **उप निदेशक (प्रशासन)** एवं सचिव हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

---

4. माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 की बजट घोषणा 55 के अनुसरण में आर्थिक कमजोर वर्ग (EWS) के राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10 व 12 के विद्यार्थियों हेतु मुख्यमंत्री शिक्षा अलंकार पुरस्कार योजना की क्रियान्विति एवं प्रचार-प्रसार बाबत् ।

• कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक: शिविरा/माध्य/छात्रवृति/सेल-डी/ब.घो. 55/मु.शि. अलंकार पु.यो./ 2022-23 • दिनांक-07.07.22 • समस्त जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक.... • विषय- माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 की बजट घोषणा 55 के अनुसरण में आर्थिक कमजोर वर्ग (EWS) के राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10 व 12 के विद्यार्थियों हेतु मुख्यमंत्री शिक्षा अलंकार पुरस्कार योजना की क्रियान्विति एवं प्रचार-प्रसार बाबत् । • प्रसंग- शासन के पत्रांक प. 1 (7) शिक्षा-1/साई.वि.यो./2009 पार्ट-7 जयपुर दिनांक 21.06.2022 के क्रम में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत राज्य सरकार के प्रासंगिक पत्र के द्वारा माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 की बजट घोषणा संख्या 55 के अनुसरण में आर्थिक कमजोर वर्ग (EWS) के राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10 व 12 में संकायवार (कला, वाणिज्य, विज्ञान) में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर द्वारा आयोजित परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले वरीयता के आधार पर कुल कक्षा 10 के 20 (10 छात्र व 10 छात्राएं) व कक्षा 12 के कुल 12 (6 छात्र व 6 छात्राएं) चयनित विद्यार्थियों हेतु मुख्यमंत्री शिक्षा अलंकार पुरस्कार योजना की क्रियान्विति बाबत् निर्देश प्राप्त हुए हैं।

राज्य में योजना के सफल क्रियान्विति हेतु आप अपने अधीनस्थ समस्त राजकीय विद्यालयों को वर्तमान में संचालित योजनाओं के साथ ही उक्त योजना में शामिल करते हुए योजना के व्यापक प्रचार-प्रसार बाबत् निर्देश जारी करें। विभाग द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रम, प्रवेशोत्सव आदि में एवं विद्यालय के सूचना पट्ट पर योजना का वर्णन एवं देय लाभों का उल्लेख करवाने के निर्देश जारी करें।

संलग्नः-परिशिष्ठ 'क' ऑनलाइन आवेदन पत्र साईट पर देखें।

प्रभारी अधिकारी छात्रवृति एवं प्रोत्साहन प्रकोष्ठ,माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान,बीकानेर

---

5. विमुक्त, घुमन्तू तथा अर्द्धघुमन्तू समुदाय के कक्षा 6 से 11 तक अध्ययनरत राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को नि:शुल्क साइकिल वितरण

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर •क्रमांक : शिविरा/माध्य/छात्रवृति/सेल-डी/ साई. वि. यो./ 2022-23 दिनांक - 07.07.22

विस्तृत दिशा-निर्देश -

विमुक्त, घुमन्तू तथा अर्द्धघुमन्तू समुदाय के कक्षा 6 से 11 तक अध्ययनरत राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को नि:शुल्क साइकिल वितरण ।

योजना का नाम:- विमुक्त, घुमन्तू तथा अर्द्धघुमन्तू समुदाय के विद्यार्थियों को नि:शुल्क साइकिल वितरण।

योजना का परिचय:-

घुमन्तू समुदाय के उत्थान हेतु निर्धारित योजना कि क्रियान्विति अन्तर्गत प्रदेश में विमुक्त, घुमन्तू तथा अर्द्धघुमन्तू समुदाय के कक्षा 6 से 11 तक अध्ययनरत राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को नि:शुल्क साइकिल वितरण योजना का आगामी सत्र से योजना का परिलाभ दिया जाएगा।

योजना का उद्देश्य:-

1. प्रदेश में विमुक्त, घुमन्तू तथा अर्द्धघुमन्तू समुदाय का विकास करना ।
2. विमुक्त, घुमन्तू समुदाय तथा अर्द्धघुमन्तू समुदाय के विद्यार्थियों का विद्यालयों में नामांकन एवं ठहराव सुनिश्चित करना।

योजना के अन्तर्गत देय लाभ:-

कक्षा 6 से 11 तक अध्ययनरत राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को नि:शुल्क साइकिल वितरण।

पात्रता एवं शर्तें :-

पात्रता :

1. परिशिष्ठ'ख' (संलग्न) में उल्लेखित 32 जातियों (विमुक्त जातियाँ-9, घुमन्तू तथा अर्द्धघुमन्तू जातियाँ - 10 एवं अर्द्धघूमन्तू जातियाँ - 13) के विद्यार्थी

2. कक्षा 06 से 11 तक में अध्ययनरत राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के छात्र एवं छात्राऐं (50 प्रतिशत छात्र एवं 50 प्रतिशत छात्राऐं)।

कक्षा	प्रस्तावित लक्ष्य		कुल
	छात्र	छात्रा	
6	350	350	700
7	350	350	700
8	350	350	700
9	205	206	411
10	205	206	411
11	205	206	411
कुल	1665	1668	3333

3. उन छात्र एवं छात्राओं को दुबारा लाभ नहीं दिया जाएगा जिन्हें इस योजना अन्तर्गत एक बार लाभान्वित किया जा चुका हो। इसके लिए विद्यार्थियों से इस आशय का शपथ पत्र लिया जावेगा।

4. प्रत्येक कक्षा में 60 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी पात्र होंगे।

5. कुल आवेदित विद्यार्थियों में से न्यून से अधिक आय की ओर बढ़ते हुए क्रम में मेरिट का निर्धारण किया जाएगा।

6. अंतिम स्थान पर एकाधिक विद्यार्थी आने पर उनकी जन्मतिथि के आधार पर मेरिट का निर्धारण किया जाए (जिस विद्यार्थी की जन्मतिथि अधिक है उसे पहले वरीयता में शामिल किया जाए)

7.उन छात्राओं को देय नहीं होनी चाहिए जिनको शिक्षा विभाग द्वारा नि:शुल्क साइकिल एक बार दी जा चुकी है या दी जा रही है तथा जिन छात्राओं द्वारा ट्रांसपोर्ट वाउचर की सुविधा ली जा रही है इसके लिए कक्षा 09 या उच्च कक्षा की छात्राओं से इस आशय का एक शपथ-पत्र लिया जावेगा।

आवेदन व चयन की प्रक्रिया : उच्च प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से ऑनलाइन आवेदन (शाला दर्पण/पीएसपी के माध्यम से) लिया जावेगा (प्रपत्र संलग्न)। जिसे संस्थाप्रधान द्वारा सत्यापित कर सम्बन्धित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी को भिजवाया जाएगा। जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय-माध्यमिक शिक्षा द्वारा पूरे जिले के आवेदन पत्र संकलित कर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर को भिजवाया जावेगा। निदेशक माध्यमिक शिक्षा बीकानेर द्वारा राज्य के समस्त आवेदन पत्रों में से पात्र विद्यार्थियों का चयन कर निदेशक, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग को आवश्यकतानुसार राशि की मांग की जावेगी।

आवेदन पत्र के समय आवश्यक दस्तावेज : 1.जाति प्रमाण पत्र 2. आय प्रमाण पत्र 3. अंक तालिका 4.शपथ पत्र देय लाभ -नि:शुल्क साइकिल ।

विमुक्त, घुमन्तू तथा अर्द्धघुमन्तू समुदाय के कक्षा 6 से 11 तक अध्ययनरत राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को नि:शुल्क साइकिल वितरण योजना

आवेदन पत्र वर्ष 2022-23

(पूर्ति संस्था प्रधान द्वारा शालादर्पण पोर्टल से की जावेगी)

1. छात्र/छात्रा का नाम
2. वर्तमाान में अध्ययनरत कक्षा एवं सेक्शन जिसमें अध्ययनरत है
3. परिवार की जन आधार आई-डी संख्या/एक्नोलेजमेन्ट नम्बर
4 छात्रा के पिता का नाम

छात्रा का फोटो

5 छात्रा की माता का नाम
6 छात्रा की जन्म तिथि (अंको एवं शब्दों में)
7 लिंग
8 धर्म
9 जाति (प्रमाण पत्र संलग्न करें)
10 अभिभावक/संरक्षक के पता एवं मोबाइल नम्बर
11 विद्यार्थी की ई मेल आईडी
12 ग्रामीण/शहरी
13 परिवार की वार्षिक आय (आय प्रमाण पत्र संलग्न करें)
14 शैक्षणिक योग्यता:-
पूर्णांक..... प्राप्तांक ..... प्रतिशत
उत्तीर्ण सत्र कक्षा परिणाम(प्रति संलग्न करे)
15 विद्यार्थी द्वारा क्या पूर्व में साइकिल/ट्रांसपोर्ट सुविधा प्राप्त की गई है:- हां या नही
(यदि नही तो शपथ पत्र संलग्न करें)
जन आधार आई डी में विद्यार्थी की व्यक्तिगत पहचान संख्या डी .....

अभिभावक/संरक्षक के हस्ताक्षर
जाँच कर्त्ता/ कक्षा अध्यापक
संस्थाप्रधान के हस्ताक्षर मय मोहर

---

6. माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 की बजट घोषणा संख्या 55 के अनुसरण में आर्थिक कमजोर वर्ग (EWS) की राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 6 से 8 तक की छात्राओं को नि:शुल्क साइकिल वितरण योजना की क्रियान्विति एवं प्रचार-प्रसार बाबत्

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर । • क्रमांक शिविरा/माध्य/छात्रवृति/सेल-डी/साई.वि.यो./2022-23 • दिनांक:- 07.07.222 । समस्त जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक ...। • विषय- माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 की बजट घोषणा संख्या 55 के अनुसरण में आर्थिक कमजोर वर्ग (EWS) की राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 6 से 8 तक की छात्राओं को नि:शुल्क साइकिल वितरण योजना की क्रियान्विति एवं प्रचार-प्रसार बाबत् । • प्रसंग- शासन के पत्रांक प. 1 (7) शिक्षा-1/साई.वि.यो/2009/पार्ट-7 जयपुर • दिनांक-21.06.2021

उपर्युक्त विषयान्तर्गत राज्य सरकार के प्रासंगिक पत्र के द्वारा माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 की बजट घोषणा संख्या 55 के अनुसरण में आर्थिक कमजोर वर्ग (EWS) की राजकीय योजना की क्रियान्विति बाबत् निर्देश प्राप्त हुए हैं।

राज्य में योजना के सफल क्रियान्विति हेतु आप अपने अधीनस्थ समस्त राजकीय विद्यालयों को योजना के व्यापक प्रचार-प्रसार बाबत् निर्देश जारी करें। इस क्रम में उक्त योजना को समस्त राजकीय विद्यालयों द्वारा वर्तमान में संचालित योजनाओं के साथ ही शामिल करते हुए विभाग द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रम, प्रवेशोत्सव आदि में एवं विद्यालय के सूचना पट्ट पर योजना का वर्णन एवं देय लाभों का उल्लेख करवाने के निर्देश जारी करें जिससे कि पात्र विद्यार्थियों को जागरुक किया जाकर अधिक से अधिक विद्यार्थियों को योजना से जोड़ा जा सके।

• प्रभारी अधिकारी, छात्रवृति एवं प्रोत्साहन प्रकोष्ठ, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर क्रमांक :-शिविरा/माध्य/छात्रवृति/सेल-डी/ब.घो.55/साई0वि0यो0

2022-23 • दिनांक 7.7.22 • विषय- माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा वित्तिय वर्ष 2022-23 की बजट घोषणा संख्या 55 के अनुसरण में आर्थिक कमजोर वर्ग (EWS) की छात्राओं को नि:शुल्क साइकिल वितरण योजना

दिशा निर्देश

1. योजना का नाम-:आर्थिक कमजोर वर्ग (EWS) की छात्राओं को नि:शुल्क साइकिल वितरण
2. योजना :- आर्थिक कमजोर वर्ग (EWS) की राजकीय विधालयों में अध्ययनरत कक्षा 6 से 8 तक की छात्राओं को आगे अध्ययन जारी करने हेतु घर से विद्यालय आने-जाने के लिए नि:शुल्क साइकिल वितरण की जायेगी।
3. योजना के लाभार्थी- राज्य के राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत आर्थिक कमजोर वर्ग (EWS) कक्षा 6 से 8 तक की छात्राऐं
4. योजना से संबंधित मूल विभाग- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग जयपुर
5. पात्रता-

- राज्य के राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत आर्थिक कमजोर वर्ग (EWS) के कक्षा 06 से 08 तक की छात्राओं को जिनके माता-पिता/अभिभावक की वार्षिक आय रुपये 1,00000 (एक लाख रूपये) से कम हो, को वरियता के आधार पर देय होगी।
- आर्थिक कमजोर वर्ग (EWS) की ऐसी छात्राऐं जो राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा संचालित ट्रांसपोर्ट बाउचर योजना या अन्य किसी भी साईकिल वितरण योजना के तहत लाभान्वित हो चुकी हो, इसके लिए पात्र नहीं होंगी। इसके लिये छात्राओं से इस आशय का शपथ पत्र लिया जावेगा।
- प्रत्येक कक्षा में 60 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाली वरीयता के अनुसार चयनित छात्राएँ पात्र होगीं।
- अन्तिम स्थान पर एकाधिक छात्राएँ आने पर कमश: अनिवार्य विषय अंग्रेजी व हिन्दी में अधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा पात्र होगी। इन दोनों विषयों में भी अंक समान होने पर जन्म तिथि के आधार पर वरीयता का निर्धारण किया जाए (जिस विधार्थी की आयु अधिक है उसे पहले वरीयता में शामिल किया जाए)

• कक्षा	• लाभान्वितों की संख्या
• 6	• 1933
• 7	• 1933
• 8	• 1934
• योग:—	• 5800

6. लाभान्वितों की संख्या- कक्षा 06 से 08 तक में अध्ययनरत लगभग 5800 छात्राओं को निम्नानुसार साइकिल वितरण किया जाएगा:-

7. आवेदन व चयन प्रकिया-

- कक्षा 06 से 08 तक के राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं (EWS) से ऑनलाइन आवेदन (शाला दर्पण के माध्यम से) लिया जाएगा (प्रपत्र संलग्न)। जिसे संस्थाप्रधान द्वारा सत्यापित कर संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय, माध्यमिक को ऑनलाइन अग्रेषित किया जाएगा।
- जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय, माध्यमिक शिक्षा द्वारा जिले के आवेदन पत्र संकलित कर निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर को अग्रेषित करेंगे।
- निदेशक माध्यमिक शिक्षा बीकानेर द्वारा राज्य के समस्त आवेदन पत्रों में से पात्र विद्यार्थियों का चयन कर निदेशक, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग से आवश्यकतानुसार राशि की मांग की जावेगी।

8. आवेदन पत्र के संलग्नक आवश्यक दस्तावेज-

- छात्रा का जनआधार कार्ड।
- आय प्रमाण पत्र (वर्ष 2022-23 हेतु)
- आगामी वर्ष (2021-22 के पश्चात्) के लिए अंक तालिका
- शपथ पत्र

9. देय लाभ- नि:शुल्क साइकिल

संलग्न:-परिशिष्ठ 'क' ऑनलाइन आवेदन पत्र विभागीय वेब साईट पर देखें।

• **प्रभारी अधिकारी,** छात्रवृति एवं प्रोत्साहन प्रकोष्ठ ,माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान ,बीकानेर।

---

7. राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद्, डॉ0 राधाकृष्णन् शिक्षा संकुल, पंचम ब्लॉक, प्रथम पंचम, कमरा नं. 601,जवाहर लाल नेहरू मार्ग, ओ. टी.एस. के पास, जयपुर-302017 क्रमांक : रास्कूलशिप/ जय/ आदर्श-उत्कृष्ट विद्यालय/वार्षिकोत्सव/ 2022-23/
दिनांक : 8.7.22

राज्य के प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा के चिन्हित विद्यालयों, संस्कृत शिक्षा के चिन्हित विद्यालयों, जनजातीय कल्याण विभाग के चिन्हित विद्यालयों, समाज कल्याण विभाग के चिन्हित विद्यालयों, चिन्हित कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों, स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालयों एवं चिन्हित मेवात आवासीय विद्यालय विद्यालयों में वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह, 2022-23 आयोजित करने हेतु

विस्तृत दिशा-निर्देश

प्रस्तावना :-

गत सत्रों के दौरान चिन्हित राजकीय विद्यालयों में आयोजित किए गए वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह की वृहद् सफलता का वर्तमान सत्र 2022-23 में विस्तार करते हुए राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् द्वारा समग्र शिक्षा के अन्तर्गत राज्य स्तरीय योजना निर्मित कर **राज्य के प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा के चिन्हित विद्यालयों, संस्कृत शिक्षा के चिन्हित विद्यालयों, जनजातीय कल्याण विभाग के चिन्हित विद्यालयों, समाज कल्याण विभाग के चिन्हित विद्यालयों, चिन्हित कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों, चिन्हित स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालयों एवं चिन्हित मेवात आवासीय विद्यालयों (समग्र शिक्षा - माध्यमिक शिक्षा मद/ प्रारम्भिक शिक्षा मद अन्तर्गत अनुमोदित विद्यालयों की पृथक-पृथक जिलेवार सूची संलग्न)** के विद्यार्थियों को सत्र पर्यन्त विद्यालय की शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक गतिविधियों में उनके श्रेष्ठ प्रदर्शन एवं उपलब्धियों जैसे - उच्चतम अंक/ श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम/ विशिष्ट उपलब्धि प्राप्ति/विशेष प्रतिभा प्रदर्शन इत्यादि को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से **वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह - 2022-23** का आयोजन भौतिक रूप से (in - person) किया जाना है।

इस हेतु चयनित आयोजक विद्यालयों को उपलब्ध करवाई जाने वाली प्रति विद्यालय राशि का विवरण निम्नानुसार है :-

1. **समग्र शिक्षा - माध्यमिक शिक्षा मद** अन्तर्गत चिन्हित विद्यालयों के लिए - 5,000/- प्रति विद्यालय

2. **समग्र शिक्षा – प्रारम्भिक शिक्षा मद** अन्तर्गत चिन्हित विद्यालयों के लिए – 3,000/– प्रति विद्यालय

वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह 2022–23 के जिला / ब्लॉक / ग्रामीण क्षेत्र में पंचायत/ शहरी क्षेत्र में संकुल स्तर पर सफल आयोजन एवं उक्त राशि के व्यय हेतु विस्तृत दिशा–निर्देश निम्न प्रकार है :–

जिला स्तर –

निम्नानुसार गठित **जिला स्तरीय कमेटी** जिले में **वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह – 2022–23** की समस्त व्यवस्थाओं के लिये उत्तरदायी होगी :–

- मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक – **अध्यक्ष**
- संस्कृत शिक्षा – संभागीय संस्कृत शिक्षा अधिकारी
- जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय (प्राशि) – सदस्य
- जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय (माशि) – सदस्य
- प्रधानाचार्य, डाइट – सदस्य
- अति. जिला परियोजना समन्वयक – **सदस्य सचिव**
- मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, समस्त – सदस्य
- सहायक जिला परियोजना समन्वयक (आदर्श विद्यालय, उत्कृष्ट विद्यालय, केजीबीवी, मॉडल स्कूल एवं सीएसआर) – सदस्य
- लेखाधिकारी/सहायक लेखाधिकारी – सदस्य
- कार्यक्रम अधिकारी (आदर्श विद्यालय, उत्कृष्ट विद्यालय, केजीबीवी, मॉडल स्कूल एवं सीएसआर) – सदस्य
- पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (पीईईओ) एवं सीआरसीएफ (01) – सदस्य
- पदेन शहरी संकुल प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (यूसीईईओ) एवं सीआरसीएफ (01) – सदस्य
- मॉडल स्कूल / महात्मा गांधी स्कूल संस्थाप्रधान (01) – सदस्य
- उत्कृष्ट विद्यालय संस्थाप्रधान (01) – सदस्य
- केजीबीवी संस्थाप्रधान (01) – सदस्य
- भामाशाह/भामाशाह प्रेरक (02) – सदस्य

उक्त कमेटी के कार्य निम्नानुसार रहेंगे :–

- **वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह – 2022–23 हेतु गठित उक्त जिला स्तरीय समिति वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह के समस्त उत्तरदायित्व का भी निर्वहन करेगी।**
- **सत्र 2022–23 में जिन Annual Function वाले अनुमोदित विद्यालयों के लिए उभयनिष्ठ रूप से पूर्व विद्यार्थी सम्मेलन (Alumni Meet) भी अनुमोदित किया गया है, उक्त दोनों समारोह का आयोजन एकजाई कार्ययोजना निर्माण कर एक ही दिवस में आयोजित किया जाना सुनिश्चित करेंगे। इस हेतु ब्लॉक/ पीईईओ/ यूसीईईओ कार्यालय तथा संबंधित संस्थाप्रधानों को निर्देशित कर अनुपालना सुनिश्चित करायेंगे।**
- समारोह के आयोजन की जिला स्तरीय विस्तृत कार्ययोजना निर्मित कर समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी के साथ साझा करेंगे।
- समारोह के आयोजन हेतु परिषद कार्यालय द्वारा उपलब्ध करवाई गई राशि को निर्धारित समय में जिला स्तर से **सम्बन्धित विद्यालय की SDMC/SMC खाते में ही** उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेंगे।
- कार्ययोजना निर्माण करते समय अधिकाधिक जनसहभागिता को प्रमुखता प्रदान करेंगे।
- राज्य स्तर, जिला स्तर एवं ब्लॉक स्तर के जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, भामाशाहों, दानदाताओं को चिन्हित कर विद्यालयों में आमंत्रित करने हेतु उनसे सम्पर्क कर उनकी सूची सीबीईओ को उपलब्ध करायेंगें, जिससे उनसे समन्वय स्थापित कर उनको कार्यक्रम हेतु आमंत्रित किया जा सके।
- अधीनस्थ विद्यालयों में उक्त आयोज्य समारोह में जनप्रतिनिधि, भामाशाह, दानदाता, क्षेत्रीय कम्पनी के प्रबन्धक/सीएसआर हैड, पूर्व विद्यार्थी इत्यादि को आमंत्रित किया जाना सुनिश्चित करेंगे।
- राज्य स्तर से समारोह हेतु जारी राशि के अतिरिक्त राशि एकत्रीकरण हेतु जिला/ब्लॉक के सीएसआर फर्म, भामाशाह, उधोगपति, दानदाता, जनप्रतिनिधि, विद्यालयों के सफल पूर्व छात्र एवं ऐसे संभावित व्यक्तित्व जो कार्यक्रम के आयोजन हेतु राशि उपलब्ध करा सकते हैं, की सूची सीबीईओ के साथ साझा करेंगे।
- समारोह में संस्था प्रबन्धन एवं विद्यार्थियों को सम्बलन प्रदान करने हेतु जिला एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को नियुक्त करेंगे। प्रयास रहे कि अधिकतम आयोज्य समारोहों में कोई कार्यालय प्रतिनिधि आवश्यक रूप से उपस्थित रह सके। इस हेतु संयुक्त निदेशक, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला शिक्षा अधिकारी (प्राशि एवं माशि), प्रधानाचार्य–डाइट, एडीपीसी कार्यालय के समस्त अधिकारियों को शामिल किया जावे।
- समारोह के आयोजन से पूर्व जिला स्तर पर DEO की अध्यक्षता में समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी की बैठक आयोजित की जावेगी, जिसमें कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु समस्त आवश्यक दिशा–निर्देश प्रदान किए जावेंगे।
- प्रत्येक ब्लॉक एवं सीआरसीएफ स्तरीय समारोह आयोजन समिति के गठन की सूचना सहित प्रत्येक ब्लॉक के सीआरसीएफ स्तरीय **आयोजक विद्यालयों** में वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह के आयोजन **की** निर्धारित **दिवस/तिथि** वार सूची **निर्धारित समयावधि में राज्य कार्यालय को अनिवार्य रूप से प्रेषित करेंगे।**
- राज्य एवं ब्लॉक कार्यालय से निरन्तर समन्वय स्थापित करते हुए उक्त समारोह को सफलतापूर्वक आयोजित किया जाना सुनिश्चित करेंगे।
- जिला कार्यालय उक्त समारोह के व्यापक आयोजन की एकजाई विस्तृत रिपोर्ट मय सर्वश्रेष्ठ फोटोग्राफ एवं वीडियो तथा उपयोगिता प्रमाण–पत्र (यू.सी.)/ व्यय विवरण (ब्लॉकवार सूचना सहित) जिले में अन्तिम आयोजन के 05 दिवस में राज्य कार्यालय को प्रेषित किया जाना सुनिश्चित करेंगे।

ब्लॉक स्तर –

निम्नानुसार गठित **ब्लॉक स्तरीय कमेटी** जिले में **वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह** की समस्त व्यवस्थाओं के लिये उत्तरदायी होगी :–

- मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी – **अध्यक्ष**
- अति. ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, प्रथम – सदस्य
- अति. ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, द्वितीय – **सदस्य सचिव**
- संकुल प्रभारी, संस्कृत शिक्षा (02) – सदस्य
- संदर्भ व्यक्ति, प्रथम एवं द्वितीय – सदस्य
- सहायक लेखाधिकारी – सदस्य

- शहरी संकुल प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी एवं सीआरसीएफ - सदस्य (01)
- पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी एवं सीआरसीएफ - सदस्य (02)
- मॉडल स्कूल / महात्मा गाँधी स्कूल संस्थाप्रधान (01) - सदस्य
- उत्कृष्ट विद्यालय संस्थाप्रधान (01) - सदस्य
- केजीबीवी संस्थाप्रधान (01) - सदस्य
- भामाशाह/भामाशाह प्रेरक (02) - सदस्य

उक्त कमेटी के कार्य निम्नानुसार रहेंगे :-

- **वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह - 2022-23 हेतु गठित उक्त ब्लॉक स्तरीय समिति वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह के समस्त उत्तरदायित्व का भी निर्वहन करेगी।**
- **अपने अधीनस्थ क्षेत्र में Annual Function एवं पूर्व विद्यार्थी सम्मेलन (Alumni Meet) के उभयनिष्ठ अनुमोदन वाले विद्यालयों में दोनों समारोह का आयोजन एकजाई कार्ययोजना निर्माण कर एक ही दिवस में आयोजित किया जाना सुनिश्चित करेंगे।**
- उक्त समारोह के सफल आयोजन हेतु विस्तृत कार्ययोजना निर्माण कर शहरी क्षेत्र में सीआरसीएफ अधीनस्थ आयोजक विद्यालयों के संस्थाप्रधान एवं ग्रामीण क्षेत्र में पदेन पीईईओ व सीआरसीएफ अधीनस्थ आयोजक विद्यालयों के संस्थाप्रधान के साथ साझा करेंगे एवं कार्य रूप में परिणित करने हेतु उत्तरदायी होंगे।
- राज्य स्तर से जारी समारोह के आयोजन की राशि जिला कार्यालय के माध्यम से आयोजक विद्यालयों तक निर्धारित समय में उपलब्धता सुनिश्चित करेंगे।
- कार्ययोजना निर्माण करते समय अधिकाधिक जनसहभागिता को प्रमुखता प्रदान करेंगे।
- राज्य स्तर से समारोह हेतु जारी राशि के अतिरिक्त राशि एकत्रीकरण हेतु जिला/ब्लॉक के सीएसआर फर्म, भामाशाह, उद्योगपति, दानदाता, जनप्रतिनिधि, विद्यालयों के सफल पूर्व छात्र एवं ऐसे संभावित व्यक्तित्व जो कार्यक्रम के आयोजन हेतु राशि उपलब्ध करा सकते हैं, की सूची शहरी क्षेत्र के आयोजक विद्यालयों के संस्थाप्रधान व सीआरसीएफ एवं ग्रामीण क्षेत्र के समस्त पीईईओ व सीआरसीएफ के साथ साझा करेंगे।
- समारोह में सम्बलन प्रदान करने हेतु जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ - साथ ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों की उपस्थिति सुनिश्चित करेंगे।
- राज्य स्तर, जिला स्तर एवं ब्लॉक स्तर के जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, भामाशाहों, दानदाताओं को चिन्हित कर विद्यालयों में आमंत्रित करने हेतु सम्पर्क कर उनकी सूची शहरी क्षेत्र के आयोजक विद्यालयों के संस्थाप्रधान व सीआरसीएफ एवं ग्रामीण क्षेत्र के समस्त पीईईओ व सीआरसीएफ को उपलब्ध करायेंगे, जिससे आयोजक विद्यालय उनसे समन्वय कर उनको कार्यक्रम हेतु आमंत्रित कर सके।
- समारोह से पूर्व ब्लॉक स्तर पर CBEO की अध्यक्षता में समस्त पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी एवं सीआरसीएफ, शहरी क्षेत्र के आयोजक विद्यालयों के संस्थाप्रधान व सीआरसीएफ, इत्यादि की पूर्व तैयारी बैठक आयोजित करेंगे, जिसमें आयोजक विद्यालयों को कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु समस्त आवश्यक दिशा-निर्देश उपलब्ध करायेंगे।
- ब्लॉक स्तरीय आयोजन समिति एवं अधीनस्थ सीआरसीएफ स्तरीय आयोजन समिति के गठन की सूचना के साथ-साथ प्रत्येक सीआरसीएफ के परिक्षेत्र के आयोजक विद्यालयों में वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह के आयोजन **की** निर्धारित **दिवस/तिथि** वार सूची **निर्धारित समयावधि में अनिवार्य रूप से जिला कार्यालय को उपलब्ध करायेंगे।**
- ब्लॉक कार्यालय उक्त समारोह के व्यापक आयोजन की एकजाई विस्तृत रिपोर्ट एवं उपयोगिता प्रमाण-पत्र (यू.सी.) / व्यय विवरण (पीईईओ/शहरी क्षेत्र - सीआरसी सूचना सहित) ब्लॉक में अन्तिम आयोजन के 02 दिवस में जिला कार्यालय को प्रेषित किया जाना सुनिश्चित करेंगे।

नोट :- उक्त समारोह के आयोजन की जिला एवं ब्लॉक स्तरीय मॉनीटरिंग रिपोर्ट शाला दर्पण पोर्टल पर जिला एवं ब्लॉक अधिकारियों के लॉगिन में उपलब्ध करा दी जावेगी, जिसकी सहायता से जिला/ब्लॉक कार्यालय परिक्षेत्र के समस्त विद्यालयों में उक्त आयोजन का सफल संचालन एवं प्रभावी मॉनीटरिंग व मूल्यांकन सुनिश्चित करेंगे।

पंचायत स्तरीय आयोजन समिति :-

ग्रामीण क्षेत्र में पंचायत स्तर पर अधीनस्थ विद्यालयों में वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह के सफल आयोजन हेतु निम्नानुसार कमेटी का गठन किया जाता है। उक्त पंचायत स्तरीय समिति वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह की समस्त व्यवस्थाओं के लिये उत्तरदायी होगी -

1. पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी एवं सीआरसीएफ - अध्यक्ष
2. मॉडल स्कूल संस्थाप्रधान (01) - सदस्य (उपलब्धता अनुसार),
3. पंचायत स्थित अन्य उमावि/मावि के संस्थाप्रधान, समस्त - सदस्य
4. संस्थाप्रधान, संस्कृत शिक्षा, समस्त - सदस्य
5. उत्कृष्ट विद्यालय संस्थाप्रधान - सदस्य
6. पंचायत स्थित अन्य उप्रावि/प्रावि के संस्थाप्रधान - सदस्य (02)
7. एसडीएमसी/एसएमसी (पीईईओ विद्यालय) - सदस्य (02)
8. भामाशाह प्रेरक - सदस्य
9. भामाशाह - सदस्य (02)

शहरी क्षेत्र सीआरसीएफ स्तरीय आयोजन समिति :-

शहरी क्षेत्र में सीआरसीएफ स्तर पर परिक्षेत्र के विद्यालयों में वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह के सफल आयोजन हेतु निम्नानुसार कमेटी का गठन किया जाता है। उक्त सीआरसीएफ स्तरीय समिति वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह की समस्त व्यवस्थाओं के लिए उत्तरदायी होगी -

1. शहरी नोडल विद्यालय संस्थाप्रधान / यूसीईईओ एवं सीआरसीएफ - अध्यक्ष
2. परिक्षेत्र के उमावि/मावि (महात्मा गाँधी स्कूल सहित) के संस्थाप्रधान - सदस्य (02)
3. संस्थाप्रधान, संस्कृत शिक्षा, समस्त - सदस्य
4. परिक्षेत्र के उप्रावि/प्रावि के संस्थाप्रधान - सदस्य (02)
5. एसडीएमसी/एसएमसी (शहरी नोडल विद्यालय) - सदस्य (02)
6. भामाशाह प्रेरक - सदस्य
7. भामाशाह - सदस्य (02)

उक्तानुसार गठित ग्रामीण क्षेत्र की पंचायत व सीआरसीएफ स्तरीय एवं शहरी क्षेत्र की सीआरसीएफ स्तरीय समारोह आयोजन समिति संलग्न सूची अनुसार अपने परिक्षेत्र के अनुमोदित समस्त विद्यालयों में वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजन हुए निम्नांकित समस्त निर्देशों की अनुपालना करते हुए विस्तृत कार्ययोजना का निर्माण कर कार्य रूप में परिणित करेंगे एवं समस्त उत्तरदायित्वों का निर्वहन करेंगे :-

- **अपने अधीनस्थ क्षेत्र में Annual Function एवं पूर्व विद्यार्थी सम्मेलन (Alumni Meet) के उभयनिष्ठ अनुमोदन वाले विद्यालयों में दोनों समारोह का आयोजन एकजाई कार्ययोजना निर्माण कर एक ही दिवस में आयोजित किया जाना सुनिश्चित करेंगे।**

- समस्त आयोजक विद्यालयों में निर्धारित समयावधि में उक्त आयोजन के सफल सम्पादन हेतु आवश्यक विस्तृत कार्य योजना एवं सम्पूर्ण तैयारियाँ पूर्ण कर ली जावे।
- समारोह के आयोजन हेतु विद्यालय के प्रांगण, सार्वजनिक स्थान का चयन करें। यदि उक्त स्थान पर्याप्त उपलब्ध नहीं हो, तो समीपस्थ गार्डन, लॉन, सामुदायिक केन्द्र की निःशुल्क अथवा दानदाता/भामाशाहों के सहयोग से उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक कार्यवाही करें।
- उक्त आयोजन हेतु राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध करवाई गई उक्त राशि के अतिरिक्त संस्थाप्रधान एवं स्टाफ जनसहयोग, भामाशाहों, दानदाताओं एवं जनप्रतिनिधियों के माध्यम से सहयोग प्राप्त कर कार्यक्रम को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं।
- समिति सुनिश्चित करें कि परिक्षेत्र के समस्त आयोजक विद्यालय सहित गैर-आयोजक विद्यालयों के प्रतिभाशाली बच्चे भी समारोह की गतिविधियों में सहभागी बनें एवं प्रतिनिधित्व के अवसर प्राप्त करें।
- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सीआरसीएफ/पीईईओ अपने परिक्षेत्र में स्थित आयोजक विद्यालयों को आवश्यक नेतृत्व एवं मार्गदर्शन प्रदान करेंगे एवं समारोह के सफलतापूर्वक आयोजन हेतु समस्त व्यवस्थाओं के उत्तरदायित्व का निर्वहन करेंगे। इस हेतु वे जिला कार्यालय एवं ब्लॉक कार्यालय से समन्वय स्थापित करते हुए आयोजक विद्यालयों में उक्त समारोह का आयोजन अलग-अलग दिवस/तिथि में आयोजित किया जाना सुनिश्चित करेंगे।
- उक्त समारोह के स्थानीय आयोजन की तिथि निर्धारण से पूर्व यथासंभव स्थानीय जनप्रतिनिधियों से विचार-विमर्श किया जाना सुनिश्चित करें, ताकि उनकी अधिकाधिक भागीदारी हो सके।
- समारोह में वर्तमान सत्र के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे - निबंध, चित्रकला, प्रश्नोत्तरी, वाद-विवाद इत्यादि के विजेता एवं विद्यालय में श्रेष्ठतम शैक्षणिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जावे।
- गत वर्ष की बोर्ड एवं सामान्य परीक्षा के टॉपर्स को आमंत्रित कर सम्मानित किया जावे। टॉपर्स के संक्षिप्त Motivational Speech के माध्यम से अन्य विद्यार्थियों को श्रेष्ठ शैक्षणिक प्रदर्शन हेतु प्रेरित किया जावे।
- समारोह में विद्यालय के राज्य सरकार के कोविड दिशा-निर्देश अनुरूप ही विद्यार्थियों की उपस्थिति सुनिश्चित की जावे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने वाले बच्चों के अतिरिक्त विद्यार्थी विद्यालय गणवेश में उपस्थित रहेंगे।
- विद्यालय के सफल पूर्व विद्यार्थियों सहित विद्यार्थियों के अभिभावकों को समारोह में भाग लिए जाने हेतु आमंत्रित किया जावे एवं इस संबंध में विद्यार्थियों को भी उनके अभिभावकों को प्रेरित करने हेतु मार्गदर्शन दिया जावे।
- वार्षिकोत्सव समारोह के सफल आयोजन हेतु समस्त विद्यार्थियों को उनके प्रयासों और सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया जावे।
- समारोह में आदर्श एवं गरिमा अनुकूल कलात्मक, सृजनात्मक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे - सामाजिक संदेश देने वाले नाटक/नुक्कड़ नाटक/ड्रामा/गीत, देशभक्ति गीत, प्रेरक प्रसंग, जिम्नास्टिक, योग एवं आसन इत्यादि की प्रस्तुति सुनिश्चित की जावे।
- कार्यक्रम का आयोजन गरिमामय रहे, इस बात का पूर्णतया ध्यान रखा जावे।
- उपलब्ध करवाई गई एवं जुटाई गई राशि का उपयोग समारोह के सफल आयोजन हेतु आवश्यक संसाधन जैसे - मुद्रण कार्य मंच साज-सज्जा, टैन्ट व्यवस्था, साउण्ड सिस्टम, वीडियो/ फोटोग्राफी, बैठक व्यवस्था, जलपान इत्यादि के लिए एवं विद्यार्थियों के लिए पुरस्कार - शील्ड, स्मृति चिन्ह, प्रोत्साहन राशि इत्यादि हेतु किया जाना है।
- समारोह के सफल संचालन हेतु शहरी/ पंचायत परिक्षेत्र के समस्त शिक्षकों को आवश्यकतानुसार उत्तरदायित्व (जैसे -सांस्कृतिक प्रभारी, आमंत्रण प्रभारी, बैठक व्यवस्था प्रभारी, मीडिया प्रभारी, जलपान प्रभारी, मंच संचालन प्रभारी, मंच प्रभारी इत्यादि) प्रदान किए जावे।
- जिला / ब्लॉक/सीआरसीएफ स्तरीय समिति आपसी समन्वय के साथ सुनिश्चित करें कि प्रत्येक समारोह में अधिकाधिक जनसहभागिता हो। इस हेतु सीआरसीएफ एवं परिक्षेत्र के आयोजक विद्यालय संस्थाप्रधान समारोह पूर्व अधीनस्थ स्टाफ के सहयोग से विद्यालय के समस्त परिक्षेत्र में जनसंपर्क स्थापित करें।
- समारोह में जनप्रतिनिधि, गणमान्य व्यक्ति, प्रशासनिक अधिकारी, भामाशाह, दानदाता, कम्पनी के प्रबन्धक/सीएसआर हैड, SDMC/SMC के सदस्य, विद्यालय के सफल पूर्व छात्र एवं समस्त अभिभावक को अनिवार्यतः आमंत्रित किया जावे, जिनके साझा किए गए अनुभवों से बच्चे प्रोत्साहन प्राप्त कर सकें। क्रमशः विद्यालय के पूर्व छात्र (**Alumni**) जो राजनीति/ भारतीय एवं राज्य प्रशासनिक सेवा/ अन्य राजकीय सेवा/ सफल उद्यमी/ व्यवसायी इत्यादि के रूप में सफल रहे हैं, उनका अभिलेख भावी विविध उपयोग हेतु अनिवार्यतः संधारित किया जाना सुनिश्चित करें तथा संबंधित ब्लॉक/ जिला कार्यालय के साथ यथा आवश्यकता एवं यथासमय साझा करें।
- विद्यालय स्तर पर भी **SDMC/SMC** की बैठक के दौरान उक्त समारोह के सफल आयोजन हेतु विस्तृत कार्य योजना तय कर समस्त सदस्यों में कार्य आवंटन किया जावे।
- समारोह का प्रारम्भ अनिवार्यतः राष्ट्रगान के साथ एवं समापन राष्ट्रगीत के साथ किया जावे।
- जिला एवं ब्लॉक कार्यालय इस हेतु स्पष्ट निर्देश जारी कर अनुपालना सुनिश्चित करें कि वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह के आयोजन की निर्धारित सूचना की समस्त सही प्रविष्टियाँ आयोजन समाप्ति पश्चात् अगले दिवस तक शाला दर्पण पोर्टल पर केवल आयोजक विद्यालय द्वारा उनके विद्यालय के लॉगिन के स्कूल टैब के अन्तर्गत तत्समय उपलब्ध मॉड्यूल में अनिवार्यतः ऑनलाइन फीड की जावें। गैर-आयोजक विद्यालय द्वारा उक्त सूचना नहीं भरी जानी है। पंचायत एवं सीआरसी स्तरीय समिति इन दिशा-निर्देशों की कठोर पालना सावधानीपूर्वक सुनिश्चित करें, ताकि आयोजन की प्रामाणिक एवं सुसंगत सूचना प्राप्त की जा सके।
- प्रत्येक आयोजक विद्यालय द्वारा वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह के 10 छवि चित्र (फोटोग्राफ) एवं वीडियो सीबीईओ कार्यालय को उपलब्ध करवाएं जावे। सीबीईओ कार्यालय द्वारा सर्वश्रेष्ठ फोटो एवं वीडियो सीडीईओ कार्यालय को प्रेषित किए जावें। सीडीईओ कार्यालय का प्रतिनिधि जिले के प्रत्येक ब्लॉक के सर्वश्रेष्ठ 50 फोटोग्राफ एवं 05 वीडियो को जिले के अन्तिम समारोह के 03 दिवस में पैन ड्राइव के माध्यम से परिषद् कार्यालय को अनिवार्यतः उपलब्धता सुनिश्चित करें।
- समारोह में सम्मानित अतिथि, जनप्रतिनिधि, गणमान्य व्यक्ति, प्रशासनिक अधिकारी, भामाशाह, दानदाता, कम्पनी के

प्रबन्धक/सीएसआर हैड, SDMC/SMC के सदस्य, विद्यालय के सफल पूर्व छात्र एवं समस्त अभिभावक को विद्यालय विकास में सहयोग हेतु प्रेरित किया जावे। इस हेतु ज्ञान संकल्प पोर्टल के बारे में सक्षिप्त जानकारी देकर विद्यालय विकास में इसके महत्त्व का प्रचार-प्रसार किया जावे।

- उक्त समारोह के आयोजन हेतु विद्यालय के SDMC/SMC खाते में उपलब्ध करवाई गई राशि का उपयोग अनिवार्यत: संबंधित SDMC/SMC के माध्यम से ही किया जाएगा।
- जिस मद के लिए राशि उपलब्ध कराई जा रही है, व्यय उसी मद में नियमानुसार ही किया जावे।
- वर्तमान सत्र में अनुमोदित न्यून राशि को ध्यान में रखते हुए आयोजक विद्यालय उक्त समारोह के सफल आयोजन हेतु आवश्यक अतिरिक्त राशि का उपयोग एसडीएमसी/ एसएमसी में प्रस्ताव अनुमोदन के माध्यम से उक्त समारोह के आयोजन से प्राप्त दान/ सहयोग राशि में से कर सकेंगे।
- राशि का उपयोग योजना के दिशा-निर्देश, शिक्षा मंत्रालय की गाइडलाइन एवं राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 एवं नियम 2013 की पूर्ण पालना करते हुए विहित प्रक्रियानुसार किया जाना सुनिश्चित किया जावे।
- पंचायत एवं सीआरसी स्तरीय समिति अपने अधीनस्थ विद्यालयों से प्राप्त समारोह आयोजन की रिपोर्ट के आधार पर एकजाई रिपोर्ट अन्तिम आयोजन के अगले दिवस ब्लॉक कार्यालय को प्रेषित किया जाना सुनिश्चित करेंगे।
- आयोजक विद्यालय कार्यक्रम आयोजन के 02 दिवस में उपयोगिता प्रमाण पत्र पीईईओ/सीआरसीएफ एवं तदनुसार सीबीईओ के माध्यम से परियोजना कार्यालय जिला स्तर को प्रस्तुत किया जावे।
- आवंटित राशि में यदि कोई बचत राशि शेष हो तो, आयोजक विद्यालय आयोजन के 02 दिवस में जिला कार्यालय को लौटाया जाना सुनिश्चित करें।
- उक्तानुसार जिला स्तर पर शेष समस्त राशि को जिला कार्यालय जिले में उक्त समारोह के अन्तिम आयोजन के 05 दिवस में राज्य कार्यालय को लौटाया जाना सुनिश्चित करेंगे।
- जिला कार्यालय व्यय राशि की प्रविष्टि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के प्रबन्ध पोर्टल पर अनिवार्यत: अद्यतन किया जाना सुनिश्चित करेंगे।

नोट :-वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह 2022-23 का आयोजन संबंधित विद्यालय स्तर पर माह - जनवरी, 2023 के कार्य दिवसों में किया जाना है। जिला/ब्लॉक/सीआरसी कार्यालय एवं चिन्हित विद्यालय उक्त आयोजन संबंधी आवश्यक पूर्व तैयारी करना सुनिश्चित करें।

संलग्नक : उपरोक्तानुसार विभागीय वेबसाईट पर देखें।

(मोहन लाल यादव) राज्य परियोजना निदेशक एवं आयुक्त

---

8. आहरण वितरण अधिकार (03 Power) हेतु प्रस्ताव शाला दर्पण के माध्यम से ऑन लाइन प्रेषण करने बाबत ।

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक शिविरा/ माध्य/ शालादर्पण/60304/2020/वो-2/145 • दिनांक- 03.08.2022 समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, एवं पदेन बी.आर. सी.एफ., समग्र शिक्षा। • विषय :- आहरण वितरण अधिकार (03 Power) हेतु प्रस्ताव शाला दर्पण के माध्यम से ऑन लाइन प्रेषण करने बाबत ।• प्रसंग:- शिविरा/माध्य/स्थिरी-पेंशन /03/2020

• दिनांक 22.07.2022

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि राजकीय उच्च माध्यमिक श्रेणी के विद्यालयों में संस्थाप्रधान का पद रिक्त होने अथवा लगातार लम्बे अवकाश पर होने की परिस्थिति में उस विद्यालय के आहरण वितरण अधिकार (सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-I के नियम 3(क)) हेतु प्रस्ताव सीबीईओ/जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों से निर्धारित प्रपत्र में भरकर ई-मेल द्वारा प्रेषित किए जाते हैं। उक्त कार्य को सरल एवं डिजीटीकरण करते हुए शाला दर्पण पोर्टल http://rajshaladarpan.nic.in पर आहरण वितरण अधिकार (03 Power) मॉड्यूल प्रारंभ किया गया है। सीबीईओ कार्यालय निम्नानुसार बिन्दुओं की पालना करते हुए प्रस्ताव प्रेषित करें -

1. आहरण वितरण अधिकार (03 Power) मॉड्यूल समस्त राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं सीबीईओ लॉगिन पर प्रारंभ किया गया है।
2. राजकीय उच्च माध्यमिक में संस्थाप्रधान का पद रिक्त होने पर विद्यालय में कार्यरत व्याख्याता एवं उच्च पद के अधिकारी का प्रस्ताव प्रेषित किया जाना है। संबंधित विद्यालय में व्याख्याता एवं उच्च पद के अधिकारी का पद रिक्त होने पर ब्लॉक परिक्षेत्र में निकटम राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत प्रधानाचार्य/व्याख्याता एवं उच्च पद के अधिकारी का प्रस्ताव प्रेषित किया जाना है।
3. सीबीईओ कार्यालय स्कूल स्तर से प्राप्त ऑनलाइन प्रस्ताव का भंली-भांति परीक्षण करें। प्रस्ताव में किसी भी प्रकार की खामी होने पर उसको निरस्त करते हुए पुनः लौटाने की व्यवस्था मॉड्यूल में की गई है। नियमान्तर्गत आहरण वितरण हेतु अधिकारी का चयन कर प्रस्ताव निदेशालय भिजवाने का अंतिम निर्णय/दायित्व सीबीईओ कार्यालय का होगा।
4. प्रस्तावित आहरण वितरण अधिकार हेतु चयन ऐसे अधिकारी का किया जाए जिसके पास पूर्व में किसी भी कार्यालय का आहरण वितरण अधिकार नहीं हो। नियमान्तर्गत अधिकारी उपलब्ध नहीं होने पर ऐसे अधिकारी का प्रस्ताव भेजा जा सकता है जिसके पास एक से अधिक कार्यालय का आहरण वितरण अधिकार हो परन्तु किसी भी स्थिति में प्रस्तावित आहरण वितरण अधिकारी के पास पूर्व से ही 2 से अधिक कार्यालयों का आहरण वितरण अधिकार नही होना चाहिए।
5. सीबीईओ कार्यालय शाला दर्पण पोर्टल के मॉड्यूल (03 Power) पर विद्यालय से प्राप्त प्रस्ताव में प्रस्तावित अधिकारी जिसके विरूद्ध विभागीय जाँच /चोरी-गबन आदि का प्रकरण बकाया न हो, अग्रेषित किया जाएगा।
6. **दिनांक 10.08.2022 से आहरण वितरण अधिकार हेतु प्रस्ताव शाला दर्पण मॉड्यूल द्वारा ही स्वीकार किए जाएंगे । इस तिथि बाद ई-मेल एवं ऑफलाइन प्रस्ताव स्वीकार नहीं किए जाएंगे।**
7. मॉड्यूल के माध्यम से विद्यालय एवं सीबीईओं कार्यालय अपनी लॉगिन से प्रस्ताव के स्टेट्स (status) की जानकरी ले सकते है। निदेशालय स्तर से प्रस्ताव स्वीकार होने पर आदेश की प्रति स्कूल लॉगिन पर मॉड्यूल के माध्यम से उपलब्ध होगी।

संलग्न :-03 Power Module(User Manual)

गौरव अग्रवाल (आई.ए.एस), निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर

प्रभाग–4, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग, राजस्थान, अजमेर

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Monthly telecast schedules for 12 TV channels (One Class, One Platform) of PM eVidya

August 2022

S.No.	Class	Link	QR Code	S.No.	Class	Link	QR Code
1.	Class I	https://bit.ly/3S0jcNg		7	Class VII	https://bit.ly/3OHTrhX	
2	Class II	https://bit.ly/3zESIKj		8	Class VIII	https://bit.ly/3batKsL	
3	Class III	https://bit.ly/3Bpj7Nk		9	Class IX	https://bit.ly/3oGsuAs	
4	Class IV	https://bit.ly/3OEp6AP		10	Class X	https://bit.ly/3zhSXJw	
5	Class V	https://bit.ly/3OKWCVX		11	Class XI	https://bit.ly/3JqVaaB	
6	Class VI	https://bit.ly/3vkX46y		12	Class XII	https://bit.ly/3Je5KBj	

युवाओं के लिए जरूरी है...स्वस्थ प्रतिस्पर्धा

● राजकुमार बुनकर

युवाओं के लिए आज का युग प्रतिस्पर्धाओं से भरा हुआ है। उसे हर जगह प्रतिस्पर्धा का सामना करना होता है, आखिर हो भी क्यों न? क्योंकि बात चाहे किसी उच्च संस्थान में प्रवेश लेने की हो या फिर नौकरी के लिए किसी प्रतियोगी परीक्षा की, हर जगह सीटें कम और प्रतियोगी ज्यादा। आवेदित पदों पर उसमें शामिल होने वाले आवेदकों की संख्या कई गुणा अधिक होती है। ऐसे में प्रतिस्पर्धा का होना इस मशीनी युग में बहुत लाजिमी है। मैक्स वेबर ने भी लिखा है कि 'प्रतिस्पर्धा एक शान्ति पूर्ण संघर्ष है।' इसलिए कहना चाहूँगा कि चलो जिन्दगी में एक नई शुरुआत करते हैं, जो औरों से थी प्रतिस्पर्धा वह खुद से करते हैं।

विद्वानों की राय के अनुसार लक्ष्य को पाने के लिए प्रतिस्पर्धा का माहौल जरूरी है। यह युवाओं और किसी भी व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देता है, उनमें जज़्बा पैदा करता है। जीवन में अपने किसी भी लक्ष्य को हासिल करने के लिए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा अति आवश्यक है। अमूमन यह देखा जाता है कि प्रतिस्पर्धा में युवा बहुत सारी अहम चीजों को दरकिनार कर देते हैं, उनका मकसद सिर्फ स्वयं की सफलता प्राप्त करना होता है। इस सफलता को हासिल करने के फेर में वह कई गलतियां कर बैठते हैं। उसका अपनों से नाता टूट जाता है। प्रतियोगी होने की अपनी इस आदत के कारण वह अलग - थलग पड़ जाता है। वह जितना चाहता है , सर्वश्रेष्ठ रहना चाहता है। उसे दूसरों की जीत या खुशी बर्दाश्त नहीं होती है। जिनका खामियाजा उन्हें ता-उम्र झेलना पड़ता है। इसलिए जरूरी है कि प्रतिस्पर्धा के वक्त कुछ बातों पर विशेष ध्यान दिया जाए। अपने लक्ष्य पाने के लिए प्रतिस्पर्धा के वक्त निम्न बातों का ध्यान रखना बेहद जरूरी है। इससे माहौल स्वस्थ और सुखद बनता है और सफलता प्राप्ति आसान हो जाती है।

1. प्रतिस्पर्धा स्वस्थ होनी चाहिए - लक्ष्य पाने के लिए प्रतिस्पर्धा का माहौल होना जरूरी है लेकिन ध्यान रहे यह प्रतिस्पर्धा स्वस्थ हो। इसमें प्रतिस्पर्धी को मिटा कर या दबा कर आगे बढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। अक्सर युवा स्वयं को आगे बढ़ने के लिए अपने साथी प्रतियोगियों को नीचा दिखाने की कोशिश हैं। यह बहुत ही गलत विचारधारा है। मैं सफल होऊँ, यह भाव होना चाहिए। पर केवल मैं ही सफल होऊँ यह नहीं होना चाहिए। दूसरा आगे न बढ़े, दूसरे को नीचा दिखाने का भाव बिल्कुल भी नहीं होना चाहिए। ऐसा करने से युवाओं में नकारात्मक प्रवृत्ति बढ़ने लगती है। नकारात्मक प्रतिस्पर्धा कई बार बहुत घातक साबित होती है। इससे कई बार युवाओं को अवसाद में जाते भी देखा है।

2. युवाओं के लिए तनाव है घातक– अधिकांशतः यह देखने में आता है कि युवा प्रतिस्पर्धा के समय तनाव और दबाव में फंस जाते हैं। यह स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक होता है। इसका प्रतिकूल प्रभाव मानसिक व शारीरिक दोनों पर होता है। युवाओं के साथ-साथ उनके माता-पिता और शिक्षकों की भी उनसे बहुत-सी उम्मीदें होती हैं। इन सब उम्मीदों से युवाओं पर अत्यधिक दबाव बनता है। स्कूल से ही अपने लाडले का बेस्ट रिपोर्ट कार्ड देख कर पैरेंट्स बहुत खुश होते हैं और खराब परफॉर्मेंस को देख कर नाखुश। शिक्षक भी निराश होते हैं। दोस्त भी नकारात्मक छवि बनाना शुरू कर देते हैं। ये सारी चीजें नहीं होनी चाहिए। इससे बच्चे में दूसरों के साथ मिलकर काम करने और दोस्तों से सीखने की कोशिश करना कठिन हो जाता है। अभिभावकों को समझना चाहिए की सफलता और असफलता एक ही सिक्के के दो पहलू है। अगर किसी कारणवश बच्चों को एक बार सफलता न मिले तो उस पर तनाव लादने की बजाए उन पहलुओं पर गौर करें, जहाँ गलतियां हुई हैं और उन गलतियों से सबक लेकर फिर से लक्ष्य पाने की तरफ कदम बढ़ाएं।

3.समावेशी की भावना हो – प्रतिस्पर्धा के वातावरण में अपने आप को अपने सहपाठियों, प्रतिद्वंदियों से अलग-थलग करके लक्ष्य को प्राप्त करना उचित नहीं है यदि युवाओं को प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ करना हो तो अपने दोस्तों और शिक्षकों के बीच संवाद कायम रखना चाहिए। उनके साथ अपनी समस्याओं पर चर्चा करनी चाहिए। अपने दोस्तों की अच्छाइयों से सीखें और अपनी उन खामियों पर काबू पाएं, जो लक्ष्य पाने में बाधक बन रही हैं। अतः लक्ष्य को प्राप्त करना है तो सबसे पहले युवाओं को अपने सहभगियों से समावेशी भाव रखने चाहिए।

4. प्रतिस्पर्धा हो, प्रतिद्वंद्विता नहीं – युवाओं को अपने जीवन में सफलता पाने और कुछ कर गुजरने के लिए प्रतिस्पर्धा में शामिल होने का मतलब यह नहीं की अपने सहभागियों को अपना प्रतिद्वंद्वी बना लें। और उनसे तुलना करके अपने स्वयं को हीन या श्रेष्ठ समझने लगे। ऐसी चीजें नकारात्मक भावना की ओर ले जाती है। प्रतिस्पर्धा या प्रतियोगिता कोई युद्ध नहीं है, जिसमें सामने वाला आपका दुश्मन हो। प्रतिद्वंद्वी मानने की होड़ के कारण ही कई बार युवा अपने दोस्त या सहकर्मी के बारे में बुरे ख्यालों से भर जाते हैं। उसे किसी न किसी तरह का नुकसान पहुँचाने पर आमादा हो जाते हैं। ऐसा करना युवाओं और उसके सहयोगी दोनों के लिए हानिकारक है।

5. निगाह लक्ष्य पर हो – युवाओं को किसी भी प्रतिस्पर्धा में शामिल होने के बाद अपने लक्ष्य पर निरंतर ध्यान केंद्रित किए रखना अति आवश्यक है। प्रतिस्पर्धा नहीं होगी तो पहले से और अच्छा करने का जज्बा पैदा नहीं होगा। युवा ढंग से तैयारी नहीं कर पाएगा। कुछ पाने की महत्त्वाकांक्षा भी कम हो जाएगी। ऐसे में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बेहद जरूरी है। लेकिन इसके साथ ही सबसे जरूरी है , प्रतिस्पर्धा में शामिल होकर लक्ष्य पर ध्यान रखते हुए उसे पाने का प्रयास करना। इसका अभी हाल ही में जीता जागता उदाहरण देखें तो अवनी लेखरा के रूप में देख सकते हैं।

6.सूचना और ज्ञान हासिल करें– आज के युवाओं को लक्ष्य के साथ उसे पाने के लिए सूचना और ज्ञान से अपने स्वयं को परिपूर्ण करना भी जरूरी है। सूचना और ज्ञान के बलबूते ही युवा धीरे-धीरे अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होता है। युवाओं को अपने उम्रदराज अनुभवी लोगों का उचित मार्गदर्शन लेना भी जरूरी है। सूचना और प्राप्त ज्ञान का उचित दिशा में ही उपयोग करना चाहिए। कभी कभी युवा मार्ग से भ्रमित हो जाता है जिससे ज्ञान और सूचनाएं बेकार चली जाती है।

प्रधानाचार्य
रा. उ. मा.वि. बिजौरी बड़ी,
कुशलगढ़, बांसवाड़ा
मो. - 9001311561

Textbook Activity: Pre reading Expressions

• Dr. Ram Gopal Sharma

Effective classroom communication is the basis of good educational outcomes. A positive relationship between teachers and students is a result of better communication and contributes to an environment that supports natural language acquisition. Students' communication is also important. Natural exposure of language can encourage, model and coach effective classroom communication. These expressions offer an opportunity for students to learn English naturally.

Ensuring everybody has the book

- Give out the books, please.
- Pass out the worksheets.
- Pass these (to the) back.
- Take one and pass them on.
- Get the books out of the cupboard and give them out.
- Take the books off the shelf/out of the bookcase.
- Fetch the dictionaries from the teachers' room/staff room.
- Has everybody got a book?
- Have you all got a copy of the exercise?
- Is there anybody without a book?
- Is there anybody who hasn't got a copy?
- Can everybody see (a copy of) the text/passage?
- Where's your book, Jyoti?

Don't forget it next time

- Remember it (for) next time.
- Make sure you bring it on Friday.
- Be sure to remember it next Monday.
- Don't forget their book next time.

One book between two

- One between two
- One book to every three pupils
- Three pupils to each book
- There's one dictionary/set of pictures for each group.
- You will have to share with Atif.
- Could you share (with Jatin), please?
- These are enough for ten pupils.
- Share with Mukul this time.
- I'm afraid I haven't got enough (copies) to go round.
- I'm afraid there aren't enough for everybody.

Note the reduced forms:

- Hands up! = Up with your hands!
- Books out! = Out with your books!
- Books away! = Away with your books!

Notice the prepositions:

- Open your books at page 56.
- The exercise is on page 56.
- I want you to turn to page 56.

Page numbers

- 1-99: as a full number, e.g. 32thirty-two
- 100-: either as a full number (129one hundred and twenty-nine) or, for clarity, as individual numbers (one-two-nine)
- 167 = one hundred and sixty-seven
- The '0' in numbers like 107 can be pronounced [ou]

Books out, Find Page

- **Get your books out.**
- Take out your workbooks.
- Books out, please!
- You'll need your workbooks.
- Out with your books, please.
- Open your books at page 27.
- Take out your books and open them at page 123/lesson 12.
- Open your books, please.
- You'll find the exercise on page 206.
- Look at page 19.
- Look at exercise 5A on page 46.
- Have a look at the diagram on page 25.
- It's somewhere near the front/back/middle of the book.
- It's on the inside cover at the back.
- The name is on the back cover/the title page.
- Now turn to page 16.
- Turn over
- Turn over the page.
- Over the page.
- Turn to the next page.
- Next page, please
- Let's move on to the next page.
- I want you to turn on to page 134.
- Turn back to page 16.
- Turn back to the previous page.
- Now look back at the last chapter.
- Keep one finger in the vocabulary list at the back.
- You can refer to the map/list on page 216.
- Refer back to the grammar notes on page 23.
- Look across at the other side.
- Use the index at the back of the book.

Position on page

These phrases show position according to top and bottom of the page.

- Five lines down = five lines from the top
- two lines up = two lines from the bottom
- When used adjectivally, the words 'left' and 'right' require the ending -hand:
- On the left / the left-hand side on the right / the right-hand page
- The bottom line

- The middle paragraph
- The top row
- It's at the bottom of the page.
- The picture at the top of the page/at the very top.
- The line in the middle of the page.
- It's somewhere near the top/bottom (of the page).
- It's towards the bottom/end.
- It's about halfway down.
- It's in the very middle of the page.
- About three-quarters of the way down.
- The top/bottom/middle line
- It's ten lines from the top/bottom.
- Ten lines down/up
- (The) tenth line from the top/bottom
- (The) tenth line down/up
- (The) third row down/up
- It's on the left.
- It's on the right.
- The left-hand side/the right-hand side
- It's in the top left-hand corner.
- It's in the bottom right-hand corner.
- It's in the left-hand margin.
- Look at the right-hand column.
- (The) third column (from the left/right)
- The center/middle column
- The shaded area on the right
- Look at the colored box underneath.

Paragraph three, line two

- (The) third paragraph, (the) second line/sentence
- (The) last line of the first paragraph
- (The) last line in the second paragraph
- The paragraph beginning/starting/ending 'he said . .
- (The) last but one line/word in paragraph two
- (The) second/third to last word in line 5
- Line five, (the) seventh word
- (The) third line, (the) fourth word (along)
- About the middle of line 12

A few lines further on

- Five lines further down/up
- Not the next line, but the one after that
- Not the previous line, but the one before that
- (The) next but one sentence, (the) third word
- Third paragraph or the third paragraph
- Fifth line or the fifth line
- Have you found the place?
- Do you know where we are?
- Have you all found the place?
- Is there anybody who (still) hasn't found the place?
- Show him/her the place
- Help him/her/name find the place

Collecting

- Stop working now.
- Would you stop writing, please?
- Put your pens/pencils down.
- I'm afraid I'll have to stop you now.
- Time is up. Stop writing.
- I think you've had long enough on this.
- I'm afraid it's time to stop.
- Would you finish off the sentence you are on?

Close your books

- All of you close books, please.
- Turn your books over.
- Put your books face down.
- Put your books away now.
- I don't want to see any books open/on your desks.
- Close your books.
- Collect the sheets and put them away.
- Pass the sheets to the front (of each row).
- Don't forget to put/write your names on them.
- Could the first person in each row collect the books, please?

Hand in your papers as you leave

- Leave your essays/sheets/tests on the desk as you go out.
- Have you all handed in your tests?
- Is there anyone who hasn't returned the test?

Miscellaneous Expressions

- He's a walking encyclopedia of ...
- Photography is his subject.
- He knows it from A - Z.
- He's an authority on ...
- It's a good thing (that)..
- Fortunately/ Luckily,
- As luck would have it, ...
- That was a stroke of luck.
- It's lucky...
- It's very/most fortunate (that)...
- It must be your lucky day!
- He's short of cash / hard-up.
- She's in debt / overdrawn / bankrupt.
- Below the poverty line
- Thank God (for that)!
- What a relief!
- I'm so relieved to hear that.
- That's a weight off my mind.
- You've no idea what a relief it is to hear it.
- What a stroke of luck!
- All's well that ends well.
- He is a friend of mine.
- I'm quite sure...
- I'm absolutely positive...
- I'm fairly / quite certain...
- It must be right.
- You wouldn't believe what he knows about ...

Chief Block Education Officer
Reodar (Sirohi)

प्रतिभाएँ, जिनकी उपलब्धि पर हमें गर्व है...

मेधावी विद्यार्थियों से हुई बातचीत के कुछ अंश

विद्यार्थी का नाम– निशा कुमारी
प्राप्तांक एवं प्रतिशत– 492 , 98.40%
कक्षा, संकाय एवं रोल नं. – बारहवीं, कला वर्ग, 3019846
विद्यालय का नाम– राउमावि, कैर , बयाना भरतपुर
पिता का नाम– हुकम सिंह
माता का नाम– चन्दुवती
शिविरा :–माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर द्वारा आयोजित परीक्षा 2022, कक्षा 12 कला संकाय की परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर आपको शिक्षा विभाग की तरफ से बधाई।

निशा :– जी बहुत–बहुत आभार।
शिविरा 1. आपका परीक्षा में लिखने का माध्यम क्या था ?
निशा– हिन्दी
शिविरा 2 आपने किन वैकल्पिक विषयों का चयन किया ?
निशा– राजनीति विज्ञान, भूगोल और हिन्दी साहित्य
शिविरा 3. इन वैकल्पिक विषयों का आधार क्या रहा ?
निशा– संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा पास करना
शिविरा 4. क्या आपके यह अंक आशानुकूल हैं ?
निशा– जी हाँ, मेरे प्राप्तांक आशानुरूप है।
शिविरा 5. परीक्षा तैयारी हेतु आपने क्या योजना बनाई ?
निशा– पेपर पैटर्न से तैयारी और समय का सदुपयोग सुनिश्चित किया।
शिविरा 6. क्या आप इस उपलब्धि से संतुष्ट हैं ?
निशा– नहीं, क्योंकि मुझे मेरे जीवन में और भी उपलब्धियां हासिल करनी है।
शिविरा 7. आप भविष्य में क्या बनना चाहती हैं ?
निशा– मैं भविष्य में प्रशासनिक अधिकारी बनकर सबके लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनना चाहती हूँ।
शिविरा 8. आप अन्य साथियों को क्या संदेश देना चाहती हैं ?
निशा– मैं अन्य साथियों को यही संदेश देना चाहती हूँ कि समय का सदुपयोग करें।
"EDUCATION IS THE KEY TO SUCCESS"

(वरिष्ठ सम्पादक)

विद्यार्थी का नाम– भूमि बोथरा
प्राप्तांक एवं प्रतिशत– 591, 98.50%
कक्षा एवं रोल नं. – दसवीं (1337331)
विद्यालय का नाम– आर.एन.बी. राजकीय बालिका उच्च माध्य.विद्यालय, गंगाशहर, बीकानेर
पिता का नाम–प्रेमसुख बोथरा
माता का नाम–शान्ति देवी बोथरा

शिविरा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर द्वारा आयोजित कक्षा 10 की परीक्षा में शानदार सफलता पर आपको शिक्षा विभाग की तरफ से बधाई।
भूमि–जी धन्यवाद ।

शिविरा 1. क्या आपके ये अंक आपकी आशा के अनुरूप थे ?
भूमि– जी हाँ, प्राप्त अंकों मेरी उम्मीद के अनुरूप हैं।
शिविरा 2 इस उपलब्धि पूर्ण सफलता से आपको कैसा महसूस हो रहा है ?
भूमि– मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।
शिविरा 3. परीक्षा तैयारी हेतु आपकी क्या योजना रही ?
भूमि–प्रतिदिन का एक लक्ष्य बनाया और उसके अनुरूप अध्ययन किया। मैंने प्रत्येक टॉपिक को सही ढंग से पढ़ा और समझा।
शिविरा 4. इस उपलब्धि में आपके परिवार एवं शिक्षकों की क्या भूमिका रही ?
भूमि– परिवार एवं शिक्षकों का सहयोग बहुत अच्छा था।
शिविरा 5. आप अपनी सफलता का श्रेय किसे देना चाहती हैं ?
भूमि– माता–पिता, शिक्षकों एवं सहपाठियों को।
शिविरा 6. अध्ययन के दौरान आपको किन कठिनाईयों का सामना करना पड़ा ?
भूमि– कोविड–19 के समय में विद्यालय अध्ययन अनेक बार बाधित हुआ। इस कारण शिक्षकों के साथ संवाद नहीं हो पाया।
शिविरा 7. भविष्य में आप क्या बनना चाहती हैं ?
भूमि– इंजीनियर
शिविरा 8. आप अन्य साथियों को क्या संदेश देना चाहती हैं ?
भूमि– कोशिश करने वालों की हार नहीं होती। इसलिए मेहनत करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करें।

(वरिष्ठ सम्पादक)

(नवीन संशोधित गाइडलाइन सत्र 2022-23 से)

नेशनल मीन्स कम मेरिट स्कॉलरशिप स्कीम (NMMS)

• रोहिताश

परिचय - नेशनल मीन्स कम मेरिट स्कोलरशिप (NMMS) एक केन्द्र प्रायोजित योजना है। इसकी शुरूआत मई 2008 में की गई थी। स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इसका संचालन एवं क्रियान्वयन किया जाता है। निदेशक, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (RSCERT), उदयपुर इसके राज्य नोडल अधिकारी हैं।

अत: राज्य स्तर पर संचालन और मॉनिटरिंग राराशैअप्रप. उदयपुर द्वारा की जाती है। समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मुख्यालय) इसके जिला नोडल अधिकारी है।

उद्देश्य– एनएमएमएस छात्रवृत्ति का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को अपनी उच्च माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा को पूरा करने के लिए प्रेरित करना है, ताकि कक्षा 8 के बाद स्कूलों की ड्रॉप आउट दर कम हो सके। प्रत्येक वर्ष कक्षा 8 में अध्ययनरत विद्यार्थी की राज्य स्तर पर चयन परीक्षा होती है। इस परीक्षा में चयन बाद कक्षा 9 से 12 वीं तक के नियमित राजकीय विद्यालय व स्थानीय निकाय द्वारा संचालित विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी NMMS छात्रवृत्ति को प्राप्त करते हैं।

छात्रवृत्ति राशि – एनएमएमएस में चयनित विद्यार्थियों को कक्षा 9 से 12 वीं तक नियमित अध्ययनरत रहने पर नियमानुसार रुपए 12000 प्रति वर्ष की दर से छात्रवृत्ति मिलती है। एनएमएमएस योजना के तहत छात्रवृत्ति की राशि का भुगतान स्टेट बैंक ऑफ इडिया दिल्ली द्वारा एक मुश्त किया जाता है। राशि को सीधे ही विद्यार्थियों के खातों में PFMS द्वारा स्थानांतरित किया जाता है। प्रत्येक राज्य और केन्द्र शासित प्रदेशों को छात्रवृति की संख्या आवंटित की गई है।

पात्रता मापदंड - 1. कक्षा 8 में नियमित अध्ययनरत विद्यार्थी।

2. अभिभावक/माता-पिता की सभी स्रोतो से वार्षिक आय राशि 3.5 लाख से अधिक नहीं होनी चाहिए।

कौन पात्र नहीं है-

1. जवाहर नवोदय विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय, सैनिक स्कूल के छात्र ।
2. राज्य सरकार द्वारा संचालित आवासीय विद्यालयों में पढने वाले छात्र जहाँ बोर्डिंग, लॉजिंग और शिक्षा जैसी सुविधाएँ प्रदान की जाती है।
3. निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र ।
4. राजकीय छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थी ।

पात्रता व छात्रवृत्ति की निरन्तरता हेतु न्यूनतम उत्तीर्णांक–

क्र. सं.	कक्षा	न्यूनतम प्राप्तांक
1	7	55 प्रतिशत
2	8	55 प्रतिशत
3	9	स्पष्ट उत्तीर्ण
4	10	60 प्रतिशत
5	11	स्पष्टउत्तीर्ण

न्यूनतम उत्तीर्णांक में SC व ST को 5 प्रतिशत की छूट है। न्यूनतम उत्तीर्णांक से कम प्राप्तांक होने पर अभ्यर्थी अपात्र हो जाएगा। NMMS परीक्षा के लिए आवेदन-स्टेट नोडल राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उदयपुर द्वारा हर वर्ष पात्र विद्यार्थियों से आवेदन मांगे जाते हैं। परीक्षा के लिए संस्थाप्रधान को ऑनलाइन आवेदन शालादर्पण के माध्यम से करना होता है। यह परीक्षा केवल एक ही बार होती है तथा छात्रवृत्ति चार वर्षों तक मिलती है।

NMMS आवेदन-पत्र के लिए आवश्यक दस्तावेज–

कक्षा 7 की अंकतालिका/प्रमाण पत्र (55 प्रतिशत प्राप्तांक)। जाति प्रमाण पत्र । माता-पिता का आय प्रमाण-पत्र । विकलांगता प्रमाण पत्र (यदि लागू होता है) राजस्थान का मूल निवास प्रमाण-पत्र एवं आधार कार्ड ।

महत्त्वपूर्ण तिथियां–

1. एन एम एम एस परीक्षा की विज्ञप्ति सामान्यत: सितंबर माह में प्रकाशित होती है
2. परीक्षा तिथि - एन एम एम एस परीक्षा सामान्यत: हर वर्ष नवंबर माह में आयोजित की जाती है
3. परीक्षा परिणाम- एन एम एम एस परीक्षा का परीक्षा परिणाम सामान्यत: फरवरी माह में ज घोषित किया जाता है

परीक्षा पैटर्न – पात्र विद्यार्थियों के चयन के लिए राज्य स्तर पर एक चयन परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इस चयन परीक्षा के प्रश्न पत्र में दो भाग होते है। मानसिक योग्यता परीक्षण (MAT) व शैक्षिक योग्यता परीक्षण (SAT)। दोनों भागों में कुल 180 प्रश्नों (प्रत्येक में 90) को हल करने के लिए 180 मिनट का समय निर्धारित है। विशेष आवश्यकता वाले परीक्षार्थियों को टेस्ट पूरा करने के लिए 30 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जाता है। इस परीक्षा में कक्षा 7 व 8 के स्तर के प्रश्न पूछे जाते हैं। मानसिक योग्यता परीक्षण में 90 बहुविकल्पी प्रश्न शामिल होंगे जो शाब्दिक और अशाब्दिक, मेटा संज्ञानात्मक क्षमताओं जैसे तर्क और आलोचनात्मक सोच का परीक्षण करते हैं, तथा सदाश्यता, वर्गीकरण, संख्यात्मक श्रृंखला, पैटर्न धारणा और छुपी हुई आकृति आदि पर आधारित होते हैं। शैक्षिक योग्यता परीक्षण में 90 बहुविकल्पी प्रश्न विज्ञान, सामाजिक विज्ञान व गणित विषय के होते हैं।

परीक्षा परिणाम– चयन परीक्षा के बाद सभी आवेदकों का परिणाम घोषित किया जाता है। NMMS योजना में राजस्थान राज्य का कोटा (छात्रवृति संख्या) 5471 है। जिसका जिला और श्रेणीवार वर्गीकरण किया हुआ है। अत: छात्रवृत्ति की पात्रता के लिए इसकी मेरिट में आना आवश्यक है। आवेदकों को चयन परीक्षा में न्यूनतम 40 प्रतिशत अंक प्राप्त करने है। SC व ST श्रेणियों के आवेदकों को इस एनएमएमएस

छात्रवृत्ति लाभ पाने के लिए न्यूनतम कट ऑफ अंक 32 प्रतिशत हैं। दिव्यांग श्रेणी के आवेदकों को अपनी श्रेणी में 3 प्रतिशत आरक्षण देय है।

छात्रवृत्ति का श्रेणी वार वर्गीकरण

क्र.सं.	वर्ग	प्रतिशत	छात्रवृत्तिसंख्या	दिव्यांगविद्यार्थी
1	अनु. जाति	16	875	26
2	अ. ज. जाति	12	656	20
3	सामान्य	72	3940	118
	योग	100	5471	164

परीक्षा में चयन के बाद करणीय कार्य -

1. छात्रवृत्ति के लिए आवेदन– परीक्षा में चयनित विद्यार्थियों को कक्षा 9 में प्रवेश लेने के बाद नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल (NSP) पर पंजीकरण कराना होगा तथा कक्षा 12 तक हर वर्ष नवीनीकरण कराना होगा। यह कार्य विद्यार्थी अथवा अभिभावक का होता है। विद्यार्थी का विवरण विद्यालय रिकॉर्ड, बैंक खाता और आधार कार्ड में एक समान होना चाहिए। कोई भी स्पेलिंग मिसमैच नहीं होनी चाहिए।

2. सत्यापन – नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल (NSP) पर विद्यार्थी की लॉग-इन आईडी से पंजीकरण या नवीनीकरण करने के बाद पहले सम्बन्धित संस्थाप्रधान तत्पश्चात जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मुख्यालय) द्वारा सत्यापन किया जाता है। पंजीकरण /नवीनीकरण और दोनों स्तर के सत्यापन के पश्चात छात्रवृत्ति की राशि डीबीटी के माध्यम से अभ्यर्थियों के खाते में जमा होती है। नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल पर किसी भी वर्ष रजिस्ट्रेशन या नवीनीकरण नहीं करने पर विद्यार्थी आगामी वर्षों के लिए भी अपात्र हो जाता है।

नोट - क्योंकि एन एम एम एस केंद्र-प्रायोजित छात्रवृत्ति योजना है अतः यह छात्रवृत्ति नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल की गाइड लाइन के अनुसार मिलती है। अद्यतन जानकारी के लिए नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल देखते रहें।

सहायक प्रोफेसर
एन एम एम एस प्रकोष्ठ
आरएससीईआरटी, उदयपुर
मो.-9828474829

सफलता के स्वर्णिम सिद्धान्त

कृष्णचन्द्र टवाणी

यह सृष्टि,
यह मानव जीवन है
दुर्लभ वरदान।
इन्हे सार्थक करना सीखो
कहते सन्त सुजान।।
दूर करो अपने शरीर के
दुर्गुण दोष तमाम।
स्वस्थ और पुरुषार्थी बनकर
करो पुण्य काम ।।

यह दुर्लभ मानव जीवन अनमोल है। अनेक उत्तम कर्मों के संयोग से यह मानव जीवन प्रभु ने हमें प्रदान किया है। इसे सार्थक, सफल, स्वस्थ एवं सुन्दर बनाने के लिए श्रेष्ठ कार्य करने चाहिए। व्यक्ति के सात्विक गुण ही उसके व्यक्तित्व की कसौटी होती है, क्योंकि सात्विक गुण ही उसके चरित्र का निर्माण कर वाणी में विनम्रता, व्यवहार में सरलता एवं विचारों में शुचिता उत्पन्न करते है। जीवन में सफलता के लिए निम्न स्वर्णिम सूत्रों को अवश्य अपनाना चाहिए-

सूर्योदय से पूर्व उठिये– प्रातः काल सूर्योदय से पहले उठना चाहिए तथा दोनों हथेलियों का दर्शन करते हुए। निम्न श्लोक का उच्चारण करना चाहिए, ताकि आपका पूरा दिन आनंदपूर्वक व्यतीत होवे।।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम् ।।

अन्तर्मन से प्रार्थना करिये- दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर प्रतिदिन कुछ समय प्रभु सुमिरन, प्रार्थना, आराधना, पूजा, स्तुति के लिए अवश्य देना चाहिए।एकाग्रचित से की गई प्रार्थना से शांति तथा आनंद का अनुभव होता है और प्रभु हमें सद्बुद्धि प्रदान करते है।

नित्य व्यायाम करिए- अपने शरीर को निरोग एवं स्वस्थ रखने के लिए नियमित प्रातः भ्रमण, व्यायाम, आसन, प्राणायाम, ध्यान आदि से दिन की शुरूआत करनी चाहिए।

समय का सदुपयोग करिए - जीवन का हर पल कीमती है। बीता हुआ समय वापिस नहीं आता । निश्चित समय पर प्रत्येक कार्य को पूरा करिए । समय का पूरा सदुपयोग करने वाले को ही सफलता, सम्मान, सुख समृद्धि सभी प्राप्त हो जाते हैं ।अपने कार्यों की दिनचर्या बनाकर हरेक कार्य को समय के अनुसार पूरा करना चाहिए।

कर्त्तव्य पालन करिए- लोक कल्याण हेतु समाज व परिवार के लिए अपने कर्त्तव्य का सदैव पालन करिए। चाहे कैसी भी परिस्थिति हो अपने कर्त्तव्य से विमुख नहीं होवें। अपने माता-पिता, गुरु, पुत्र, पुत्री, भाई, मित्र, पड़ोसी आदि के प्रति जो व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का पालन करता है वही

जीवन में सफल होता है।

साहसी बनिए- संसार में कोई ऐसा कार्य नहीं है जो व्यक्ति नहीं कर सके। विश्व में जितने भी आधुनिक आविष्कार हुए है, वह साहस व लगन के कारण ही संभव हुए है महाभारत में लिखा है-उद्यम, साहस, धैर्य, शक्ति युक्ति और पराक्रम ये छः बातें जहाँ हो वहाँ ईश्वर सहायक होता है।

महत्वाकांक्षी बनिए- आगे प्रगति करने की इच्छा ही महत्त्वाकांक्षा है अर्थात निरंतर प्रगति के शिखर की ओर बढ़ना, इसके लिए कठोर परिश्रम की आवश्यकता होती है। बार-बार असफल होने पर भी हिम्मत नहीं हारना चाहिए। कहा है-

करत करत अभ्यास के
जड़मति होत सुजान ।
रसरी आवत जावत से
सिल पर पड़त निशान।।

महत्त्वकांक्षी व्यक्ति अपने बुद्धि कौशल, चतुराई, परिश्रम, धैर्य तथा सतर्कता से अवश्य सफल होते हैं। सदा हँसते मुस्कराते रहे- जो व्यक्ति सदा हँसते मुस्कराते हुए रहता है वह कभी तनावग्रस्त नहीं होता। किसी शायर ने कहा है- 'हँसना, जिन्दा दिली का काम है, रोनी सूरत क्या ख़ाक जिया करते हैं।' हँसना कोई मामूली बात नहीं है क्योंकि हँसने वाले का सब साथ देते हैं, रोने वाले के कोई पास नहीं जाता । स्वास्थ्य के लिए भी डॉक्टर यही सलाह देते हैं-

खाने को आधा करो, पानी को दुगुना ।
व्यायाम को तिगुना करो, हँसी को चौगुना ।।

इसलिए कई शारीरिक मानसिक रोगों के लिए हँसना एक वैकल्पिक दवा के रूप में स्थापित होता जा रहा है । हँसना स्वास्थ्य के लिए भी उत्तम औषधि है ।

कर्मशील बनिए- कर्म ही सबसे बड़ा धर्म है। जब भीष्म पितामह बाणों की शैय्या पर लेटे हुए थे, तब युधिष्ठिर उनके पास गया और हाथ जोड़कर पूछा कि -'' हमें एक शब्द में बताइये कि सबसे बड़ा धर्म क्या है ?'' उस समय भीष्म पितामह ने कहा ''सबसे बड़ा धर्म है कर्म, कर्म से ही धरती जीने योग्य बनी है ।'' कार्लाइल का कहना है कि -'कर्म करना ही जीवन है और चुप रहना ही मृत्यु।' महान दार्शनिक फ्रायड ने कहा कि -'कर्म ही सच्ची पूजा है।' इसलिए कर्मशील बनिए। अतः सदैव कर्मशील व पुरुषार्थी व्यक्ति की ही सफलता पाँव चूमती है। संत तुलसीदास जी ने भी मानस में लिखा है-

करम प्रधान विश्व करि राखा,
जो जस करई सो फलु चाखा ।
(मानस-2/218/4)

स्वयं को पहचानिए- आपके अंदर ही सब गुण है । आपके अंदर ही सब शक्तियाँ है । आपके अंदर ही सेवा करने का साहस छिपा हुआ है। अपने आप पर भरोसा कीजिए। दूसरों के कहे अनुसार मत चलिए । संसार के श्रेष्ठतम कार्य वहीं मनुष्य कर सकते हैं जो अपनी बुद्धि पर भरोसा करके उचित निर्णय लेने की कला में निपुण होते हैं।अतः अपने मन में सदैव आत्मविश्वास बनाए रखिए।

ईश्वर में दृढ़ विश्वास रखें - सर्वशक्तिमान प्रभु सदैव सबका भला करते है यह दृढ़ विश्वास जिसके हृदय में होता है वो कभी असफल नहीं होता। प्रभु मेरे साथ है वो जो करता है अच्छा ही करता है। अपने इष्ट गुरु, माता-पिता को सदैव स्मरण करके प्रणाम करने से प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है । यदि आपका ईश्वर माँ भरोसा नहीं है तो पूरी दुनिया के भरोसे के बाद भी आप असफल रहेंगे।

चिंता को त्यागें- अपने बीते हुए समय को अथवा दुःख का स्मरण करने में समय नष्ट नहीं करें। वर्तमान में क्या करना है इसकी योजना बनाकर सदैव कार्यरत रहना ही जीवन में सफलता के लिए बहुत आवश्यक है। विद्वानों का कहना है- 'बीते को याद न कर, वर्तमान को बर्बाद न कर, भविष्य की फरियाद न कर' कहावत है, 'चिन्ता, चिता समान है।' अग्नि तो मृत शरीर को जलाती है किन्तु चिंता जीवित शरीर को भी भस्म कर देती है।

जीवन का लक्ष्य बनाएँ- जीवन का लक्ष्य, उद्देश्य निश्चित कर उसे प्राप्त करने वाला व्यक्ति ही जीवन को सार्थक बना सकता है । उद्देश्य के बिना व्यक्ति का जीवन कोई महत्त्व नहीं रखता और वैसे ही जैसे बिना पतवार के नाव लक्ष्य तक पहुँचने में आपके मार्ग में अनेक बाधाएँ भी आना स्वाभाविक है । बाधाओं से निराश न होवें, न उनके आगे झुकें। ईश्वर पर आस्था तथा अपने आत्मविश्वास से इन विघ्न बाधाओं पर विजय प्राप्त करें ।

बुद्धि को स्थिर रखिए- बुद्धि की स्थिरता भी सफल और सार्थक जीवन के लिए विशेष महत्व रखती है। मन में उठने वाली सभी शुभ-अशुभकामनाओं को त्यागे बिना बुद्धि स्थिर नहीं रह सकती है। मन चंचल होता है स्वार्थ बुद्धि से और स्वार्थ बुद्धि का जनक भी मन ही है। जहाँ स्वार्थ है वहाँ सदा तू-तू, मैं-मैं होती है । जहाँ निःस्वार्थ भावना है वहाँ ही परस्पर प्रेम, स्नेह होता है। इसलिए बुद्धि को स्थिर रखकर कार्य करेंगे तभी आपका जीवन सफल एवं सार्थक होगा।

प्रसन्नता पूर्वक कार्य करें - जो चिढ़कर या कुढ़कर कार्य करता है उसका कार्य कभी अच्छा नहीं होता है। अपितु अपने में नीरसता उपलब्ध करता है जो गाते-गुनगुनाते हँसते-मुस्कराते कार्य करते हैं उनका कार्य सफल होता है।इसलिए जो भी कार्य करें प्रसन्नता पूर्वक करें । चाहे कार्य छोटा ही क्यों न हो ! क्रोध में मौन रहे जीवन में सफलता के लिए हमें परिवार, मित्र तथा सहकर्मियों के सहयोग की समय-समय पर आवश्यकता होती है । जब इनसे वांछित सहयोग प्राप्त नहीं होता है तथा आकांक्षाएं पूरी नहीं होती है तो क्रोध उत्पन्न होता है जब भी क्रोध आए तो मौन रहे तथा शीतल जल ग्रहण करना चाहिए आचार्य महाप्रज्ञ का कहना है कि -''क्रोध का मूल कारण है अभिमान, अहंकार है, इसलिए अभिमान एवं अहंकार को त्याग देंगे तो क्रोध उत्पन्न ही नहीं होगा ।'' महात्मा गाँधी ने लिखा है कि- ''क्रोध को जीतने में मौन जितना सहायक होता है उतनी कोई वस्तु नहीं है''महात्मा गौतम बुद्ध ने कहा है कि-''क्रोध को प्रेम से जीत सकते हैं।''

उत्साह और लगन-जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए अंतिम और महत्त्वपूर्ण सूत्र है, उत्साह और लगने किसी कार्य को प्रारम्भ करते हैं तो उसके पूर्ण होने तक उत्साह व लगन को कभी कम नहीं होने देवें । कठिनाइयाँ आने पर धैर्य नहीं छोड़ें तथा पूर्ण मनोयोग से लग जाएंगे तो सफलता आपके कदम चूमेगी ।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त सफलता प्राप्त करने के लिए निम्न बातों को भी ध्यान में रखिए -सामाजिक परम्पराओं का निर्वाह करते हुए समाज व राष्ट्र की उन्नति में अपना पूर्ण सहयोग देवें ।

अपनी आय से अधिक खर्च न करें दिखावे व प्रदर्शन के लिए कर्ज लेकर अपनी शांति को नष्ट नहीं करें। सद्ग्रंथों का स्वाध्याय करें, अपने बच्चों को संस्कारी एवं आदर्श संतान बनाएं।

कभी दूसरों से ईर्ष्या न करें। परस्पर एक दूसरे के सहयोगी बने कटु शब्द कहकर किसी का अपमान न करें। दूसरों के दोषों को न देखें, दूसरों के दोषों को देखते रहेंगे तो आप कभी प्रगति नहीं कर सकते। अच्छे कार्य करने वालों को सदा प्रोत्साहित करें।

याद रखो, जीवन की सफलता केवल अपने लिए जीने या आत्मकेन्द्रित होने में नहीं है अपितु अपने ज्ञान में, अपनी शक्ति में, अपने भौतिक ऐश्वर्य में सबको भागीदार बनाने में ही जीवन की सफलता तथा सार्थकता है । जीवन में सफलता के लिए इन स्वर्णिम सिद्धांतों का यदि आप धैर्य पूर्वक अपनाएंगे तो आपको सफलता के शिखर पर पहुँचने में कोई रुकावट नहीं आएगी।

प्रधान संपादक,
अध्यात्म अमृत
ज्ञानमंदिर, सिटी रोड़,
मदनगंज-किशनगढ़
अजमेर 305801 (राज.)
मो. 09252988221

देश भक्ति गीत-

1

आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं झाँकी हिन्दुस्तान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वन्देमातरम् वन्देमातरम् ।
उत्तर में रखवाली करता पर्वतराज विराट है
दक्षिण में चरणों को धोता सागर का सम्राट है
जमुना जी के तट को देखो गंगा का ये घाट है
बाट-बाट पे हाट-हाट में यहाँ निराला ठाठ है
देखो ये तस्वीरें अपने गौरव की अभिमान की,
इस मिट्टी से ...
ये है अपना राजपूताना नाज़ इसे तलवारों पे
इसने सारा जीवन काटा बरछी तीर कटारों पे
ये प्रताप का वतन पला है आज़ादी के नारों पे
कूद पड़ी थी यहाँ हज़ारों पद्मिनियाँ अंगारों पे
बोल रही है कण कण से कुरबानी राजस्थान की
इस मिट्टी से ...
देखो मुल्क मराठों का ये यहाँ शिवाजी डोला था
मुग़लों की ताकत को जिसने तलवारों पे तोला था
हर पावत पे आग लगी थी हर पत्थर एक शोला था
बोली हर-हर महादेव की बच्चा-बच्चा बोला था
यहाँ शिवाजी ने रखी थी लाज हमारी शान की
इस मिट्टी से ...
जलियाँ वाला बाग ये देखो यहाँ चली थी गोलियाँ
ये मत पूछो किसने खेली यहाँ खून की होलियाँ
एक तरफ़ बंदूकें दन दन एक तरफ़ थी टोलियाँ
मरनेवाले बोल रहे थे इनक़लाब की बोलियाँ
यहाँ लगा दी बहनों ने भी बाजी अपनी जान की
इस मिट्टी से ...
ये देखो बंगाल यहाँ का हर चप्पा हरियाला है
यहाँ का बच्चा-बच्चा अपने देश पे मरनेवाला है
ढाला है इसको बिजली ने, भूचालों ने पाला है
मुट्ठी में तूफ़ान बंधा है और प्राण में ज्वाला है
जन्मभूमि है यही हमारे वीर सुभाष महान की

5

अंतर्राष्ट्रीय गीत – हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब....

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब एक दिन
हो हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन
हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब एक दिन
हो हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन

होगी शान्ति चारों
होगी शान्ति चारों ओर
होगी शान्ति चारों ओर एक दिन
हो हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास
होगी शान्ति चारों ओर एक दिन

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब एक दिन
हो हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन

हम चलेंगे साथ साथ
डाले हाथों में हाथ
हम चलेंगे साथ साथ एक दिन
हो हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास
हम चलेंगे साथ साथ एक दिन

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब एक दिन
हो हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन

नहीं डर किसी का आज
नहीं भय किसी का आज
नहीं डर किसी का आज के दिन
हो हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास
नहीं डर किसी का आज के दिन

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब एक दिन
हो हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब एक दिन
हो हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन

विश्व आदिवासी दिवस- 9 अगस्त विशेष

प्रगतिमय भारत का आदिवासी समाज

● नारायण दास जीनगर

हमारा संसार विभिन्नताओं से भरा पड़ा है। अनेकानेक देशों में अनेक जीव-जन्तुओं की विभिन्नता की भांति वहाँ के लोगों में भी रंग, भाषा, संस्कृति, रीति-रिवाज, संस्कार, परम्पराएं व रहन-सहन की भिन्नता के साथ आर्थिक विषमताओं के कारण रोजगार के साधनों, व्यवहारों एवं दिनचर्याओं की भिन्नता साक्षात देखी जा सकती है। विश्व में दूर जंगलों, पहाड़ों, नदियों, गुफाओं, रेगिस्तान आदि दुर्गम स्थानों में वर्षों से प्रकृति द्वारा प्रदत्त स्थिति को स्वीकार कर उनके अनुरूप स्वयं को ढालकर, अपने जीवन को बचाने के लिए संघर्ष करते हुए आज भी अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। ऐसे समाज के लोगों को वहाँ का मूल समाज माना जाता है। यही मूल समाज आदिवासी समाज कहलाता है।

सामान्यतः 'आदिवासी' (Indigenous peoples) शब्द का प्रयोग किसी भौगोलिक क्षेत्र के उन निवासियों के लिए किया जाता है जिनका उस भौगोलिक क्षेत्र से ज्ञात इतिहास में सबसे पुराना सम्बन्ध रहा हो। संसार के विभिन्न भूभागों में जहाँ अलग-अलग धाराओं में अलग-अलग क्षेत्रों से आकर लोग बसे हो उस विशिष्ट भाग के प्राचीनतम अथवा प्राचीन निवासियों के लिए भी इस शब्द का उपयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ- प्राचीन साहित्य में दस्यु, निषाद आदि के रूप में जिन विभिन्न प्रजातियों समूहों का उल्लेख किया गया है, उनके वंशज समसामयिक भारत में आदिवासी माने जाते हैं। आदिवासी के समानार्थी शब्दों में ऐबोरिजिनल, इंडिजिनस, देशज, वननिवासी, गिरिजन एवं जनजाति आदि प्रचलित हैं। इनमें से हर एक शब्द के पीछे क्षेत्रीय सामाजिकता व राजनीतिक संदर्भ विद्यमान हैं।

बिरसा मुण्डा के जीवन से प्रेरित सामाजिक कार्यकर्ता श्री राकेश देवड़े बिरसावादी के अनुसार- 'आदिवासी भारत भूमि का इंडिजिनियस एबोरिजन आदिवासी गणसमूह है जो अरावली, विंध्याचल, सतपुड़ा, सह्याद्री पर्वत -माला और चंबल, बनास, लूनी, साबरमती, माही, नर्मदा, ताप्ती एवं गोदावरी नदियों की उत्पत्ति

काल से भारत की मूल मिट्टी पानी आबोहवा में जन्मा उपजा मूलबीज मूल वंश है।'

विश्व आदिवासी दिवस आबादी के अधिकारों को बढ़ावा देने और उनकी सुरक्षा के लिए प्रत्येक वर्ष 9 अगस्त को मनाया जाता है। यह घटना उन उपलब्धियों और योगदानों को भी स्वीकार करती है जो मूलनिवासी लोग पर्यावरण संरक्षण जैसे विश्व के मुद्दों को बेहतर बनाने के लिए करते हैं। यह पहली बार संयुक्तराष्ट्र की महासभा द्वारा दिसंबर 1994 में घोषित किया गया था, 1982 में मानव अधिकारों के संवर्धन और संरक्षण पर मूल निवासी आबादी पर संयुक्त राष्ट्र कार्य समूह की पहली बैठक को दिन को खासकर इसे भारत के आदिवासियों द्वारा धूमधाम से मनाया जाता है।

आदिवासी समाज का इतिहास-

विश्व के आदिवासी लोगों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस पहली बार संयुक्त राष्ट्र की महासभा द्वारा दिसंबर 1994 में घोषित किया गया था, जिसे विश्व के आदिवासी लोगों (1995-2004) के पहले अंतर्राष्ट्रीय दशक के दौरान मनाया गया है। सन् 2004 में असेंबली ने '' डिसैड फ़ॉर एक्शन एंड डिग्निटी'' की थीम के साथ, 2005-2015 को दूसरे अंतर्राष्ट्रीय दशक की घोषणा की। आदिवासी लोगों पर संयुक्त राष्ट्र के संदेश को फैलाने के लिए विभिन्न देशों के लोगों को 'विश्व आदिवासी दिवस' को अवलोकन करने तथा भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। गतिविधियों में शैक्षिक फोरम और कक्षा की गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं ताकि एक सराहना और आदिवासी लोगों की बेहतर समझ प्राप्त हो सके। भारत में केन्द्र व राज्य सरकारें भी आदिवासी दिवस पर कार्यक्रम/समारोह अदि का आयोजन करने हेतु दिशा-निर्देश जारी करती रही हैं ताकि आम लोग आदिवासी समाज के साथ सामाजिक समरसता एवं अपनी समझ को बेहतर बनाकर समानता का व्यवहार करते रहें।

प्रतीक- देश के एक चकमा जाति के लड़के 'रेवांग दीवान' द्वारा बनाई कलाकृति को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा स्थायी मुद्दे पर दृश्य पहचानकर्ता के रूप में चुना गया था। यह विश्व के

आदिवासी समुदाय के अंतर्राष्ट्रीय दिवस को बढ़ावा देने के लिए सामग्री पर भी देखा गया है। यह हरे रंग की पत्तियों के दो कानों को एक दूसरे का सामना करते हुए दिखाई देता है और एक ग्रह पृथ्वी जैसा दिखता है। ग्लोब के भीतर बीच में एक हैंडशेक (दो अलग-अलग हाथ) की तस्वीर है और हैंडशेक के ऊपर एक लैंडस्केप बैकग्राउंड है। हैंडशेक और लैंडस्केप बैकग्राउंड को ग्लोब के भीतर ऊपर और नीचे नीले रंग से समझाया गया है। इसे संयुक्त राष्ट्र ने विश्व आदिवासी दिवस के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया है।

संस्कृति- अधिकांश आदिवासी संस्कृति के प्राथमिक धरातल पर जीवनयापन करते हैं। वे सामान्यत: क्षेत्रीय समूहों में रहते हैं और उनकी संस्कृति अनेक दृष्टियों से स्वयंपूर्ण रहती है। इन संस्कृतियों में ऐतिहासिक जिज्ञासा का अभाव रहता है तथा ऊपर की थोड़ी ही पीढ़ियों का यथार्थ इतिहास क्रमश: किंवदंतियों और पौराणिक कथाओं के माध्यम से मिल जाता है। सीमित परिधि तथा लघु जनसंख्या के कारण इन संस्कृतियों के रूप में स्थिरता रहती है, किसी एक काल में होने वाले सांस्कृतिक परिवर्तन अपने प्रभाव एवं व्यापकता में अपेक्षाकृत सीमित होते हैं। परंपरा केंद्रित आदिवासी सांस्कृतियाँ इसी कारण अपने अनेक पक्षों में रूढ़िवादी सी दीख पड़ती है। लेकिन भारत में हिंदू धर्म की सांस्कृतिक झलक इनमें देखी जा सकती है और वे स्वयं को सनातन के वँशज मानते हैं। उत्तर और दक्षिण अमरीका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, एशिया तथा अनेक द्वीपों और द्वीपसमूहों में आज भी आदिवासी संस्कृतियों के अनेक रूप देखे जा सकते हैं।

भारत का आदिवासी समाज-

भारत की आजादी के बाद रचित संविधान में भारतरत्न बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने अनुसुचित जातियों एवं जनजातियों के सामाजिक पिछड़ेपन को ध्यान में रखते हुए उन्हें सरकारी नौकरियों आदि में आरक्षण का प्रावधान रखा । आजादी के 75 सालों में इसी आरक्षण (सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक) के प्रावधानों के उपयोग के कारण इन समाजों के लोग शिक्षित एवं सभ्य नागरिक बनने के साथ भारतीय राजनीति में भागीदारी करते दिखाई देने लगे हैं। भारत में आदिवासियों को हिंदू धर्म के दो वर्गों में अधिसूचित किया गया है- अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति। हिंदू विवाह अधिनियम एवं इसी अधिनियम की धारा 2 (2) अनुसूचित जनजाति के सदस्यों पर लागू नहीं है। यदि ऐसा है, तो हिंदू मैरिज एक्ट की धारा 9 के तहत फैमिली कोर्ट द्वारा जारी किया गया निर्देश अपीलकर्ता पर लागू नहीं होता है। 'आदिवासी लोग हिन्दू धर्म का पालन करते हैं और सारे तीज-त्योहार मनाते हैं।' भारत पर मुगलों और अंग्रेजों का राज था, के समय अधिक दुर्व्यवहार किया गया था। उनकी प्रथागत जनजातीय आस्था के अनुसार विवाह और उत्तराधिकार से जुड़े मामलों में सभी विशेषाधिकारों को बनाए रखने के लिए उनके जीवन का अपना तरीका भी है। वे कड़ाई से इनकी रक्षा करते हैं और आवश्यक होने पर संघर्ष भी करते हैं। भारत की जनगणना 1951 के अनुसार आदिवासियों की संख्या 9,91,11,498 थी जो 2001 की जनगणना के अनुसार 12,43,26,240 हो गई। यह देश की जनसंख्या का 8.2 प्रतिशत है।

जातीय दृष्टि से इन समूहों में नीग्रिटो, प्रोटो-आस्ट्रेलायड और मंगोलायड तत्व मुख्यत: पाए जाते हैं, यद्यपि कतिपय नेतृत्ववेत्ताओं ने नीग्रिटो तत्व के संबंध में शंकाएँ उपस्थित की हैं। भाषाशास्त्र की दृष्टि से उन्हें आस्ट्रो-एशियाई, द्रविड़ और तिब्बती-चीनी-परिवारों की भाषाएँ बोलने वाले समूहों में विभाजित किया जा सकता है। भौगोलिक दृष्टि से आदिवासी भारत का विभाजन चार प्रमुख क्षेत्रों में किया जा सकता है -उत्तरपूर्वीय क्षेत्र, मध्य क्षेत्र, पश्चिमी क्षेत्र और दक्षिणी क्षेत्र।

भारत में अनुसूचित आदिवासी समूहों की संख्या 700 से अधिक है। भारत में 1871 से लेकर 1941 तक हुई । इन जनगणनाओं में आदिवासियों को अलग धर्मों में गिना गया है, जैसे Other religion-1871, ऐबरिजनल 1881, फारेस्ट ट्राइब-1891, एनिमिस्ट-1901, एनिमिस्ट-1911, प्रिमिटिव-1921, ट्राइबल रिलीजन -1931,'ट्राइब-1941' इत्यादि नामों से वर्णित किया गया है। हालांकि 1951 की जनगणना के बाद से आदिवासियों को हिन्दू धर्म में गिनना शुरू कर दिया गया है।

आदिवासी निवास क्षेत्र-उत्तर पूर्वीय क्षेत्र के अंतर्गत हिमालय अंचल के अतिरिक्त तीस्ता उपत्यका और ब्रह्मपुत्र की यमुना-पद्मा शाखा के पूर्वी भाग का पहाड़ी प्रदेश आता है। इस भाग के आदिवासी समूहों में गुरूंग, लिंबू, लेपचा, आका, डाफला, अबोर, मिरी, मिशमी, सिंगपी, मिकिर, राम, कवारी, गारो, खासी, नाग, कुकी, लुशाई, चकमा आदि उल्लेखनीय हैं। मध्यक्षेत्र का विस्तार उत्तर-प्रदेश के मिर्जापुर जिले के दक्षिणी और राजमहल पर्वतमाला के पश्चिमी भाग से लेकर दक्षिण की गोदावरी नदी तक है। संथाल, मुंडा, माहली,उरांव, हो, भूमिज, खड़िया, बिरहोर, जुआंग, खोंड, सवरा, गोंड, भील, बैगा, कोरकू, कमार आदि इस भाग के प्रमुख आदिवासी हैं। पश्चिमी क्षेत्र में भील, मीणा, ठाकुर, कटकरी, टोकरे कोली, कोली महादेव, मन्नेवार, गोंड, कोलाम, हलबा, पावरा (महाराष्ट्र) आदि प्रमुख आदिवासी जनजातियां निवास करती हैं। मध्य पश्चिम राजस्थान से होकर दक्षिण में सह्याद्रि तक का पश्चिमी प्रदेश इस क्षेत्र में आता है। गोदावरी के दक्षिण से कन्याकुमारी तक दक्षिणी क्षेत्र का विस्तार है। इस भाग में जो आदिवासी समूह रहते हैं उनमें चेंचू, कोंडा, रेड्डी, राजगोंड, कोया, कोलाम, कोटा, कुरूंबा, बडागा, टोडा, काडर, मलायन, मुशुवन, उराली, कनिक्कर आदि उल्लेखनीय हैं। इतिहासवेत्ताओं ने इन समूहों में से अनेक का विशद शारीरिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अध्ययन किया है। इस अध्ययन के आधार पर भौतिक संस्कृति तथा जीवनयापन के साधन सामाजिक संगठन, धर्म, बाह्य संस्कृति, प्रभाव आदि की दृष्टि से आदिवासी भारत के विभिन्न वर्गीकरण करने के अनेक वैज्ञानिक प्रयत्न किए गए हैं। इस परिचयात्मक रूपरेखा में इन सब प्रयत्नों का उल्लेख तक संभव नहीं है। आदिवासी संस्कृतियों की जटिल विभिन्नताओं का वर्णन करने के लिए भी यहाँ पर्याप्त स्थान नहीं है। राठवा, भील, तडवी, गरासिया, वसावा, बावचा, चौधरी, दुंगरा भील, पटेलिया ये सब आदिवासी (गुजरात) में रहते है और वे प्रकृति की पूजा करते हैं। गुजरात के सोनगढ़ व्यरा, बारडोली सूरत, राजपिपला, छोटा उदयपुर, दाहोद, डांग आदि इन जिलों में आदिवासी पाए जाते हैं।

आदिवासी परंपरा- प्राचीनकाल में आदिवासियों ने भारतीय परंपरा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया था और उनके रीति रिवाज और विश्वास आज भी हिंदू समाज में देखे जा सकते हैं, तथापि यह निश्चित है कि वे बहुत पहले ही भारतीय समाज और संस्कृति के विकास की प्रमुख धारा में मिल गए थे। आदिवासी समूह

हिंदू समाज के अनेक महत्त्वपूर्ण पक्षों में समान है, कुछ समूहों में कई महत्त्वपूर्ण अंतर भी हैं। समसामयिक आर्थिक शक्तियों तथा सामाजिक प्रभावों के कारण भारतीय समाज के इन विभिन्न अंगों की दूरी अब कम हो चुकी है। आदिवासियों की सांस्कृतिक भिन्नता को बनाए रखने में कई प्रयत्नों का योग रहा है। मनोवैज्ञानिक धरातल पर उनमें से अनेक में प्रबल 'जनजाति-भावना' है। सामाजिक-सांस्कृतिक धरातल पर उनकी संस्कृतियों के गठन में केंद्रीय महत्त्व है। असम के नागा आदिवासियों की नरमुंड प्राप्ति प्रथा बस्तर के मुरियों की घोटुल संस्था, टोडा समूह में बहुपतित्व आदि का उन समूहों की संस्कृति में बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। परंतु ये संस्थाएँ और प्रथाएँ भारतीय समाज की प्रमुख प्रवृत्तियों के अनुकूल नहीं हैं। आदिवासियों की संकलन-आखेटक-अर्थव्यवस्था तथा उससे कुछ अधिक विकसित अस्थिर और स्थिर दृष्टि की अर्थव्यवस्थाएँ अभी भी परंपरा स्वीकृत प्रणाली द्वारा चलाई जाती हैं। परंपरा का प्रभाव उन पर नए आर्थिक मूल्यों के प्रभाव की अपेक्षा अधिक है। धर्म के क्षेत्र में जीववाद, जाति, पितृपूजा आदि हिंदू धर्म के और समीप लाते हैं। आज के आदिवासी भारत में हिन्दू-संस्कृति के प्रभावों की दृष्टि से आदिवासियों के चार-धाम मुख्य धार्मिक स्थलों में से एक है। हिन्दू- संस्कृतियों का स्वीकरण इस मात्रा में कर लिया है कि अब वे केवल नाममात्र के लिए आदिवासी रह गए हैं।

आदिवासी भाषाएँ- भारत में सभी आदिवासी समुदायों की अपनी विशिष्ट भाषाएं हैं। भाषाविज्ञानियों ने भारत के सभी आदिवासी भाषाओं को मुख्यत: तीन भाषा परिवारों में रखा है-गोंडी, द्रविड़, आस्ट्रिक । लेकिन कुछ आदिवासी भाषाएं भारोपीय भाषा परिवार के अंतर्गत भी आती हैं। आदिवासी भाषाओं में 'भीली' बोलने वालों की संख्या सबसे ज्यादा है जबकि दूसरे स्थान पर 'गोंडी' भाषा और तीसरे स्थान पर 'संथाली' भाषा है। भारतीय राज्यों में एकमात्र झारखण्ड में ही 5 आदिवासी भाषाओं - संथाली, मुण्डारी, हो, कुडुख और खड़िया - को 2011 में द्वितीय राज्यभाषा का दर्जा प्रदान किया गया। भारत की 114 मुख्य भाषाओं में से 22 को ही संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है। इनमें हाल में शामिल की गयी संथाली और बोड़ो ही मात्र आदिवासी भाषाएं हैं। अनुसूची में शामिल संथाली (0.62), सिंधी, नेपाली, बोड़ो (सभी 0.25), मिताइ (0.15), डोगरी और संस्कृत भाषाएं एक प्रतिशत से भी कम लोगों द्वारा बोली जाती हैं। जबकि भीली (0.67), गोंडी (0.25), टुलु (0.19) और कुडुख 0.17 प्रतिशत लोगों द्वारा व्यवहार में लाए जाने के बाद भी आठवीं अनुसूची में दर्ज नहीं की गयी हैं। (जनगणना 2001)

आदिवासियों के धार्मिक विश्वास- आदिवासियों का अपना धर्म भी है। ये प्रकृति-पूजक हैं और वन, पर्वत, नदियों एवं सूर्य की आराधना करते हैं। आधुनिक काल में जबरन बाह्य संपर्क में आने के फलस्वरूप इन्होंने हिन्दू, ईसाई एवं इस्लाम धर्म को भी अपनाया है। अंग्रेजी राज के दौरान बड़ी संख्या में ये ईसाई बने तो आजादी के बाद इनके हिन्दूकरण का प्रयास तेजी से हुआ है परन्तु आज ये स्वयं की धार्मिक पहचान के लिए संगठित हो रहे हैं और भारत सरकार से जनगणना में अपने लिए अलग से धार्मिक कोड (कोया पुनेम) की मांग कर रहे हैं। माना जाए तो इनका धर्म हिन्दू धर्म से ज्यादा मेल खाता है क्योंकि आदिवासी और हिन्दू दोनों लोग शंभूसेक (महादेव) को अपना अस्तित्व मानते हैं। भारत में आदिवासियों को दो वर्गों में अधिसूचित किया गया है- अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित आदिम जनजाति। भारत की प्रमुख जनजातियाँ-भारत में 461 जनजातियां हैं, जिसमें से 424 जनजातियों भारत के सात क्षेत्रों में बंटी हुई हैं।

प्रमुख आदिवासी व्यक्ति - बिरसा मुण्डा, जयपाल सिंह मुंडा, राम दयाल मुंडा, गंगा नारायण सिंह, कार्तिक उरांव, रानी दुर्गावती, राघो जी भांगरे, एकलव्य, दुर्जन सिंह, टंट्या भील, राणा पूंजा, नाग्या कातकरी, कप्तान छुट्टनलाल, सोदान पटेल आदि आदि ।

आज भारत में भारत सरकार एवं राज्य सरकारों की आदिवासियों के लिए की जा रही लोक कल्याणकारी योजनाओं के फलीभूत होती भी दिखाई देती है। भारत के संविधान की विशेषताओं (स्वतंत्रता, समानता एवं समान अवसर) ने भी इनके प्रगति को सहारा दिया है। आज पढ़ाई-लिखाई के अलावा रोजगार एवं समानता के अवसरों ने आदिवासी समाज को प्रगति के पथ पर न केवल लाकर खड़ा किया है बल्कि उसे अन्य समाजों के साथ आगे बढ़ने का भी अवसर मिल रहा है। इसी कारण आदिवासी समाज के पुरुष ही नहीं बल्कि महिलाओं ने भी विभिन्न क्षेत्रों में आदिवासी समाज एवं भारत का मान बढ़ाया है।

भारत की आजादी में इन अनुसूचित जाति एवं जनजातीय समाजों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय इतिहास इनकी शहादत व बलिदानों की गाथाओं से भरा पड़ा हैं। रायसिंह नगर में प्रजा परिषद अधिवेशन के दौरान 30 जून 1946 को अंग्रेजों ने तिरंगे झण्डे के साथ झुलूस को देखकर आक्रोश में चलाई गई गोली के शिकार शहीद बीरबल सिंह ढालिया ने 1 जुलाई को मध्यरात्रि में अन्तिम सांस ली । इसी प्रकार झारखण्ड के शहीद बिरसा मुण्डा के क्रान्तिकारी विचारों से समाज की दशा व दिशा बदलकर नवीन सामाजिक एवं राजनैतिक युग का सूत्रपात हुआ। परन्तु अंग्रेजों ने अपने भविष्य के लिए खतरा समझकर इन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया और धीमा जहर देने लगे। 9 जून 1900 को वो जेल में धीमें जहर के कारण शहीद हो गए थे। अमर शहीद टंट्या मामा की शहादत भी देश को आज़ाद कराने में व अन्य आदिवासी अंचलों में रहने वालों ने वीर क्रांतिकारियों का अमूल्य योगदान रहा है।

इसी कड़ी में भारत में पहली आदिवासी महिला 'द्रोपदी मुर्मू' भारत की प्रथम नागरिक के रूप में राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण कर समाज व देश का आज मान बढ़ा रहीं हैं। भारत में पहली आदिवासी महिला के राष्ट्रपति बनने से आदिवासी समाज को तो गौरव होगा ही बल्कि देश में समानता के अवसर का साक्षात दर्शन पूरे विश्व में भारत के मान बढ़ाएगा। हम सब भारतवासी विभिन्न धर्मो, सम्प्रदायों जातियों व जनजातियों तथा भाषा एवं सांस्कृति भिन्नताओं के बावजूद एक राष्ट्र एक राज्य के अंगभूत घटक हैं। हम सबसे पहले भारतवासी हैं यही भावना भारतीय होने का गौरव प्रदान करती है और भारत को आगे बढ़ाती है।

वन्दे मातरम्... !

वरिष्ठ अध्यापक
जीनगर मौहल्ला, रामदेव मंदिर के पीछे,
गोपेश्वर बस्ती, गंगाशहर, बीकानेर
मो. - 9414142641

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

-: जीवन परिचय :-

जन्म- 20 जून 1958
पिता- विरंचीनारायण टुडू
पति- श्याम चरण मुर्मू
पुत्री- इतिश्री मुर्मू

शिक्षा- स्नातक
जूनियर असिस्टेंड, सिंचाई एंव बिजली विभाग - 1979-1983
आन्रेरी असिस्टेंट टीचर- 1994 से 1997
पार्षद-1997

परिवहन एवं मत्सय पालन राज्य मंत्री ओडिशा- 2000 से 2004
ओडिशा विधानसभा द्वारा सर्वश्रेष्ठ विधायक के लिए नीलकण्ठ पुरस्कार -2007
झारखण्ड की पहली महिला राज्यपाल-2015 से 2021

प्रथम आदिवासी राष्ट्रपति-2022

शिक्षक से महामहिम तक द्रौपदी मुर्मू

-भीष्म कुमार महर्षि

''मो जीवन पछे नर्के पड़ी थाउ,
जगत उद्धार हेउ। ''

सोमवार, 25 जुलाई 2022 को भारत में एक इतिहास बन गया जब राष्ट्रगान की धुन के बाद ऐतिहासिक संसद भवन के सेंट्रल हॉल में भारत की पहली आदिवासी महिला द्रौपदी मुर्मू को भारत सरकार के प्रधान न्यायधीश एन.वी. रमन्ना ने 15 वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ दिलाई। सादगी, सफलता, सौम्यता एवं संघर्ष का अभिप्राय द्रौपदी मुर्मू शपथ के दौरान संथाली धोती एवं सफेद हवाई चप्पल पहने हुए थी। इसके बाद उन्होंने राष्ट्रपति की कुर्सी पर बैठ कर हस्ताक्षर किए। आजाद भारत में जन्म लेने वाली पहली महिला राष्ट्रपति, तीनों भारतीय सेवाओं की सर्वोच्च कमांडर का पद भी शोभायमान कर रही हैं।

शपथ ग्रहण करने के उपरांत महामहिम ने संसद भवन में दोनों सदनों के नेताओं को सम्बोधित किया। पहले संबोधन की शुरूआत आदिवासी अभिवादन 'जोहार' से की । 'जोहार' शब्द का अर्थ है अभिवादन। उन्होंने कहा कि यह लोकतंत्र की ही शक्ति है कि गरीब घर और सुदूर आदिवासी क्षेत्र में पैदा हुई भारत की बेटी ने भारत के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर पहुँच सकती है।

महामहिम के संबोधन के कुछ महत्वपूर्ण अंश-

- मैं इस पवित्र संसद से समस्त देशवासियों का हार्दिक अभिनन्दन करती हूँ। आपकी आत्मीयता एवं विश्वास ही मेरी ताकत बनी रहेगी।
- मैंने देश के युवाओं के आत्मबल और उत्साह को करीब से देखा है। युवाओं के आगे बढ़ने से देश का विकास होता है।
-स्वतंत्रता संग्राम में संथाल, पाइका और कोल समुदाय की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सामाजिक उत्थान एवं देशप्रेम के लिए धरती आभा, भगवान बिरसा मुण्डा जी का बलिदान हमारे लिए प्रेरणा है।
- देश के प्रथम राष्ट्रपति से लेकर रामनाथ कोविंद जी तक अनेक महान व्यक्तित्वों ने इस पद को सुशोभित किया । इस पद के साथ देश ने महान परम्परा का दायित्व भी मुझे सौंपा है।
- वार्ड काउन्सलर से लेकर भारत के राष्ट्रपति बनने तक का अवसर मुझे मिला है। यह भारत के लोकतंत्र की महानता हैं ।
- राष्ट्रपति पद तक पहुँचना मेरी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है। यह भारत के प्रत्येक गरीब की उपलब्धि है।
-मैं भारत के सभी नागरिकों की आशा, आकांक्षा एवं अधिकारों की रक्षा करूंगी।

उड़ीसा के एक छोटे से पहाड़पुर गाँव से 300 एकड़ में फैले 340 कमरों वाले राष्ट्रपति भवन में पहुँचने वाली राष्ट्रपति मुर्मू ने शिव की आराधना करके ही जीवन के संघर्षों में सफलता पायी है। महादेव पर महामहिम की असीम आस्था और विश्वास है। जिस पर शिव की कृपा हो जाए वो सकारात्मक, शक्ति सम्पन्न एवं प्रभावशाली हो जाता है। उन्हें हर चुनौती से लड़ने का आत्मबल इस श्रद्धा एवं विश्वास से ही मिला है। राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार की घोषणा के साथ ही महामहिम ने अपने गृहराज्य उड़ीसा के मयूरभंज जिले के रायरांगपुर में बने एक शिव मन्दिर पहुँचकर पुजारी से झाड़ू लेकर सफाई की। अपने आराध्य को प्रणाम किया और पूजा करके जीत का आशीर्वाद प्राप्त किया। जीवन के कठिन दौर में इन्होंने अध्यात्म का सहारा लिया और सकारात्मकता का सागर इनके साथ जुड़ गया।

मुर्मू के राष्ट्रपति बनने के साथ ही लोकतांत्रिक एवं सांस्कृतिक एकता की मिसाल देखने को मिली । इस सामाजिक क्रान्ति से आदिवासियों एवं महिला सशक्तीकरण को और अधिक गति मिलेगी। बता दें कि द्रौपदी मुर्मू अपने गांव की पहली ऐसी महिला है जो समाज के विरोध के बावजूद संघर्ष कर कॉलेज गई। महिलाओं को आज भी अपने अधिकार पाने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। महामहिम भी कहीं न कहीं इन परिस्थितियों से रूबरू हुई है। हम सभी को यह विश्वास है कि वे जनता की इस दु:ख तकलीफ को अवश्य समझते हुए देश को आगे बढ़ाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगी । यकीनन उनके नेतृत्व में हमारा देश विकास की नयी इबारत लिखेगा।

हम देशवासियों को अपने निजी स्वार्थ, जातिगत संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठकर समरसता के साथ अपने दायित्वों का खुशी से समर्पित भाव के साथ निर्वहन कर देश को सफलता के चर्मोत्कर्ष पर पहुँचाने के लिए हर सम्भव प्रयास करने होंगे। महामहिम मुर्मू के पदारोहण का यही संदेश हम देश वासियों के लिए है।

सहायक निदेशक
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर।
मो.-944776680

मैं भी हूँ, शिविरा रिपोर्टर... राजकीय प्राथमिक विद्यालय न. 01 पदमपुर, श्री गंगानगर का सफर

इकलौते शिक्षक ने बदल दी विद्यालय की तस्वीर

• राजीव कुमार

राजस्थान का सिरमौर व उत्तरी सीमा का प्रहरी जिला श्रीगंगानगर कृषि के क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। 'धान का कटोरा' कहलाने वाले जिले श्रीगंगानगर ने आज शिक्षा व रोजगार के क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है।

इसी शिक्षा की कड़ी में आजकल जिले के उपखण्ड पदमपुर का विद्यालय राजकीय प्राथमिक विद्यालय न 1. जिले में ही नहीं राज्य स्तर पर भी चर्चा का विषय बना हुआ है। यह विद्यालय वर्ष 1958 में स्थापित हुआ और शहर के सबसे प्राचीन विद्यालयों में से एक रहा है। शहर के अनेक विद्वानों की प्रारम्भिक शिक्षा इसी विद्यालय से हुई है। धीरे-धीरे समय बदलता गया और इस विद्यालय की हालत दयनीय होती गयी। इस विद्यालय के निकटवर्ती क्षेत्र में निजी विद्यालयों की अधिकता के कारण इसकी दशा लगातार खराब होती गयी। मैंने 20 अगस्त 2018 को अन्य विद्यालय से स्थानान्तरित होकर इस विद्यालय में कार्यग्रहण किया। मैंने पाया कि विद्यालय का नाम-राजकीय प्राथमिक विद्यालय न.1 पदमपुर है परन्तु यहाँ न.1 जैसा कुछ भी न था। उसी दिन मन में एक संकल्प लिया कि एक दिन इसी विद्यालय को नाम के अनुरूप विद्यालय न.1 बनाऊँगा। हालांकि मेरे सामने अनेक चुनौतियाँ थी जैसे - विद्यालय में पेयजल की व्यवस्था न होना, शौचालय सुविधा न होना, टूटी चारदिवारी, खण्डहर विद्यालय भवन, जगह-जगह मलबे का ढेर व विद्यालय परिसर की दशा कचरा पात्र के समान, विद्यालय में नाम मात्र का नामांकन, एकल अध्यापक आदि। मैंने इन सब चुनौतियों का सामना करके इस विद्यालय को नई पहचान दिलाने का संकल्प लिया। जिसके लिए मैंने रोजाना शाला समय के पश्चात 6-8 घण्टे तक कार्य कर मजदूर, कारीगर एंव कलाकार की भूमिका निभाई।

''हो संकल्प तो विकल्प मिल ही जाते हैं,
हो पैरों से मजबूत जो वहीं मंजिल पाते हैं।

1. नामांकन वृद्धि :- सर्वप्रथम शहर के वार्डों में घर-घर जाकर अभिभावकों से संवाद स्थापित किया तथा उनको विद्यालय से जोड़ने का प्रयत्न किया। इससे विद्यालय में अल्प समय में नांमाकन मात्र 12 बच्चों से बढ़कर 63 हो गया। उनको गुणवत्तापूर्ण, शिक्षा, संस्कारों की शिक्षा, खेल-खेल में शिक्षा आदि तरीकों से शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया। परीणाम स्वरूप लगातार नए प्रवेश लेने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है।

2. निजी विद्यालय जैसा राजकीय विद्यालय :- किसी भी विद्यालय का भवन एवं परिसर बच्चों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र होता है। इसलिए विद्यालय भवन को श्री करणी माता मंदिर ट्रस्ट पदमपुर के सहयोग से लगभग 2.7 लाख की लागत से बहुत ही सुंदर, आकर्षक, सुसज्जित बनाया गया। सम्पूर्ण विद्यालय भवन को प्लास्टिक पेंट से पुताई कर मन को लुभाने वाला बनाया गया। इसके साथ ही विद्यालय में विभिन्न प्रकार की वॉल पेटिंग्स यथा- राष्ट्रीय प्रतीक ,राज्य प्रतीक, रंगों के नाम, फलों-सब्जियों के नाम, सप्ताह के दिनों के नाम, कार्टून्स, एक्वेरियम आदि चित्र सहित तथा स्वच्छता, साक्षरता एंव पर्यावरण संरक्षण से सम्बंधित 20 से अधिक फलैक्स प्रिंट से स्लोगन तैयार किए गए हैं। जिससे अब विद्यालय के पास से गुजरने वाला हर व्यक्ति यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि अरे ! यह निजी विद्यालय है या राजकीय ? विद्यालय परिसर में बंजर जगह के स्थान पर वर्तमान में फ्लॉवर गार्डन, फ्रूट गार्डन एवं न्युट्रीशियन गार्डन तैयार किए गए हैं जो मनमोहक छवि बिखेरते हैं।

3. भौतिक सुविधाओं से परिपूर्ण विद्यालय :- विद्यालय में भामाशाहों के सहयोग से पेयजल की डिग्गी का निर्माण करवाया गया। इसके साथ ही पानी की मोटर,नल,शौचालय में हाथ धोने हेतु वॉश बेंशिन, साबुन व टॉवल , रनिंग वाटर की सुविधा, बर्तन धोने के लिए अलग से वॉशिंग प्वांइट तथा पानी पीने के सीमेटेण्ड सिंक बनाकर अलग से तीन नलों सहित ड्रिकिंग प्वांइट बनाया गया है। विद्यालय में बिजली आपूर्ति हेतू व्यवस्था दुरस्त करवाई गयी। रेन वाटर हार्वेस्टिंग के उद्देश्य से छतों को साफ कर पानी पाइपों द्वारा नीचे उतारा जाता है। विद्यालय की टूटी चारदिवारी का नव-निर्माण करवाया गया। मुख्यद्वार से अन्दर तक इन्टरलॉकिग लगवाकर विद्यालय का सौदर्यीकरण किया गया है। विद्यालय में सभी कक्षा-कक्षों एवं बरामदे में भामाशाह के सहयोग से पंखे लगाए गए है। विद्यालय का प्रधानाध्यापक कक्ष अत्याधुनिक रूप से तैयार किया गया हैं।

4. स्मार्ट क्लास रूम :- आधुनिक समय की महत्ती आवश्यकता है - शिक्षा का डिजिटलीकरण। इसके अन्तर्गत विद्यालय के शिक्षक द्वारा स्मार्ट क्लास रूम की स्थापना हेतु जनप्रतिनिधि के मार्फत राज्य सरकार से मांग रखी। इस पर स्थानीय विधायक श्रीमान गुरमीत सिंह कुन्नर के प्रयासों से अल्प समय में विद्यालय में स्मार्ट क्लास रूम स्थापित हो चुका है। जिसमें प्रोजेक्टर, स्क्रीन, स्पीकर शामिल है। अब बच्चे ऑडियो-विडियो सहायक सामग्री के माध्यम से बड़े ही रोचकता से अध्ययन कर रहे हैं।

5. नवाचार :-

1. ईको फ्रेन्डली पेन व पेन्सिल का नि:शुल्क वितरण :- सभी बच्चों को विद्यालय में ईको फ्रेन्डली पेन व पेन्सिल का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ये पेन व पेन्सिल पूर्ण रुप से रद्दी कागज से बनी होती है। इसमें किसी भी तरह के प्लास्टिक का उपयोग नहीं किया जाता है। इसके पीछे की तरफ फल, फूल या मसालों के बीज लगाए हुए है। इस पेन / पेन्सिल को छात्र द्वारा

उपयोग में लेने के बाद जमीन या गमले में लगाया जा सकता है, जिससे बीज अंकुरित होकर पौधे का रूप ले लेते हैं, इसमें बच्चों में अध्ययन के प्रति रुचि एवं पर्यावरण संरक्षण की भावना जागृत होती है।

2. विद्यालय में टूटे-फूटे व पुराने मटकों से आकर्षक गमलों का निर्माण:- अक्सर विद्यालय या घरों में टूटे-फूटे पुराने मटके पड़े रहते हैं। मेरे मन में ख्याल आया कि इन मटकों को आकर्षक गमलों का रूप दिया जाए। कोरोना काल में समय का सदुपयोग करते हुए इन मटकों को व्यवस्थित रूप से काटकर उनको विभिन्न रंगों से सुसज्जित कर गमलों का रूप दिया गया व उनमें विभिन्न प्रकार के पौधे लगाए गए। जिन्हें देखने वाले एक टक देखने लग जाते हैं।

3. पुराने टायरों से विद्यालय का सौन्दर्यकरण :- अनुपयोगी पुराने घिसे टायरों को विभिन्न रंगों से रंगकर विद्यालय में इस प्रकार व्यवस्थित किए गए जो विद्यालय के सौन्दर्य में चार चांद लगा देते है। इसके साथ ही ये टायर बच्चों को रंगों का ज्ञान कराने में उपयोगी सिद्ध हुए है।

स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार विजेता :-

सत्र 2021-22 हेतु जिला स्तर पर स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार हेतु यह विद्यालय विजेता रहा। इस विद्यालय को राज्य स्तर के पुरस्कार के लिए भी नांमाकित किया गया है। विद्यालय की साफ-सफाई, जल, प्रबधंन, शौचालय व्यवस्था, पर्यावरण सरंक्षण, कोविड -19 से संबधित विशेष जागरुकता हेतु इस विद्यालय को यह पुरस्कार प्रदान किया गया है।

" कौन कहता है आसमां में छेद नही होता ,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालों यारों ।"

अध्यापक लेवल प्रथम
राजकीय प्राथमिक विद्यालय न.1
पदमपुर, श्रीगंगानगर
मों.-96670-77714

जहाँ डाल-डाल पर...

जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया
करती है बसेरा वो भारत देश है मेरा
जहाँ सत्य, अहिंसा और धर्म का
पग-पग लगता डेरा
वो भारत देश है मेरा...
ये धरती वो जहाँ ऋषि मुनि जपते प्रभु नाम की माला
जहाँ हर बालक इक मोहन है और राधा इक-इक बाला
जहाँ सूरज सबसे पहले आ कर डाले अपना फेरा
वो भारत देश है मेरा...
जहाँ गंगा, जमुना, कृष्ण और कावेरी बहती जाए
जहाँ उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम को अमृत पिलवाये
ये अमृत पिलवाये
कहीं ये फल और फूल उगाये, केसर कहीं बिखेरा
वो भारत देश है मेरा...
अलबेलों की इस धरती के त्योहार भी हैं अलबेले
कहीं दीवाली की जगमग है, होली के कहीं मेले
जहाँ राग-रंग और हँसी-खुशी का चारों ओर है घेरा
वो भारत देश है मेरा...
जहाँ आसमान से बातें करते मंदिर और शिवाले
किसी नगर मे किसी द्वार पर कोई न ताला डाले
और प्रेम की बंसी जहाँ बजाता आये शाम सवेरा
वो भारत देश है मेरा...

पुस्तक समीक्षा

बाळ मन री जिग्यासावां
(राजस्थानी बाल कहानियां)

लेखक-ओम प्रकाश तँवर • प्रकाशक-बाफना पब्लिशिंग हाउस, चौड़ा रास्ता, जयपुर •संस्करण- 2022 • पृष्ठ- 112 • मूल्य- 225 रुपये।

''जिज्ञासु पोता पूछे सवाल, ज्ञानी दादाजी दे जवाब'' राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित सेवानिवृत्त प्राध्यापक ओम प्रकाश जी तँवर साहित्य की साधना में लगे हुए हैं एवं समर्पित भाव से मातृ भाषा राजस्थानी के भण्डार को समृद्ध कर रहे हैं। समीक्षित पुस्तक 'बाळमन री जिग्यासावां' का उद्देश्य बालकों की जिज्ञासाओं को सन्तुष्ट कर उनमें वैज्ञानिक सोच विकसित करना है।

समीक्षित पुस्तक 'बाळ मन री जिग्यासावां' में कुल 41 कहानियां हैं। सभी कहानियां संवाद विधि पर आधारित हैं। हर कहानी में एक जिज्ञासा और उसका उचित समाधान दिया गया है। ये कहानियां जानकारियों का खजाना है। खास बात यह है कि सभी कहानियां अपने आस पास से जुड़ी हुई हैं। ज्ञानवान दादा और जिज्ञासु पोते के किरदार को देखकर हमारे मन में भी इच्छा होती है कि कदाचित अपने को भी इतना ज्ञान होता तो बच्चों से बातचीत करने का आनन्द चौगुना हो जाता। बहुत से प्रश्न तो ऐसे हैं जो कई बार हमारे सामने आ चुके हैं और उन सवालों से किन्नी काटते हुए हम इधर-उधर हुए हैं। जैसे- आम को फलों का राजा क्यों कहते हैं? फलों का राजा आम है तो फलों की रानी कौन है? सूरज ऊगते और छिपते समय लाल क्यों होता है? आंधियां क्यों चलती है? बिजली क्यों चमकती है? गाय-भैंस अपने शरीर को क्यों चाटती हैं? छिपकलियां दीवार पर कैसे चल लेती हैं? चींटियां एक कतार में कैसे चल लेती है? नदियों का पानी मीठा होता है ? किन्तु वही पानी समुद्र में जाकर खारा क्यों हो जाता है? दादाजी के तो दाढ़ी आती है, दादीजी के दाढ़ी क्यों नहीं आती है? इन्द्रधनुष कैसे बनता है? ऊंट को रेगिस्तान का जहाज क्यों कहते हैं? शिशु अपना अंगूठा क्यों चूसता है? अंधेरे में बिल्ली की आंखें क्यों चमकती हैं? शेर को जंगल का राजा क्यों कहते है, बाघ को क्यों नहीं कहते ? इस तरह के इकतालीस प्रश्न और उनके उत्तर इन कहानियों में दिये हुए हैं। मेरा विचार है कि केवल बालकों को ही नहीं, बल्कि अभिभावकों और जिम्मेदार व्यक्तियों को भी इन कहानियों को पढ़कर अपने सामान्य ज्ञान और बाल मनोविज्ञान को मजबूत करना चाहिए।

पहले तो संयुक्त परिवार हुआ करते थे, जहाँ दादा-दादी, ताऊ-ताई, चाचा-चाची और कई भाई-बहिन हुआ करते थे । वहाँ बालक की जिज्ञासाओं का जवाब देने के लिए एक नहीं अनेक अनुभवी लोग हुआ करते थे जो बालक की जिज्ञासा को सन्तुष्ट कर दिया करते थे। किन्तु अब संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार ने ले ली है-केवल माता, पिता और उनकी इकलौती संतान।

सरल शब्दों व संवाद शैली में रचित तँवरजी की यह पुस्तक वास्तव में बालकों के लिए एक अनुपम भेंट है।

समीक्षक- डॉ. राजकुमार शर्मा
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी,
बीकानेर (राज.) मो. 8432856101.

आदमखोर
(कथा संग्रह)

• लेखक-आशा पाराशर • प्रकाशक - रॉयल पब्लिकेशन, 18 शक्ति कॉलोनी, गली नं.-2, लोको शेड रोड, रातानाडा, जोधपुर-342011 (राज.) • संस्करण- 2021 • पृष्ठ- 144• मूल्य-300 रुपए।

कहानी हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है । आशा पाराशर कृत प्रथम आकर्षक कथा-गुच्छ 'आदमखोर' समीक्षार्थ प्राप्त हुआ। इसमें लेखिका ने तेईस कथाओं को लेखनी बद्ध किया है । उन्हें लेखन की विरासत संस्कारों और वातावरण से प्राप्त हुई ।

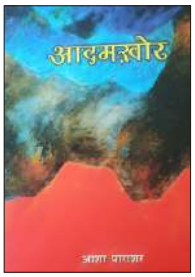

इसे परवान पर चढ़ाया उनकी कसी हुई पकड़ ने ।लेखिका ने आधुनिक युग के सामयिक मुद्दों पर लेखनी चलाई है। नारी विषयक मुद्दे, मध्यम वर्गीय सामाजिक मुद्दे समाज में सदा बदलाव की घंटी बजाते नजर आते हैं ।इन सभी मुद्दों में यथार्थ और आदर्श का समन्वय कर लेखिका ने बड़ी कुशलता से किया है । समीक्षित संग्रह की सभी कहानियाँ कथा तत्वों की कसौटी पर पूर्णत: खरी उतरी हैं।

'आदमखोर', 'अनावृत्त' कहानियाँ पुरुष सत्तात्मक समाज के सत्य को तथा महिलाओं के प्रति संकीर्ण व ओछी मनोवृत्ति पर व्यंग्य-बाण छोड़ती हैं ।'अनकही' 'अनुभूति' कहानियों में विवाहोपरांत ससुराल में प्राप्त होने वाली नारी की पीड़ाओं का पर्दाफाश लेखिका ने किया है ।'आघात' में कवि विद्रोही जी की मानसिक तड़फन पराकाष्ठा पार करती नजर आती है जब उन्हीं का लिपिक उनकी कविता का पाठ अपने नाम से करता है । ऐसे छद्म कवियों की आज भरमार हो गई है ।'अयाचित' कहानी का कथानक हिन्दू-मुस्लिम भाईचारे व पालतू पशुओं के प्रति गहरी संवेदना व प्यार पर आधारित हैं । 'अपनाघर' 'अकिंचित' 'अनागत' 'फरागत' मुक्ति शीर्षकों से लिखी कहानियाँ मानवीय संबंधों की गहराई व अपनत्व को इंगित करती है । 'आंगतुक' 'अपने-पराए' संबंधों के दरकने की व्यथा-कथा बयां करती हैं। 'नियति' 'अनुपूर्ति' 'अमानते' पाठक को गहन चिंतन की ओर ले जाती हैं । 'आकांक्षी' कामकाजी अफसर महिला की जीवन शैली, कार्य विधि व पारिवारिक संबंधों पर आधारित मर्मस्पर्शी कहानी है । साथ ही नौकरानी 'परमेसरी' की अधूरी व प्यासी आकांक्षा को मैडम की अनुपस्थिति में उन्हीं की जीवनशैली जीकर एक

दिन अपनी सारी आकांक्षाएँ पूर्ण करने की नाट्कीयता अपने में समाए हुए है । इसी प्रकार कई संवेदनशील विषयों का स्पर्श करते हुए 'अपराधी' 'अफारा' 'आदान-प्रदान' 'अधूरी कहानी' 'मुक्ति', 'भग्नावशेष', 'शहरे खामोशां' आदि कहानियाँ लिखी हैं। ऐसा लगता है मानो कथाकारा ने सभी विषयों को जिया और समेटा है तब इन तेइस कहानियों का जन्म हुआ है।

कथाशिल्प की भाषा अनुभूति परक, अनुभव प्रधान, पात्रों के अनुकूल है । भाषा हृदय को स्पंदित करने में सक्षम है ।लेखिका का शब्द-चयन, वाक्य-विन्यास व सशक्त अभिव्यक्ति कहानी के शिल्प में जान फूँकते हैं। भाषा-शैली स्पष्ट, गतिमय, संप्रेषणीय, बोधगम्य व मुहावरेदार है ।उम्र की परिपक्वता के बाद उनके लेखन का जन्म हुआ अत: भाषा व्यवस्थित, सुविकसित व प्रांजल है ।

समग्रत: उनका लेखन उन्हें साहित्य की लोकप्रियता के शिखर पर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करती है ।

समीक्षक : सुमन सिंह
उपनिदेशक (से.नि.),
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9413725779

मेरा रंग दे बसंती चोला...

मेरो रंग दे बसंती चोला
हो रंग दे हो माँ ऐ रंग दे
मेरा रंग दे बसंती चोला

आज़ादी को चली ब्याहने दीवानों की टोलियाँ
खून से अपने लिख देंगे हम इंक़लाब की बोलियाँ
हम वापस लौटेंगे लेकर आज़ादी का डोला
मेरा रंग दे ...

ये वो चोला है के जिस पे रंग न चढ़े दूजा
हमने तो बचपन से की थी इस चोले की पूजा
कल तक जो चिंगारी थी वो आज बनी है शोला
मेरा रंग दे ...

सपनें में देखा था जिसको आज वही दिन आया है
सूली के उस पार खड़ी है माँ ने हमें बुलाया है
आज मौत के पलड़े में जीवन को हमने तौला
मेरा रंग दे ...

बाल शिविरा : माह अगस्त 2022

वृक्ष है जीवन का आधार

वृक्ष हमारे जीवन का आधार होते है। पेड़ हमें जीवन प्रदान करने वाली ऑक्सीजन गैस प्रदान करते है, जिसके बिना हमारा अस्तित्व असंभव है। इसलिए हर व्यक्तिअपने जीवन में अधिक से अधिक पौधे लगाकर उनका लालन-पालन के साथ संरक्षण भी करे।

वृक्ष जीवन का आधार होता है, इसका मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण योगदान है वृक्षो से हमें इतनी बड़ी मात्रा में ऑक्सीजन प्राप्त होती है वृक्ष है तो शुद्ध हवा-पानी और जंगल है वृक्षों से कंदमूल, फल, फूल अनेक प्रकार के औषधियां वनोपज के रूप में प्राप्त होता हैं।

प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए हम सबको वृक्ष लगाना चाहिए।वृक्षों से प्रत्येक क्षेत्र हरा-भरा रहता है।हम सभी नागरिकों का नैतिक दायित्व है कि इन पौधों को संरक्षित एवं सुरक्षित रखे। वृक्ष मानव और अन्य जीवित जीवों के अस्तित्व के लिए पृथ्वी को फिट बनाते है। पेड़-पौधे हमें सांस लेने के लिए हवा, खाने के लिए भोजन, फल और रहने के लिए आश्रय प्रदान करते हैं। हमें स्वच्छ और हरित वातावरण सुनिश्चित करने और स्वस्थ जीवन को बढ़ावा देने के लिए, अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए। पेड़-पौधे ऑक्सीजन देने के अलावा पर्यावरण से विभिन्न हनिकारक गैसों को भी अवशोषित करते है जिससे ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव कम होता है।

पेड़ो की पत्तियों, जड़ों और छाल का उपयोग दवाओं को तैयार करने के लिए किया जाता है।पेड़ों से निकाली गई लकड़ी और अन्य सामग्री का उपयोग कई वस्तु को शिल्प करने के लिए किया जाता है, जो एक आरामदायक जीवन के लिए आवश्यक है। हमें अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखने और खुशहाल जीवन को बढ़ावा देने के लिए पेड़-पौधों को बचाना चाहिए। हमें अपने आसपास के समुदाय को भी पेड़ लगाने के लिए जागरूक करना चाहिए।

-उषा कुमारी कक्षा-12
राउमावि बिशनगढ़ जालोर

राखी का त्योहार आया,
घर में खुशियां बहुत लाया।
मेरा भैया घर पर आया,
भैया मेरा मिठाई लाया।
राखी बांधने का दिन आया,
भैया सुंदर तोहफा लाया।
श्रावण के महीने में आया,
बारिश की बौछर लाया।
राखी का त्योहार आया,
घर में खुशियां बहुत लाया।

प्रियंका, कक्षा-6
राबाउप्रावि सराणा जालोर

रक्षाबंधन जब भी आता
मेरा मन खुशियों से भर जाता।

राखी के दिन भाई अपनी कलाई
लेकर मेरे पीछे-पीछे आता।

जब मैं उसको राखी बांधु
वह मुझको नखरे दिखलाता।

मैं फिर जो रूठ जाती
मुझको तब वो मनाता।

जब मैं उसे तिलक लगाती
तब वह अपने को बचाता।

बार बार जो करता शरारत
मम्मी से फिर डांट पाता।

बड़े भाई की हूं लाडली
प्यार से उसका दिल खिल जाता।

पूजा गुर्जर, कक्षा-12
रा.उ. मा. वि. दाखिया, टोंक

शाला प्रांगण से....

शहीद मेजर पूर्णसिंह जी की भित्ती स्मारिका का अनावरण

बीकानेर। शहीद मेजर पूरणसिंह राजकीय फोर्ट उमावि, बीकानेर में कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में शहीदों को श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। अतिरिक्त जिला कलेक्टर (शहर) श्री पंकज शर्मा, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय मा.शि. बीकानेर श्री सुनील बोड़ा एवं शहीद मेजर पूरणसिंह जी के सुपुत्र श्री रणजीत सिंह बीका के मुख्य आतिथ्य में विद्यालय द्वारा निर्मित मेजर पूरणसिंह जी भित्ती स्मारिका का अनावरण किया गया। जिसका लेखन विद्यालय के ही हिन्दी प्राध्यापक डॉ. एच. पी. प्रजापति द्वारा किया गया। कार्यक्रम में कलेक्टर महोदय ने 'हर घर तिरंगा अभियान' के महत्त्व के बारे बताया वहीं श्री बोड़ा जी ने शहीदों से प्रेरणा लेकर देश सेवा के लिए आह्वान किया। प्राचार्य श्रीमती उमराव कंवर द्वारा अतिथियों का स्वागत किया । डॉ. प्रजापति ने भित्ती स्मारिका की भूमिका बताते हुए वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन व्याख्याता श्री सईद अहमद व श्री विजय शंकर पुरोहित व.अ. द्वारा किया गया।

विद्यालय में वन महोत्सव कार्यक्रम सम्पन्न

राजसमन्द। राजकीय शि.क.प्रा.वि. बीड़ की भागल (कुम्भलगढ़) में हरित राजस्थान के तहत जुलाई के शुरूआत में वन महोत्सव गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि मेवाड़ युवा मण्डल के अध्यक्ष श्री किशन पालीवाल रहे। विशिष्ठ अतिथि सेवा निवृत व्याख्याता श्री सत्यनारायण नागोरी, वनपाल श्री सत्येन्द्र सिंह, वार्ड पंच श्री लालसिंह थे। इस अवसर पर पौधारोपण भी किया गया। कार्यक्रम में संस्थाप्रधान श्री प्रेमसिंह खरवड़, जवाहर लाल मेघवाल उपस्थित रहे। बालकों ने कविता के माध्यम से पेड़ की महिमा को प्रस्तुत किया।

होनहार विद्यार्थियों का सम्मान समारोह

सीकर। सेठ मांगीलाल चंपालाल राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आभावास में प्रधानाचार्य श्री सुभाष चंद शर्मा की अध्यक्षता में

उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम से विद्यालय का गौरव बढ़ाने वाले होनहार विद्यार्थियों का सम्मान समारोह आयोजित हुआ। जिसमें विद्यार्थियों का तिलक लगाकर श्याम दुपट्टा व पुष्पमाला से सम्मान किया गया तथा नगद राशि का पुरस्कार प्रदान किया गया। उत्सव प्रभारी श्री भगवान सहाय शर्मा ने बताया कि विद्यालय की 33 होनहार बालिकाओं का बालिका प्रोत्साहन योजना में चयन हुआ है। आज सम्मानित होने वाले विद्यार्थी-(कक्षा 12 कला वर्ग) मोनिका सैनी पुत्री श्री राजूराम सैनी 94.60, रिंकू सैनी पुत्री श्री मूलचंद 94.20, गुंजन चांवरिया पुत्री श्री महावीर प्रसाद 93.60, रिंकू सैनी पुत्री श्री प्रकाश चंद। 93.40, प्रियंका सैनी पुत्री श्री राजूराम सैनी 90.60 एवं सरिता वर्मा पुत्री श्री रमेश चंद्र वर्मा 90.20 । (कक्षा 10) संजू सैनी 82.17 एवं सोनिया चावला 81.83 प्रतिशत। अंत में प्रधानाचार्य श्री शर्मा ने शानदार गौरवशाली उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम के लिए समस्त विद्यार्थियों, अभिभावकों,जनप्रतिनिधियों, बच्चों को टारगेट देकर प्रोत्साहित करने वाले भामाशाहों,समस्त विद्यालय परिवार एवं विद्यालय के शुभचिंतकों को बहुत-बहुत बधाई ,धन्यवाद,हार्दिक शुभकामनाएं दी। इस मौके पर विद्यालय के भामाशाह सेठ मांगीलाल चंपालाल परिवार के सदस्य एवं समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

नव चयनित अध्यापिका का किया भामाशाह के रूप में सम्मान

बाड़मेर। राजकीय प्राथमिक विद्यालय दल्लाराम की ढाणी आदमपुरा भाखरसर, पंचायत समिति पाटोदी की अध्यापिका ने बायतु के तेली समाज के लिए बालिका छात्रावास के लिए 5 लाख रुपए देने पर पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर के जिलाध्यक्ष श्री सालगराम परिहार नेशनल अवॉर्डी एवं मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री अशोक कुमार जांगिड़ तथा श्री आर. पी. नारायण राम गेवा ने प्रशस्ति पत्र प्रदान कर तथा शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया इस अवसर पर विद्यालय के लिए भूमि दान करने वाले भामाशाह सेवानिवृत्त अध्यापक श्री गुल्ला राम पन्नू, गिरधारी राम, श्री प्रधानाचार्य जितेंद्र कुमार, श्री सफी मोहम्मद, श्री मोहम्मद हनीफ सहित गणमान्य महिला पुरुषों ने मालाओं से स्वागत किया। इस अवसर पर श्री जांगिड़ ने कहा कि दान देने से बालिका शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा नवीन छात्रावास का निर्माण होने से बालिकाएँ पढ़ लिख कर इस क्षेत्र का नाम रोशन करेगी। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाध्यापक श्रीमती कांता परिहार ने आगंतुक अतिथियों का धन्यवाद किया तथा विद्यालय परिसर में पौधारोपण भी किया गया।

संकलन: प्रकाशन सहायक

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर....

महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय लालास, कुचामन सिटी, नागौर

सुलेखा स्वामी

जब मैंने 11 जुलाई 2020 को महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय लालास में प्रातः कालीन सत्र में कार्यग्रहण किया, तो मन में विचित्र से विचार आये कहीं मेरा निर्णय गलत तो नहीं था क्योंकि जिस गर्मजोशी से मैंने नये कलेवर के लिए इन्टरव्यू दिया उससे विपरित वातावरण उच्च प्राथमिक विद्यालय का मिला जिसमें कहने को तो 6 कमरे पर आकार में इतने छोटे कि 20 बच्चों को बैठा पाना भी मुश्किल प्रार्थना के लिए मैदान इतना कम कि 60 बच्चे भी खड़े नहीं हो सकते।

चुनौती बहुत बड़ी सामने थी। मेरे साथ स्टॉफ की पोस्टिंग नहीं हुई थी, अतः आस-पास के गणमान्य लोगों से अकेले ही मीटिंग करनी शुरू की।

राजस्थान सरकार की फ्लेगशिप योजना में अंग्रेजी माध्यम विद्यालय का लालास के ग्राम वासियों से मिलकर बच्चों के भविष्य को सुधारने के लिए तथा अंग्रेजी माध्यम के फायदे बताने शुरू किए। लॉटरी सिस्टम से प्रवेश कैसे होगा अधिक से अधिक फार्म भरने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रवेश प्रक्रिया के समय राज्य सरकार द्वारा स्टाफ भी लगा दिया गया। हम सभी विद्यालय परिवार ने मिलकर 4 टीमों का गठन किया तथा गाँव व ढाणियों में सम्पर्क किया।

हमारी टीम से लोग काफी प्रभावित हुए एवं प्रवेश फार्म नागौर जिले में सबसे ज्यादा जमा हुए लॉटरी प्रक्रिया पूर्ण हुई परन्तु ग्रामवासी मायूस हुए कि हमारे गाँव के आधे बच्चों का ही प्रवेश हुआ। प्रवेश की मारामारी के चलते ग्रामवासी शिक्षामंत्री तक पहुँच गए तथा निवेदन किया कि सेक्शन बढ़ाए जाएं । प्रत्येक कक्षा में दो-दो सेक्शन के आदेश हुए तथा बच्चों का एडमिशन हुआ।

15 अगस्त 2020 की मिटिंग में हमने भामाशाहों से जरूरी सामान जो विद्यालय की प्राथमिक आवश्यकताओं के लिए जरूरी था, उसकी डिमांड रखी तथा महत्त्व बताया। यह प्रयास हमारे लिए सकारात्मक रहा, देखते ही देखते हमारी सभी डिमांड पूरी हो गयी।

उस दिन हमें 4.50 लाख रुपये का सामान मिला जिनमें म्यूजिक सिस्टम, कुर्सियाँ, फर्नीचर, बेटरी इन्वर्टर, कम्प्यूटर सेट मय प्रिन्टर, ग्रीन बोर्ड, लेक्चर स्टेण्ड आदि प्राप्त हुए।

15 अगस्त 2020 को गणमान्य लोगों से मीटिंग की गयी जिसमें उन्हें विद्यालय के लिए जमीन की आवश्यकता बतायी गयी। विद्यालय भवन के विस्तार हेतु जमीन के लिए भामाशाहों की तलाश शुरू की।

2-3 भामाशाह जमीन दान करने के लिए आगे आये जो जमीन दान देने के इच्छुक थे लेकिन किसी कारणवश फिर से पीछे हट जाते फिर हमने सरकारी जमीन देखना शुरू की लेकिन ये सभी ग्राम से बहुत दूर थी इसी कशम-कश में एक वर्ष निकल गया और कोरोना काल में विद्यार्थी नहीं आए परन्तु हमारी टीम नें मेहनत करना जारी रखा।

विद्यालय के लिए पर्याप्त जमीन अभी भी फाइनल नहीं हुई। क्योंकि गाँव के पास ही जमीन मिलना एक सपना लग रहा था। 26जुलाई,2021 को प्रातः 6.30 बजे भामाशाह श्री जवाहर नेतड़ से संस्था प्रधान द्वारा आयोजित एक मिटिंग में आश्वासन दिया गया कि आपकी दान की गई जमीन किसी भी प्रकार से बेकार नहीं जाएगी सदियों तक आपका नाम विद्यालय में स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाएगा। विद्यादान सर्वोतम दान कहलाता है क्योंकि इससे हम ना केवल समाज बल्कि देश के होनहार नागरिक भी हमारे विद्यालय में ही तैयार होते हैं अगर हमारे विद्यालय अच्छे विद्यार्थी तैयार करते हैं तो हमारा समाज व देश स्वतः ही अच्छा बन जाएगा। भामाशाह जवाहर नेतड़ ने अगले दिन दिनांक 27.07.2021 को विद्यालय के नाम जमीन की रजिस्ट्री करवा दी।

अब जमीन पर विद्यालय के भवन निर्माण का कार्य जनसहयोग से करवाना है। इसके लिए एक योजना बना कर कार्य करने की आवश्यकता थी । इसी दौरान नागौर के जिला कलेक्टर श्री जितेन्द्र सोनी द्वारा हमारे भामाशाह श्री जवाहर नेतड़ का सम्मान नागौर बुलाकर किया गया, विद्यालय की तरफ से मैं उनके साथ गयी तथा गाँव के 5 अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उनके साथ गए आते समय विद्यालय भवन निर्माण के लिए योजना बनायी गयी जिसमें भवन निर्माण के लिए भामाशाहों से कलेक्शन किए जाने का निर्णय लिया गया।

मैं और मेरे स्टाफ के लोग ग्राम पंचायत सरपंच श्रीमती रतनी देवी के यहाँ मिलने गए और उनसे ग्राम पंचायत के प्रथम नागरिक होने के नाते सहयोग के लिए निवेदन किया। उनके पति श्रीमान त्रिलोक शेशमा स्वंय एक अध्यापक हैं जो हमारे साथ जुड़े व भामाशाह के रूप में एक लाख एक हजार की राशि विद्यालय भवन निर्माण हेतु दान की। मैंने विद्यालय टीम के साथ उनका एक फोटोग्राफ लिया तथा लालास ग्राम पंचायत के फेसबुक पेज पर अपलोड किया बहुत सी बधाईयों के साथ ग्रुप में शेयर किया जिसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा व अगले दिन सरपंच को साथ लेकर भामाशाहों से सम्पर्क किया । ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से दान के फायदे व मुख्यमंत्री जन सहभागिता योजना में भवन निर्माण के बारे में जब जन सामान्य को अवगत करवाया। भामाशाहों द्वारा राशि 3,20,000 रुपये एक मुश्त राशि देने से कमरे का निर्माण आदि योजनाओं की पूर्ण जानकारी प्रदान की गई । जिसके प्रचार प्रसार बाद लोग स्वतः ही प्रोत्साहित हुए और फेसबुक पेज के माध्यम से भामाशाहों का सहयोग मिलने लगा।

मजरूह सुल्तानपुरी का शेर -'' मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर, लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया।''

वाकई में लक्ष्य फलीभूत होने लगा हमने 40 लाख का लक्ष्य रखा था और 60 लाख सरकार से मिलाकर 1 करोड़ का भवन बनाने का लेकिन आज के समय में 8,67,1486 रुपये भामाशाहों से नए भवन निर्माण के लिए प्राप्त हो चुके हैं । जो हमारे लक्ष्य से दुगुने से भी ज्यादा हैं। लालास गाँव के भामाशाहों का सहयोग उस पवित्र यज्ञ रूपी लहर में अविस्मरणीय रहा जो राजस्थान के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों से लिखा जाएगा। इसमें ऐसे लोगों ने भी दान किया जो मजदूरी करके अपने परिवार का पालन-पोषण करते हैं, विद्यारूपी मंदिर में अपना सहयोग अपनी हैसियत से भी बढ़कर दान किया।

महाराणा प्रताप को जिस तरह भामाशाहों ने सहयोग किया उसी भाँति लालास के भामाशाहों ने महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय लालास के नये भवन निर्माण के लिए सहयोग किया ।

जय भामाशाह ।

प्रधानाचार्य
महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय लालास
कुचामन सिटी, जिला नागौर (राज.)
मो.-9928016376

''ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह- अप्रेल 2022 में

50 हजार एवं अधिक का सहयोग करने वाले भामाशाह''

S.No.	Donar Name	NameInEnglish	Block Name	Dist Name	AMOUNT
1	ASHOK KUMAR	SHAHEED SURENDRA KUMAR GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL PALTHANA	DHOD	SIKAR	511000
2	MOHTA EDUCATIONAL SOCIETY	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAJGARH	RAJGARH	CHURU	400000
3	SHRI SATYANARAYANJI MADIR DHARMARTH TRUST	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAJGARH (215272)	RAJGARH	CHURU	399000
4	RAJU RAM POTALIYA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RANSISAR (215351)	SARDARSHAHAR	CHURU	350000
5	OMPRAKASH Godara	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHABAN (211115)	SANGRIA	HANUMANGARH	320000
6	GOPICHAND SARAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAJAS (215333)	SARDARSHAHAR	CHURU	300000
7	RAM KISHAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL HAMUSAR (215593)	RATANGARH	CHURU	210000
8	SULTAN SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KUSUMDESAR (215570)	RATANGARH	CHURU	250000
9	SARGA ADDITIVE MANUFACTURING	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SAHAWA (211542)	TARANAGAR	CHURU	107000
10	RAJESH KUMAR	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL PARASRAMPURA (216081)	NAWALGARH	JHUNJHUNU	100000
11	RAJ KUMAR	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL PARASRAMPURA (216081)	NAWALGARH	JHUNJHUNU	100000
12	TARACHAND CHOUDHARY	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHACHIWAD BADA (213121)	FATEHPUR	SIKAR	100000
13	RAJVEER SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHUDDI (215224)	RAJGARH	CHURU	100000
14	KESHAR DEV CHAHAR	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL PARASRAMPURA (216081)	NAWALGARH	HUNJHUNU	100000
15	HARLAL SINGH	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL PARASRAMPURA NAWALGARH	NAWALGARH	JHUNJHUNU	100000
16	DINESH CHANDRA SHARMA	SETH SHRI GOVIND RAM JHOKHIRAM GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL	NAWALGARH	JHUNJHUNU	100000
17	JAWAHAR SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MADANI (227221)	DANTARAMGARH	SIKAR	91000
18	THAKAR DASS	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SEERASAR (226943)	RAWATSAR	HANUMANGARH	71500
19	SUNITA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GULPURA (215226)	RAJGAR	CHURU	70000
20	CHHOTI DEVI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MADANI (227221)	DANTARAMGARH	SIKAR	62000
21	SURENDRA SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MADANI (227221)	DANTARAMGARH	SIKAR	60000
22	SANDEEP KUMAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TONK CHHILARI (216084)	NAWALGARH	JHUNJHUNU	51000
23	OM PRAKASH MEENA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BANOTA (464623)	SAWAI MADHOPUR	SAWAIMADHOPUR	51000
24	TULASIRAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SISARWADA (214149)	SOJAT	PALI	51000
25	BRAHM PRAKASH RANWA	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL ADMALSAR (476792)	SARDARSHAHAR	CHURU	50000
26	SOMDUTT NEHRA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BALSAMAND (213455)	LADNUN	NAGAUR	50000
27	OM PRAKASH GODARA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL LEELALA (213588)	BAYTU	BARMER	50000
28	HARI CHARAN MEENA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BANOTA (464623)	SAWAI MADHOPUR	SAWAIMADHOPUR	50000
29	PRAHLAD RAM	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL KANARWAS (476917)	SARDARSHAHAR	CHURU	50000

''ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प **Donate To A School** के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह– अप्रेल 2022 में प्राप्त जिलेवार राशि''

S.NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	163	3518831
2	SIKAR	98	1214420
3	JHUNJHUNU	30	699649
4	CHITTAURGARH	105	525591
5	HANUMANGARH	21	413750
6	PALI	314	239338
7	NAGAUR	41	228850
8	BANSWARA	50	207827
9	BARMER	31	174694
10	SAWAIMADHOPUR	13	144940
11	BUNDI	59	133880
12	AJMER	69	120903
13	KOTA	20	106465
14	UDAIPUR	40	70221
15	GANGANAGAR	15	69201
16	BARAN	13	64210
17	JAIPUR	10	63800
18	RAJSAMAND	23	63531
19	JODHPUR	32	61260
20	PRATAPGARH	21	47455
21	DUNGARPUR	8	46601
22	BHILWARA	47	37811
23	BIKANER	19	35800
24	ALWAR	10	34310
25	JHALAWAR	140	32302
26	BHARATPUR	14	31860
27	TONK	8	31101
28	DAUSA	4	28200
29	DHAULPUR	5	22200
30	SIROHI	4	18301
31	JALOR	12	18211
32	JAISALMER	14	5450
33	KARAULI	1	10
Total		**1454**	**8510973**

चित्र वीथिका : अगस्त 2022

राजकीय माध्यमिक विद्यालय कुम्हारपाड़ा, जैसलमेर में राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड जिला मुख्यालय जैसलमेर के तत्वावधान में अभिरूचि शिविर में कौशल विकास करते प्रशिक्षणार्थी बालक-बालिकाएं एवं प्रशिक्षक गण।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बीएसएफ ,बीकानेर में छात्रों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य सें छात्रों व अध्यापकों द्वारा पौधारोपण किया गया। अध्यापक श्री हुकम चंद चौधरी ने बताया कि आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर विद्यालय द्वारा 75 पौधे लगाने का संकल्प लिया गया है जिसके तहत पौधारोपण करते छात्र एवं अध्यापकगण।

दिनांक 30 जुलाई 2022 को राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जावरा में बाल सभा का आयोजन माह के अंतिम शनिवार को किया गया।

राउमावि चनार (सिरोही) में विद्यालय में भामाशाहों के सहयोग से वितरित किए 100 स्कूली बस्ते अथितियों द्वारा वितरित किए।

'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम' कार्यक्रम के आगाज की झलकियाँ

11 जुलाई, 2022

1. माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत 2. माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बुलाकी दास कल्ला 3. माननीया शिक्षा राज्यमंत्री जाहिदा खान 4. मुख्य सचिव श्रीमती ऊषा शर्मा 5. अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री पी. के. गोयल 6. निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री गौरव अग्रवाल 7. निदेशक राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् प्रियंका जोधावत।